जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत
बीकानेर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

बीकानेर, गुरुवार 23 जनवरी, 2025

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

राम जल सेतु
राजस्थान | मध्यप्रदेश
लिंक परियोजना
(संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चम्बल लिंक परियोजना)

परियोजना के लाभ

- 17 जिलों की 3.25 करोड़ आबादी को मिलेगा शुद्ध पेयजल।
- 25 लाख किसानों की आय बढ़ाने हेतु लगभग 4 लाख हैक्टेयर भूमि में सिंचाई के लिए मिलेगा जल।
- राज्य के चहुंमुखी विकास हेतु उद्योगों को होगा जल उपलब्ध।
- बनास, मोरेल, बाणगंगा, रूपारेल, पार्वती, गंभीर, साबी जैसी नदियों को पुनर्जीवित कर होगा भूजल पुनर्भरण।

राजस्थान संवाद

जल संसाधन विभाग, राजस्थान
पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना निगम

विचार बिन्दु

सच्चा पड़ौसी वह नहीं जो तुम्हारे साथ उसी गली में रहता है बल्कि वह है जो तुम्हारे विचार स्तर पर रहता है। –रामतीर्थ

सामाजिकता से दूर होने के नकारात्मक प्रभाव

सामाजिक ताने-बाने में बदलाव को इस तरह से आसानी से समझा जा सकता है कि सोशियोट्रॉपी आज बीते जमाने की बात होती जा रही है। कोरोना के बाद तो हालात में और भी अधिक बदलाव आया है। आज की पीढ़ी में सामाजिकता का स्थान वैयक्तिकता लेती जा रही है। एक समय था जब सामाजिकता को वैयक्तिकता के स्थान पर अधिक तरजीह दी जाती थी। परिवार, मौहल्लों और आसपास कोई ना कोई ऐसे अवश्य मिल जाते थे जो जगत मामा तो कोई जगत काका तो कोई जगत दादा होते थे। छोटा हो या बड़ा, दादी हो या पोती, सास हो या बहू सब उन्हें प्रसिद्ध नाम से ही पुकारते थे। यह था एक तरह का अपनत्व। इस तरह के व्यक्तित्व वाले व्यक्ति सभी के चहेते होते थे तो जान-पहचान हो या ना हो, वे जरुरत के समय पहुंच जाते थे। सुख-दु:ख खासतौर से मुसिबत के समय ऐसे व्यक्ति आगे रहते थे। हांलाकि आज इस तरह के व्यक्तित्व को ढूंढना लगभग असंभव सा ही है।

दरअसल हमारी परंपरा व्यस्टी का ना होकर समस्टी की रही है। बच्चों को पहले सामाजिकता का पाठ पढाया जाता था। बच्चे मौहल्ले के सभी घरों को अपना ही घर मानकर चलते थे तो मौहल्ले में रहने वाले किसी का भी बच्चा हो उसे अपने बच्चे जितना ही प्यार और दुलार देते थें। दु:ख-दर्द में पूरा मौहल्ला साथ हो जाता था। मौहल्ले में किसी घर में मौत हो जाती थी तो पड़ोसी उस परिवार को संभालने और देखभाल की जिम्मेदारी स्वयं अपने हाथ में ले लेते थे। शादी-विवाह में काम बंट जाता था, आज तो केटरिंग का जमाना आ गया, नहीं तो सैकड़ों लोगों को परिवार और मौहल्ले के युवा ही भोजन कराने की जिम्मेदारी निभा लेते थे। हलवाई के काम शुरु करते ही मौहल्ले के लोग बारी-बारी से देखरेख व सहयोग के लिए तैयार रहते थे। आज यह सब बदल गया है। गगन चुंबी इमारतों में कई परिवार रहते हैं और हालात यहां तक हो गए हैं कि एक ही कॉम्पलेक्स या अपार्टमेंट में रहने वाले एक-दूसरे को पहचानते ही नहीं। ऐसे में आपसी सहयोग और मेल मिलाप की बात करना बेमानी होगा।

सोशियोट्रापी मनोविज्ञान में प्रयोग होता है। हांलाकि इसे सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही अर्थों में लिया जाता है। दूसरों को खुश रखने की खुशी में अपने खुशी को भूल जाना वाली मनोस्थिति को भी सोशियोट्रापी के रुप में देखा जाता है। यही कारण है कि इस एकांगिग अर्थ को लेने के चक्कर में सोशियोट्रोपी मानसिकता वाले लोगों के अवसादग्रस्त, तनाव पीड़ित और हमेशा चिंतित रहने की मनोदशा को साइड इफेक्ट के रुप में देखा जाता है। जबकि सोशियोट्रापी यहीं तक सीमित नहीं है। दूसरे के दु:ख-दर्द में भागीदार होना, आवश्यकता के समय निस्वार्थ सहयोग व सहायता करना, दूसरे की परेशानी को समझना और उसे दूर करने में यथासंभव सहयोग करना यह सोशियोट्रापी का ही एक रुप है। हमारी परंपरा में जो व्यक्ति केवल अपने आप के बारे में सोचता है उसे एकलखोर या स्वार्थी कहा जाता रहा है। हमारी परंपरा वसुधेव कुटुम्बकम की रही है। हमारी परंपरा में दूसरे की उन्नति देखकर प्रसन्न होने की भावना रही है। खुशी के मौके पर मिठाई बांटना खुशी में सभी को भागीदार बनाना है। इसी तरह से जरुरत के समय खड़े हो जाना जरुरतमंद के लिए संबल होता है।

पहले बच्चे मौहल्ले के सभी घरों को अपना ही घर मानकर चलते थे तो मौहल्ले में रहने वाले किसी का भी बच्चा हो उसे अपने बच्चे जितना ही प्यार और दुलार देते थें। दु:ख-दर्द में पूरा मौहल्ला साथ हो जाता था। आज यह सब बदल गया है। गगन चुंबी इमारतों में कई परिवार रहते हैं और हालात यहां तक हो गए हैं कि एक ही कॉम्पलेक्स या अपार्टमेंट में रहने वाले एक-दूसरे को पहचानते ही नहीं। ऐसे में आपसी सहयोग और मेल मिलाप की बात करना बेमानी होगा।

देखा जाए तो बदलते सामाजिक ताना-बाना ने सब कुछ बदल कर रख दिया है। एकल परिवार की संस्कृति समाज में अपना प्रभुत्व जमा चुकी है। परिवार पति-पत्नी और बच्चों तक सीमित होता जा रहा है। जो भावनात्मकता संबंधों को तरोताजा रखती थी वह भावनात्मकता कहीं खो गई है। अवकाश के दिनों का उपयोग दादा-दादी या नाना-नानी के पास गुजारने के स्थान पर कहीं घूमने-घामने में जाया होने लगा है। एक समय था जब गांव से यात्रा पर भी जाते थे तो गांव के कई परिवार के लोग उस भ्रमण दल में होते थे। हालात तो यहां तक होने लगे हैं कि घर के बुजुर्ग सदस्य को जिसे साथ की अधिक आवश्यकता है घर की देखभाल के लिए छोडना आज आम होता जा रहा है। खुशी के पल को साझा करने का तरीका भी बदल गया है। जिस तरह की प्राथमिकताएं बदली है वह पीपल प्लीजर के स्थान पर सेल्फ प्लेजर होती जा रही है। दरअसल सामाजिकता के जो मायने एक समय होते थे उसमें कोई क्या कहेगा महत्वपूर्ण होता था, सामाजिक प्रतिक्रिया का बड़ा भय होता था, आज हालात यह है कि मां-बाप क्या कहेंगे इसकी भी परवाह नहीं रही है। दरअसल न्यूक्लियर फैमेली के यह साइड इफेक्ट है जो लोगों को सोशियोट्रापी से दूर ले जाते हैं। हांलाकि पाश्चात्य देशों द्वारा अब इसकी अहमियत सामने आने लगी है। ब्रिटेन में पिछले दिनों एक अध्ययन में सामने आया है कि अब बच्चों का जब भी मौका मिलता है परिवार यानी कि दादा-दादी या नाना-नानी का साथ जरुरी माना जाने लगा है। क्योंकि सामाजिक ताना-बाना में बिखराव के कारण ही आज की पीढ़ी ही रिश्तों की अहमियत को भूलती जा रही है। दादा-दादी या नाना-नानी में से एक तो पराया होता जा रहा है। जब खास रिश्तों के ही यह हालात होते जा रहे हैं, परिवार के मायने ही बदलते जा रहे हैं तो फिर अडोस-पडौस, मौहल्ले या शहर-गांव के रिश्तों की बात करना ही बेमानी होगा।

इतना अवश्य है कि आज की पीढ़ी के सामाजिकता से दूर होने के नकारात्मक प्रभाव समाज के सामने आने लगे हैं। पाश्चात्य देश अब रिश्तों की अहमियत को समझने की दिशा में आगे बढने लगे हैं वही हम रिश्तों की अहमियत और सामाजिकता को खोते जा रहे हैं। यह अपने आप में गंभीर चिंता का विषय है। समाज और समाज विज्ञानियों व मनोविज्ञानियों को हालात की गंभीरता को समझते हुए समय रहते हालात को सुधारने के प्रयास करने होंगे।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
वरिष्ठ लेखक)

नेताजी का प्रेरणादायक नारा 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा'

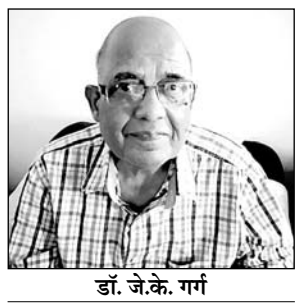

डॉ. जे.के. गर्ग

जन जन के नायक महान स्वतन्त्रता सेनानी नेता जी कहते थे कि राष्ट्रवाद मानव जाति के उच्चतम आदर्शों सत्यम, शिवम, सुन्दरम से प्रेरित होना चाहिये । उन्होंने हमें अपने जीवन में सदेव आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी थी चाहे हमारा सफर कितना ही भयानक, कष्टदायी दुखी और बदतर हो । सुभाष बोस ने हमें संदेश दिया था कि सफलता, हमेशा असफलता के स्तंभ पर खडी होती है। जो अपनी ताकत पर भरोसा करते हैं, वो आगे बढते हैं किन्तु उधार की ताकत वाले घायल हो जाते हैं। नेताजी ने बतलाया कि मेरा अनुभव है कि हमेशा आशा की कोई न कोई किरण आती है, जो हमें जीवन से दूर भटकने नहीं देती । नेताजी बार बार बोलते थे कि अन्याय और अपराध को सहना और गलत के साथ समझौता करना है सबसे बड़े पाप हैं। भारतीयों का कर्तव्य है कि हम अपनी स्वतंत्रता का मोल अपने खून से चुकाएं। हमें अपने बलिदान और परिश्रम से जो आज़ादी मिले, हमारे अन्दर उस आजादी की रक्षा करने की ताकत होनी चाहिए । एक सैनिक के रूप में आपको हमेशा तीन आदर्शों को संजोना और उन पर जीना होगा ये आदर्श हैं सच्चाई, कर्तव्य और बलिदान। जो सिपाही हमेशा अपने देश के प्रति वफादार रहता है, जो हमेशा अपना जीवन बलिदान करने को तैयार रहता है, वो सिपाही अजेय है। अगर तुम भी अजेय बनना चाहते हो तो इन तीन आदर्शों को अपने हृदय में समाहित कर लो ।

नेताजी अक्सर कहते थे कि सफलता हमसे दूर जरुर हो सकती है किन्तु वह दिन अधिक दूर नहीं जब हम भी सफल होंगे । याद रखिये कि जीवन में सफलता का आना अनिवार्य ही है । नेताजी के मुताबिक मां का प्यार सबसे गहरा और है स्वार्थ रहित होता है। माँ के प्यार को मापने का कोई पैमाना हो नहीं सकता है मां की ममता और प्यार को किसी भी तरह से मापा नहीं जा सकता । नेताजी ने हमको समझाया कि हमारे देश की प्रमुख समस्याएं गरीबी, अशिक्षा, बीमारी, कुशल उत्पादन एवं वितरण सिर्फ समाजवादी तरीके से ही की जा सकती है ।

आजाद हिन्द फौज के प्रणेता क्रांतिकारी जन नायक सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को कटक के निवासी जानकीनाथ बोस प्रभावती के यहाँ हुआ था । सुभाष 14 लड़के लड़कियों में से नौवीं संतान थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा कटक में रेवेनशा कॉलेजिएट स्कूल में हुई । उन्होंने कलकत्ता यूनिवर्सिटी से 1919 में बीए की परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास की थी इस परीक्षा में उन्हें यूनिवर्सिटी में उन्हें दूसरा स्थान मिला था । 1920 की आईसीएस परीक्षा में उन्होंने चौथे स्थान मिला। सुभाष का मन अंग्रेजों के अधीन काम करने का नहीं था इसलिए उन्होंने से एक साल के भीतर 22 अप्रैल 1921 को त्यागपत्र दे दिया क्योंकि उनके दिल अंग्रेजों की गुलामी और भारत माता का आजाद करने का जुनून था । गुरुदेव रवीन्द्रनाथ की सलाह के अनुसार भारत वापस आने पर वे सर्वप्रथम बंबई गये और गांधीजी से मिले। वहाँ 20 जुलाई 1921 को गांधी जी और सुभाष के बीच पहली मुलाकात हुई। बहुत जल्द ही सुभाष देश के एक महत्वपूर्ण युवा नेता बन गये। नेहरूजी के साथ सुभाष ने कांठोस के अंतर्गत युवाओं की इण्डिपेंडेंस लीग शुरू की। 1928 में जब साइमन कमीशन भारत आया तब कांग्रेस ने उसे काले झंडे दिखाये। कोलकाता में सुभाष ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया। साइमन कमीशन को जवाब देने के लिये कांग्रेस ने भारत का भावी संविधान बनाने का काम आठ सदस्यीय आयोग को सौंपा। मोतीलाल नेहरू इस आयोग के अध्यक्ष बनाये गये सुभाष बाबू को इस आयोग का सदस्य बनाया गया। 1930 में जब कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में लाहौर में हुआ तब इस अधिवेशन के अन्दर तय किया गया कि भारत में 26 जनवरी का दिन स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जायेगा।

अपने सार्वजनिक जीवन में सुभाष को कुल 11 बार कारावास का दण्ड मिला। सबसे पहले उन्हें 16 जुलाई 1921 में छह महीने के लिये कृष्ण मन्दिर जाना पड़ा । 1930 में सुभाष कारावास में ही थे कि चुनाव में उन्हें कोलकाता का महापौर चुना गया। इसलिए सरकार उन्हें रिहा करने पर मजबूर हो गयी। वे जब कलकत्ता महापालिका के प्रमुख अधिकारी बने तो उन्होंने कलकत्ता के रास्तों का अंग्रेजी नाम हटाकर भारतीय नाम पर कर दिया। 1934 ई. में सुभाष अपना इलाज कराने के लिए ऑस्ट्रिया गए थे । उस समय उन्हें अपनी पुस्तक टाइप करने के लिए एक टाइपिस्ट की जरूरत थी। उन्हें एमिली शेंकल नाम की एक टाइपिस्ट महिला मिली। उन्होंने उससे सन् 1942 में बाढ़ गस्टिन नामक स्थान पर हिन्दू रीति-रिवाज के अनुसार एमिली शेंकल से विवाह किया। एमिली शेंकल से उनको पुत्री रत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम अनीता रक्खा । सुभाष ने उसे पहली बार तब देखा जब वह मुश्किल से चार सप्ताह की थी। 1938 में हरिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए चुना गया । इस अधिवेशन में सुभाष का अध्यक्षीय भाषण बहुत ही प्रभावी हुआ। 3 मई 1939 को सुभाष ने कांग्रेस के अन्दर ही फॉरवर्ड ब्लाक के नाम से अपनी पार्टी की स्थापना की। कुछ दिन बाद सुभाष को कांग्रेस से ही निकाल दिया गया। बंगाल की भयंकर बाढ में घिरे लोगों को उन्होंने भोजन, वस्त्र और सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने का साहसपूर्ण काम किया था । समाज सेवा का काम नियमित रूप से चलता रहे इसके लिए उन्होंने युवक-दल की स्थापना की ।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, अंग्रेज़ों के खिलाफ लड़ने के लिये, उन्होंने जापान के सहयोग से आज़ाद हिन्द फ़ौज का गठन किया था उनके द्वारा दिया गया जय हिन्द का नारा भारत का राष्ट्रीय नारा बन गया है। उन्होंने भारतवासियों को "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा" का नारा दिया था जो आज भी हमारे मन मस्तिष्क में गूंज रहा है।

21 अक्टूबर 1943 को सुभाष बोस ने आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से स्वतन्त्र भारत की अस्थायी सरकार बनायी जिसे जर्मनी, जापान, फिलीपींस, कोरिया, चीन, इटली, मान्छेको और आयरलैंड समेत 11 देशों ने मान्यता दी। जापान ने अंडमान व निकोबार द्वीप इस अस्थायी सरकार को दे दिये। सुभाष उन द्वीपों में गये और उनका नया नामकरण किया। 6 जुलाई 1944 को उन्होंने रंगून रेडियो स्टेशन से महात्मा गांधी के नाम एक प्रसारण जारी किया जिसमें उन्होंने इस निर्णायक युद्ध में विजय के लिये उनका आशीर्वाद और शुभकामनाएँ माँगीं । इस भाषण के दौरान नेताजी ने गांधीजी को राष्ट्रिपता कहा तभी गांधीजी ने भी उन्हे नेताजी कहा, तभी से उन्हें नेताजी कहा जाने लगा। नेताजी ने कहा था कि हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी स्वतंत्रता का मोल अपने खून से चुकाएं। हमें अपने बलिदान और परिश्रम से जो आज़ादी मिले, हमारे अन्दर उसकी रक्षा करने की ताकत होनी चाहिए। सुभाष बाबू ने कहा था याद रखिए सबसे बड़ा अपराध अन्याय सहना और गलत के साथ समझौता करना है। नेताजी कहा करते थे कि एक सैनिक के रूप में उनको आपको हमेशा सच्चाई, कर्तव्य और बलिदान जेसे तीन आदर्शों को संजोना और उन पर जीना होगा ।

23 अगस्त 1945 को टोक्यो रेडियो ने बताया कि सैगोन में नेताजी एक बडे बमवर्षक विमान से आ रहे थे कि 18 अगस्त को ताइहोकू हवाई अड्डे के पास उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान में उनके साथ सवार जापानी जनरल शोदाई, पायलट तथा कुछ अन्य लोग मारे गये। नेताजी गम्भीर रूप से जल गये थे। उन्हें ताइहोकू सैनिक अस्पताल ले जाया गया जहाँ उन्होंने अंतिम श्वास ली और नेताजी पंच महाभूतों में विलीन हो गये। सितम्बर के मध्य में उनकी अस्थियाँ संचित करके जापान की राजधानी टोक्यो के रेगोंजी मंदिर में रख दी गयी भारतीय महालेखाकार से प्राप्त दस्तावेजों के अनुसार नेताजी की मृत्यु 18 अगस्त 1945 को ताइहोकू के सैनिक अस्पताल में रात्रि ग्यारह बजे हुई थी।

आजाद हिन्द फौज के माध्यम से भारत को अंग्रेजों के चंगुल से आजाद करने के नेताजी का प्रयास हालांकि प्रत्यक्ष रूप में सफल नहीं हो सका था किन्तु उनका दूरगामी परिणाम हुआ। सन् 1946 के नौसेना का विद्रोह इसका जीता जागता प्रमाण है। नौसेना विद्रोह के बाद ही ब्रिटेन को विश्वास हो गया कि अब भारतीय सेना के बल पर भारत में शासन नहीं किया जा सकता और भारत को स्वतंत्र करने के अलावा उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं बचा। आजाद हिन्द फौज को छोड़कर विश्व-इतिहास में ऐसा कोई भी दृष्टांत नहीं मिलता जहाँ तीस-पैंतीस हजार युद्धबंदियों ने संगठित होकर अपने देश की आजादी के लिए ऐसा प्रबल संघर्ष छेड़ा हो। सुभाष चंद्र बोस के उनके संघर्षों और देश सेवा के जज्बे के कारण ही महात्मा गांधी ने उन्हें देशभक्तों का देशभक्त कहा था । नेताजी मानते थे कि जिस व्यक्ति के अंदर सनक नहीं होती वो कभी महान नहीं बन सकता । लेकिन उसके अंदर, इसके अलावा भी कुछ और होना चाहिए ।

आजाद हिंद सरकार के 75 साल पूर्ण होने पर साल 2018 मे पहली बार किसी प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त के अलावा लाल किले पर तिरंगा फहराया। प्राप्त सूचनाओं के मुताबिक नेताजी के 125 वें जन्मदिवस के उपलक्ष में भारत सरकार 2022 के गणतंत्र दिवस समारोह का शुभारंभ 24 जनवरी के बजाय 23 जनवरी से करने की योजना बना रही है। जन जन के दुलारे नेताजी का जन्मदिन देश में पराक्रम दिवस के रूप में मनाया जाता है। जन जन के दुलारे नेताजी के 23 जनवरी 2025 को राष्ट्र उनके 128वें जन्म दिन पर उनके श्री चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करता है ।

–डॉ. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज
शिक्षा जयपुर

तालाब में मलबा डालकर भराव क्षेत्र नष्ट का आरोप

मसूदा। मसूदा उपखंड अधिकारी को एडवोकेट पवन कुमार जीनगर ने एक लिखित शिकायत दी गई जिसमें उन्होंने बताया कि गत कुछ महीनों से ब्यावर से गौयला मेगा हाईवे का निर्माण किया जा रहा है उक्त मेगा हाईवे नगर पालिका क्षेत्र मसूदा से होकर निकल रहा है।

उपरोक्त मेगा हाईवे का निर्माण करने हेतु श्री बालाजी कंस्ट्रक्शन कंपनी को टैडर दिया गया है । पिछले कुछ समय पूर्व उपरोक्त कंपनी के ठेकेदार द्वारा नगर पालिका क्षेत्र मसूदा में स्थित सीमेंट की सड़क को तोड़ा गया था तथा सड़क को तोड़ने के बाद अत्यधिक मात्रा में सीमेंट का मलबा निकाला था ।

ठेकेदार द्वारा सीमेंट के मलबे और मिट्टी को सड़क से हटाकर नियोजित स्थान पर उसे डालना था परंतु ठेकेदार द्वारा बदनीयती पूर्वक और विधि विरुद्ध तरीके से कार्य करते हुए सड़क तोड़ने के बाद निकले हुए मलबे को मसूदा स्थित गोविंद सागर तालाब में डाल दिया गया ठेकेदार द्वारा सैकड़ों की तादाद में ट्रक में भरकर वह मलबा और मिट्टी गोविंद सागर तालाब में डाल दिया गया । गोविंद सागर तालाब मसूदा कस्बे का मुख्य तालाब है तथा इसके भरे जाने के पश्चात मसूदा कस्बे में भूजल स्तर पर्याप्त मात्रा में हो जाता है जिस कारण हजारों बीघा जमीन पर सिंचाई की जाती है परंतु ठेकेदार द्वारा जानबूझकर गोपाल सागर तालाब में अत्यधिक मात्रा में मलबा डाला गया जिससे भराव क्षेत्र में कमी आई है और सीमेंट का मलबा डालने के कारण पानी प्रदूषित हुआ है।

अजमेर को बाल विवाह मुक्त बनाने का किया वादा

अजमेर (कासं)। बच्चों की सुरक्षा और संरक्षण के इको सिस्टम को मजबूती देने की दिशा में एक अहम कदम उठाते हुए भारत सरकार के नीति आयोग और एसोसिएशन फॉर वालंटरी एक्शन (एवीए) ने देश के सबसे पिछड़े क्षेत्रों में बच्चों की शिक्षा, सुरक्षा और सशक्तीकरण तथा अगले एक साल में देश के 104 प्रखंडों के 15,000 गांवों को बाल विवाह मुक्त घोषित करने के लिए हाथ मिलाया है।

इस आशय के मंतव्य पत्र (एसओआई) पर नई दिल्ली में दस्तखत किए गए। नीति आयोग और एवीए की इस साझेदारी का स्वागत और समर्थन करते हुए राजस्थान महिला कल्याण मण्डल के निदेशक राकेश कुमार कौशिक ने कहा कि इस कदम से उनकी कोशिशों को एक नई उर्जा और गति मिली है और वे अजमेर को बाल मजदूरी, बाल विवाह, बच्चों की ट्रैफिकिंग और बाल यौन शोषण जैसे बच्चों के खिलाफ सभी तरह के अपराधों से मुक्त कराने के प्रयासों में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ेंगे। एवीए और आर.एम.के.एम. दोनों ही बाल अधिकारों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए देश के 416 जिलों में काम कर रहे 250 से भी ज्यादा गैरसरकारी संगठनों के नेटवर्क जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन के सहयोगी हैं।

इस पहल के साथ एकजुटता जताते हुए आर.एम.के.एम. के निदेशक राकेश कुमार कौशिक ने कहा, 'हम भारत सरकार के 'बाल विवाह मुक्त भारत' अभियान पर अमल करते हुए अपने जिले को बाल विवाह मुक्त बनाने के लिये सतत और अनथक प्रयास कर रहे हैं।

इस साझेदारी के तहत देश के सबसे अविकसित व संवेदनशील इलाकों में बच्चियों के सशक्तीकरण और शिक्षा की पारिस्थितिकी को मजबूत करने के लिए एक समग्र और व्यापक रणनीति पर अमल किया जाएगा। बाल विवाह और बच्चों की ट्रैफिकिंग की निगरानी और रोकथाम के लिए सभी लक्षित गांवों में पंचायत स्तर पर लोगों की आवाजाही और विवाहों के ब्योरे दर्ज करने के लिए रजिस्टर रखे जाएंगे। स्कूल नहीं जा पाने वाले बच्चों को शिक्षा और कौशल विकास के अवसरों से जोड़ा जाएगा, जबकि हाशिये के व्यक्तियों और परिवारों को सरकारी जनकल्याण योजनाओं से जोड़ा जाएगा।

इस अवसर पर एसोसिएशन फॉर वॉलंटरी एक्शन के कार्यकारी निदेशक धनंजय टिंगल ने कहा, 'आज समाज के सबसे कमजोर वर्गों के सशक्तीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए हम गर्व और कृतज्ञता महसूस कर रहे हैं। साझा प्रयासों से हमारा लक्ष्य 2025 के अंत तक इन प्रखंडों को बाल विवाह मुक्त बनाना और दूसरों के लिए एक मिसाल कायम करना है।

उपनिदेशक नानूलाल प्रजापति ने कहा कि नीति आयोग जिला, ब्लॉक और गांव स्तर पर राज्य सरकारों, केंद्रीय मंत्रालयों और अन्य प्रमुख हितधारकों के साथ सहयोग करेगा, जबकि एवीए संवेदनशील परिवारों की पहचान करने, समय पर हस्तक्षेप के लिए जिला प्रशासन, राज्य सरकारों और केंद्रीय मंत्रालयों के साथ सहयोग से वास्तविक समय में कठिनाई का सामना कर रहे प्रत्येक बच्चे और परिवार को राहत की दिशा में प्रगति पर नजर रखने के लिए मजबूत डेटाबेस तैयार करने, चयनित जिलोंध्ब्लॉकों में बाल मजदूरी, बच्चों की ट्रैफिकिंग और बाल विवाह सहित बच्चों की शिक्षा और संरक्षण से जुड़े प्रमुख संकेतकों पर जिला प्रशासन के साथ मिलकर काम करेगा।

भारत सरकार के नीति आयोग और एसोसिएशन फॉर वालंटरी एक्शन (एवीए) ने देश के सबसे पिछड़े क्षेत्रों में बच्चों की शिक्षा आदि के लिए हाथ मिलाया है।

राशिफल गुरूवार 23 जनवरी, 2025

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, विशाखा नक्षत्र शुक्रवार प्रात: 5:08 तक, गंड योग शुक्रवार प्रात: 5:06 तक, गर करण सायं 5:38 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 10:33 से वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-तुला, मंगल-कर्क, बुध-धनु, गुरू-वृष, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:40 तक, चर 11:19 से 12:39 तक, लाभ-अमृत 12:39 से 3:18 तक, शुभ 3:38 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:20, सूर्यास्त 5:57

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आज महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

कर्क
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आज परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। शुभ कार्यों में भाग ले सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आज मन:स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
आज अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च में वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा।

धनु
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद दूर होंगे।

मकर
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मॉडर्न जमाने में बैलगाड़ी से बारात

भीलवाड़ा । जिले के रायपुर से 15 किमी दूर गांव कोशीथल में एक अनोखी बारात देखने को मिली।

जहां एक सजी-धजी बैलगाड़ी में सवार होकर एक दुल्हा अपनी जीवनसंगिनी के घर रायपुर के सूरजपुरा गांव में सहकारी समिति रायपुर के उपाध्यक्ष मांगी लाल जाट के घर बारात लेकर पहुंचा।

- **सजी-धजी बैलगाड़ी में सवार होकर जीवनसंगिनी के घर पहुंचा दुल्हा**
- **बेलों को भी खूबसूरत तैयार किया**

पारंपरिक रीति रिवाज को कायम रखते हुए दुल्हा बैलगाड़ी से बारात लेकर पहुंचा है। भलेई जमाना मॉडन हो गया हो। लोग महंगी-महंगी कार, घोड़ा-बग्गी से बारात में पहुंचते है। लेकिन जाट समाज के रीति रिवाज पारंपरिक प्रथा आज भी ग्रामीण क्षेत्र में जीवित है। इसी प्रथा को जिंदा रखते हुए जाट समाज द्वारा बैलगाड़ी को सजा कर बारात निकाली है। मॉडन जमाने में भी परंपरा कायम है।

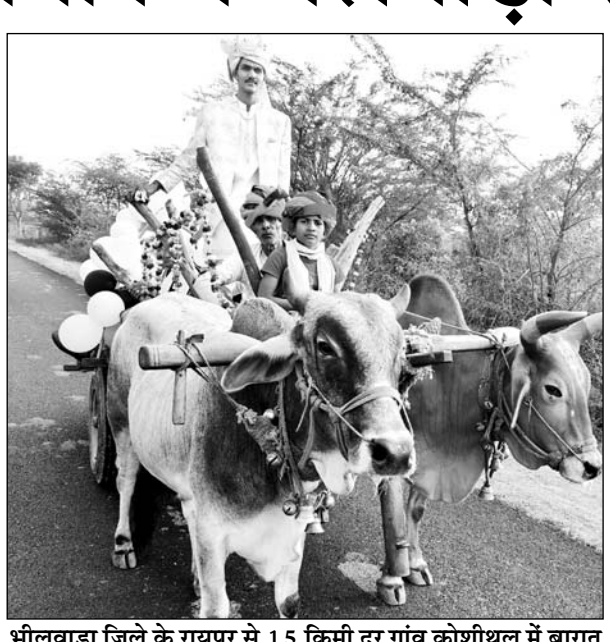

भीलवाड़ा जिले के रायपुर से 15 किमी दूर गांव कोशीथल में बारात बैलगाड़ी से निकाली ।

बैलगाड़ी से बारात आने की जानकारी लगने पर आसपास के गांव के लोग, बारात को देखने गांव पहुंचे थे। जिस प्रकार से दुल्हा-दुल्हन की कार को सजाया जाता है, उसी प्रकार से बैलगाड़ी को भी सजाया गया।

बेलों को भी खूबसूरत तैयार किया गया है। जिसमें संवार होकर दूल्हा जीवन संगिनी के घर पर पहुंचा। बारात में जाट समाज ने अपनी परंपरा अनुसार जमकर झूमे और नाचे।

दूल्हा के पिता मांगी लाल जाट ने बताया कि बेटे मोनू स्वयं की इच्छा थी कि जब भी उसकी शादी होगी, वह आजकल के दिखावों से परे अपनी बारात पुरानी रीति रिवाज की तरह सजी सवंरी बैलगाड़ी से निकालेगा। जिसके अनुरूप यह सारी व्यवस्था कर पुरानी परम्परा से बारात लेकर आए हैं।

गुजरात निवासी गिरीश भाई का अजमेर में निधन

अजमेर, 22 जनवरी (कासं)। श्री जिनदत्तसूरि मंडल दादाबाड़ी द्वारा संचालित वृद्धाश्रम में निवास कर रहे मूलत: गुजरात निवासी गिरीश भाई का 84 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया ।

श्री जिनदत्तसूरि मंडल अध्यक्ष नरेन्द्र लूणिया, जयदीप पारख, प्रो. महेन्द्र लूणिया, जसवन्त मेहता, संजय भड़गतिया, अनिल कुमार गोलेच्छा, विक्रम पारख, रवि पारख, धर्मेन्द्र जैन, संजय कुमार जैन सहित मंडल व संघ के पदाधिकारियों ने पुष्कर रोड़ स्थित श्मशान घाट पर उन्हें अग्नि को समर्पित किया। गिरीश भाई दादाबाड़ी वृद्धाश्रम में पिछले 32-33 वर्षो से निवास करते हुये साधु-साध्वियों व मंडल की सेवा में अग्रणी रहते थे। दादाबाड़ी में विराजित शतावधानी साध्वी मनोहर श्रीजी महारासा ठाणा-6 जिनदत्तसूरि मंडल और खरतरगच्छ संघ ने गिरीश भाई के निधन पर शोक प्रकट करते हुये श्रद्धांजलि अर्पित की।

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

बीकानेर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्षः 46 संख्याः 183 प्रभात बीकानेर, गुरुवार 23 जनवरी, 2025 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रू.

22 राज्यों ने राष्ट्रपति ट्रम्प के ''बर्थ सिटिज़नशिप'' विरोधी आदेश को न्यायालय में चुनौती दी

इन राज्यों व सिविल राइट्स ग्रुप्स द्वारा दायर मुकदमों में यह कहा गया है कि राष्ट्रपति ने अपने अधिकारों को लांघा है, यह आदेश जारी करते हुए, क्योंकि अमेरिका के संविधान में प्रदत्त अधिकारों का हनन करने का अधिकार राष्ट्रपति को प्राप्त नहीं है

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 जनवरी। अमेरिकन राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रम्प पर डैमोक्रेटिक रुझान वाले राज्यों के गठबंधन ओर सिविल राइट्स ग्रुप्स ने अमेरिका की नागरिकता के जन्म आधारित अधिकार को खत्म करने की योजना के खिलाफ मुकदमा कर दिया है। ट्रम्प के पद ग्रहण और कार्यकारी आदेश जारी करने के कुछ देर के भीतर ही कई मुकदमे दर्ज हो गए। उन्हें उम्मीद है इससे अमेरिकन इमिग्रेशन को स्वरुप बदल जाएगा।

पहले दो केस तो अमेरिकन सिविल लिबर्टीज़ यूनियन, जो एक इम्मिग्रैंट्स ऑर्गनाइजेशन है, तथा एक गर्भवती मां ने ट्रम्प द्वारा आदेश पर हस्ताक्षर करने के कुछ ही दिनों के भीतर दायर कर दिए थे। इससे उनके प्रशासन की पहली कानूनी लड़ाई की शुरुआत हो गई है।

- **प्रतिवर्ष 1,50,000 बच्चे अमेरिका में जन्म लेते हैं तथा राष्ट्रपति ट्रम्प ने अपने ''एग्ज़ीक्यूटिव'' आदेश इन बच्चों का, अमेरिका में जन्म लेने के कारण, स्वतः (ऑटोमैटिक) ही अमेरिका की नागरिकता प्राप्त करने का अधिकार खत्म कर दिया है।**
- **संविधान में संशोधन करके, ''बर्थ राइट नागरिकता'' का अधिकार खत्म किया जा सकता है। पर, दोनों सदनों, हाऊस ऑफ रिप्रज़ैन्टेटिव व सीनेट में यह संशोधन विधेयक दो तिहाई मतों से पारित होना जरुरी है तथा तीन चौथाई राज्यों को भी इस संशोधन विधेयक को पारित करना अनिवार्य है।**
- **पर, रिपब्लिकन पार्टी को सीनेट में विपक्ष में 47 मतों के मुकाबले 53 मत प्राप्त हैं तथा हाऊस ऑफ रिप्रज़ैन्टेटिव 215 के मुकाबले 220 मत प्राप्त कर बहुमत पाया है। अतः ट्रम्प के पास पर्याप्त वोट नहीं है, संशोधन पारित कराने के लिये।**

दो अन्य मुकदमे 22 राज्यों, जो डैमोक्रेटिक रुझान के हैं, ने तथा कोलम्बिया डिस्ट्रिक्ट और सैनफ्रांसिस्को शहर ने किए हैं। ये केस बॉस्टन और सिएटल के फैडरल कोर्ट्स में दायर किए गए हैं। इन केसों में कहा गया है कि राष्ट्रपति अपने अधिकार क्षेत्र से बाहर जाकर काम कर रहे है और अमेरिका की धरती पर जन्मे लोगों को नागरिकता देने से इन्कार करके अमेरिका के संविधान का उल्लंघन कर रहे हैं। मैसाचुसैट्स की एटॉर्नी जनरल एंड्रिया जॉय कैम्पबैल ने कहा, अगर ट्रम्प का आदेश को कायम रहने की अनुमति दी गई तो इससे डेढ़ लाख से ज्यादा बच्चे अमेरिकन नागरिकता से वंचित हो जाएंगे। अमेरिका में हर साल औसतन डेढ़ लाख बच्चे जन्म लेते हैं।

उन्होंने कहा राष्ट्रपति को यह

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पाँचवीं की छात्रा से अश्लीलता करने वाले बस चालक को 7 साल की सजा

जयपुर, 22 जनवरी। जिले की पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत ने पांचवी कक्षा में पढने वाली छात्रा को स्कूल से घर छोड़ने के दौरान उससे अश्लीलता करने वाले स्कूल बस के चालक को सात साल की सजा सुनाई है। इसके साथ ही अदालत ने अभियुक्त पर एक लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया है। पीठासीन अधिकारी कैलाश अटवासिया ने अपने आदेश में कहा कि 57 साल के अभियुक्त ने दस साल की पीड़िता के साथ उसकी लज्जा भंग करने के उद्देश्य से अश्लीलता की। ऐसे में उसके प्रति नरमी का रुख नहीं अपनाया जा सकता।

- **पॉक्सो मामले की विशेष अदालत ने स्कूल बस चालक पर एक लाख रूपये का जुर्माना भी लगाया।**

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक विजया पारीक ने 5 मई, 2023 को पीड़िता के चाचा ने अमरसर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रिपोर्ट में कहा गया कि उसकी भतीजी निजी स्कूल में पांचवीं कक्षा में पढती है। बीते दिन जब वह स्कूल से वापस आ रही थी तो सभी सवारियों के उतरने के बाद वह बस में अकेली रह गई। इस दौरान बस चालक ने उसे पानी की बोतल पकड़ाने के बहाने अपने पास बुलाया और उसके साथ अश्लीलता की। जब पीड़िता चिल्लाई तो अभियुक्त ने उसे छोड़ दिया। इस पर पीड़िता ने घर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'शेख हसीना को नहीं सौंपना ''एक्सट्रडिशन संधि'' का उल्लंघन है'

बाँग्लादेश ने भारत पर दबाव बनाना जारी रखा, पूर्व प्र.मंत्री शेख हसीना को बाँग्लादेश सरकार को सौंपने के लिये

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 जनवरी। बाँग्लादेश, भारत पर त्यौरियाँ चढ़ा रहा है। अंतरिम सरकार के विधि सलाहकार आसिफ नसरूल ने दृढ़ता के साथ कहा है कि अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना की वापसी से भारत का इनकार दोनों देशों के बीच के वर्तमान प्रत्यर्पण समझौते का उल्लंघन है। उन्होंने कहा कि देश की अंतरिम सरकार शेख हसीना को बाँग्लादेश वापस लाने के प्रयास जारी रखेगी।

नसरूल ने यहाँ तक कहा कि अगर जरूरी हुआ तो अंतरिम सरकार इस मामले में अंतर्राष्ट्रीय हस्तक्षेप की माँग करेगी।

हसीना के भारत आने के बाद, भारत-बाँग्लादेश संबंध बहुत ज्यादा खराब हो गए हैं। बाँग्लादेश में हिन्दू मंदिरों में तोड़फोड़ और वहाँ रहने वाले हिन्दुओं पर हमलों की खबरें लगातार आ रही हैं और भारत में भी बदले की कार्यवाही की रिपोर्ट मिल रही हैं। पिछले महीने हिंदू ऐक्टिविस्टों की

- **''अगर भारत ने हमारी माँग स्वीकार नहीं की तो हम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हस्तक्षेप कराने के लिये प्रयास करेंगे।''**

भीड़ अगरतला में बाँग्लादेश के असिस्टैंट हाई कमिश्नर परिसर में जबरदस्ती घुस गई और वहाँ भारी तोड़फोड़ की। इसके बाद, बाँग्लादेश में भारत-विरोधी प्रदर्शन और अधिक तेज एवं हिंसक हो गये।

शेख हसीना बाँग्लादेश में छात्रों के व्यापक विरोध प्रदर्शन के बाद, बाँग्लादेश छोड़कर भारत आ गई थीं और तब से वे यहीं रह रही हैं। छात्रों द्वारा बड़े पैमाने पर किये गये उग्र आंदोलन के कारण 16 वर्ष पुरानी अवामी लीग सरकार गिर गई थी। बाँग्लादेश के इन्टरनैशनल क्राइम्स ट्रिब्यूनल ने हसीना, उनके मंत्रिमंडल के बहुत से साथियों, सैन्य एवं सिविल अधिकारियों के खिलाफ, ''मानवता के विरूद्ध एवं जातिसंहार के अपराधों'' को लेकर गिरफ्तारी वारंट जारी कर दिये थे। ढाका ने गत वर्ष एक कूटनीतिक नोट भी नई दिल्ली भेजा था।

दोनों देशों के बीच के कूटनीतिक तनाव के कम होने के कोई लक्षण दिखाई नहीं दे रहे। पिछले सप्ताहों में, दोनों देशों ने एक दूसरे के हाई कमिश्नर तलब किये हैं, जबकि भाजपा और तृणमूल कांग्रेस के नेता बाँग्लादेश पर अनिश्चितकालीन निर्यात प्रतिबंध लगाने की धमकियाँ भी दे रहे हैं। ऐसी खबरें हैं कि भारतीय व्यापारियों ने भी बाँग्लादेश के साथ व्यापार रोक दिया है तथा माल का आवागमन बंद हो गया है। भारतीय अस्पताल भी पड़ोसी देश से आने वाले मरीजों को वापस लौटा रहे हैं।

बाँग्लादेश के हिंदू सन्यासी चिन्मय कृष्ण दास की चटगाँव में हुई गिरफ्तारी को लेकर भारतवासी बहुत उद्वेलित हैं तथा भारत के अनेक नगरों में इस घटना के खिलाफ विरोध प्रदर्शन तथा उनकी रिहाई की माँग हो रही है।

कोटा में एक ही दिन में दो कोचिंग विद्यार्थियों ने आत्महत्या की

जनवरी में हुई 6 आत्महत्याओं में 5 जेईई स्टूडैन्ट थे तथा 1 लड़की नीट यूजी की तैयारी कर रही थी

कोटा, 22 जनवरी (निसं)। कोटा में कोचिंग स्टूडेंटस की आत्महत्याओं के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। बुधवार को कोटा में एक कोचिंग छात्र और एक छात्रा ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। ये दोनों मामले जवाहर नगर थाना क्षेत्र के हैं। साल के प्रथम महीने का में ही आत्महत्या के 6 मामले सामने आ चुके हैं, जिनमें 5 स्टूडेंट्स जेईई और एक नीट यूजी की तैयारी कर रहा था।

बुधवार को हुई कोचिंग स्टूडेंट आत्महत्या के पहले मामले में मृतक छात्रा मेडिकल एंट्रेंस एग्ज़ाम की तैयारी कर रही थी। गुजरात निवासी छात्रा गत 5 महीनों से राजीव गांधी नगर में बतौर पीजी में रह रही थी। पीजी के मालिक ने बताया कि उन्हें घटना की जानकारी सुबह लगभग 10 बजे तब मिली, जब मैस वाला कमरे में गया और पाया कि छात्रा का कमरा अभी भी बंद है। इसके बाद, उन्होंने किसी को भी कमरे की ओर जाने से रोक दिया और पुलिस कंट्रोल रूम को सूचना दी। जवाहर नगर थाना

- **मैडिकल एन्ट्रैंस एग्ज़ाम की तैयारी कर रही छात्रा गुजरात की रहने वाली थी। जेईई की तैयारी करने वाला छात्र असम निवासी था।**

पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे और पाया कि छात्रा ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है। शव को मोर्चरी में शिफ्ट करवा दिया गया है। इस संबंध में उसके परिजनों को सूचना दे दी है। परिजनों के आने के बाद पोस्टमार्टम व आगे की कार्रवाई की जाएगी। पुलिस ने बताया कि छात्रा नीट यूजी की तैयारी कर रही थी।

फिलहाल घटना के पीछे क्या कारण हैं, यह पता नहीं चला हैं। इस संबंध में जांच की जाएगी। मकान मालिक के भाई के अनुसार, छात्रा पास में स्थित कोचिंग से तैयारी कर रही थी। वह पिछले पांच महीनों से उनके भाई के मकान में पीजी रूम लेकर रह रही थी। उन्होंने यह भी बताया कि छात्रा मंगलवार रात को नीचे बच्चों के साथ काफी देर तक खेली भी थी। वह बहुत खुश नज़र आ रही थी और उसने बच्चों को चॉकलेट भी खिलाई थी। सिक्योरिटी गार्ड ने भी रात को छात्रा की पूरी तरह से जांच की थी, लेकिन अगले दिन सुबह यह घटना घटित हो गई।

कोचिंग स्टूडेंट की आत्महत्या की दूसरा मामला असम के छात्र का है, जो कोटा में रहकर इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा जे.ई.ई. मेन्स की तैयारी कर रहा था। यह घटना महावीर नगर फर्स्ट के सामने स्थित हॉस्टल की है। छात्र की मां बुधवार को असम से कोटा पहुंचीं और छात्र के हॉस्टल रूम पर आई थीं। हॉस्टल में रूम का दरवाजा खटखटाया तो उसने नहीं खोला। इसके बाद हॉस्टल संचालक व लोगों को बुलाया गया। जब दरवाजे को खोला गया तथा उसे निजी अस्पताल ले जाया गया जहां पर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'ट्रेनी एसआई की फील्ड पोस्टिंग रोकने के आदेश में दखल नहीं देंगे'

जयपुर, 22 जनवरी। राजस्थान हाईकोर्ट की खंडपीठ ने एसआई भर्ती-2021 में एकलपीठ की ओर से दिए गए यथा-स्थिति और फील्ड ट्रेनिंग पर रोक लगाने के आदेश में दखल से इनकार कर दिया है। सीजे एमएम श्रीवास्तव और जस्टिस पंकज भंडारी की खंडपीठ ने यह आदेश चैतन्य सिंघल व अन्य की ओर से दायर अपील को निस्तारित करते हुए दिए। अदालत ने कहा कि एकलपीठ

- **हाई कोर्ट की डबल बैंच ने कहा कि जब एकल पीठ सुनवाई कर रही है, उसके आदेश पर रोक लगाना उचित नहीं।**

मामले में सुनवाई कर रहा है। ऐसे में इस स्तर पर एकलपीठ के आदेश पर रोक लगाना उचित नहीं है। इसके साथ ही अदालत ने अपीलार्थियों को कहा है कि वे एकलपीठ के समक्ष दस फरवरी तक अपना जवाब पेश करें। इसके अलावा अदालत ने एकलपीठ को कहा है कि वह मामले की सुनवाई जल्दी पूरी करे।

अपील में वरिष्ठ अधिवक्ता आरएन

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ताहिर हुसैन को चुनाव लड़ने हेतु जमानत देने पर मतभेद रहा सुप्रीम कोर्ट की बैंच में

अब यह मामला मुख्य न्यायाधीश के समस्त प्रस्तुत किया जाएगा, उनकी राय के लिए

- जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 जनवरी। दिल्ली दंगों के केस में आरोपी ताहिर हुसैन द्वारा दायर याचिका पर सर्वोच्च न्यायालय की दो जजों की बैंच ने विभाजित निर्णय दिया है। ताहिर हुसैन ने दिल्ली विधानसभा चुनाव लड़ने के लिये उन्हें अंतरिम जमानत दिये जाने की माँग की थी।

जहाँ जस्टिस पंकज मिथल ने याचिका खारिज कर दी, वहीं जस्टिस अहसानुद्दीन अमानुल्लाह ने हुसैन को अंतरिम जमानत मंजूर कर दी। निर्णयों की भिन्नता को ध्यान में रखते हुये, रजिस्ट्रार को निर्देश दिये गये कि वे इस प्रकरण को मुख्य न्यायाधीश के समक्ष रखें, ताकि यह प्रकरण किसी तीसरे जज को, या फिर बड़ी बैंच को सौंपा जाये।

जस्टिस पंकज मिथल तथा अहसानुद्दीन अमानुल्लाह से मिलकर बनी बैंच हुसैन की स्पेशल लीव पिटीशन की सुनवाई कर रही थी, जिसमें

- **जमानत देने से इन्कार करने वाले जस्टिस पंकज मिथल का तर्क था कि देश में सालभर चुनाव चलते हैं, इसलिए हर चुनाव में किसी क्रिमिनल को चुनाव प्रचार के लिए जमानत दी गई तो कानून की धज्जियाँ उड़ जाएंगी।**
- **जमानत देने का समर्थन करने वाले दूसरे न्यायाधीश ए. अमानुल्लाह ने कहा कि कथित आरोपी काफी समय से जेल में है, अतः जमानत देने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।**
- **ज्ञातव्य है कि ताहिर हुसैन, जो पूर्व आप पार्षद है, कथित रूप से पूर्वोत्तर दिल्ली के दंगों के दौरान आईबी के कर्मचारी अंकित शर्मा की हत्या के मुख्य आरोपी है।**

दिल्ली उच्च न्यायालय के उस निर्णय को चुनौती दी गई थी, जिसके तहत उन्हें अंतरिम जमानत देने से इनकार कर दिया गया था तथा दिल्ली की मुस्तफाबाद सीट से विधानसभा चुनाव लड़ने के लिये पर्चा भरने हेतु केवल ''कस्टडी पैरोल'' मंजूर की थी।

ज्ञातव्य है कि ताहिर हुसैन 2020 में उत्तर-पूर्वी दिल्ली में हुये दंगों के दौरान इन्टेलीजैन्स ब्यूरो (आईबी) के स्टाफ सदस्य अंकित शर्मा की हत्या के आरोपी हैं।

जस्टिस मिथल ने अपने आदेश में कहा कि चुनाव लड़ना कोई मौलिक अधिकार नहीं है। इसके बावजूद उच्च न्यायालय के आदेश में चुनाव का नामांकन पत्र दाखिल करने के लिये कस्टडी पैरोल मंजूर करके चुनाव लड़ने के अधिकार की रक्षा की गई है। जस्टिस मिथल ने कहा कि इस आधार पर अन्तरिम जमानत देने से ऐसे मामलों की बाढ़ आ जाएगी, क्योंकि हर अन्डरट्रायल आरोपी इस आधार पर अन्तरिम जमानत मांगेगा।

उन्होंने कहा कि प्रचार के लिये अन्तरिम जमानत पर रिहा करने का मतलब होगा, आरोपी को घर-घर जाकर प्रचार करने की तथा उस क्षेत्र में जनसभाएं करने की अनुमति देना, जहाँ अपराध हुआ था तथा जहाँ गवाह रहते हैं। इस प्रकार, आरोपी के गवाहों से मिलने की पूरी-पूरी संभावना रहेगी। वह उन्हें प्रभावित कर सकता है।

चार्जशीट में आरोपी पर गंभीर आरोप लगाये गये हैं तथा उनके घर/कार्यालय की छत का उपयोग अपराधों के केन्द्र के रुप में हुआ था।

जस्टिस मिथल ने कहा, ''यहाँ यह

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ट्रक टिपर से टकराकर गहरी घाटी में गिरा, 11 की मौत

यालापुरा, 22 जनवरी। कर्नाटक के उत्तर कन्नड़ जिले के यालापुरा हाईवे पर भीषण सड़क हादसा हुआ है। यहां गुलापुरा में सब्जी ले जा रहा ट्रक नियंत्रण खो बैठने के बाद एक ट्रिपर से टकरा गया और 50 मीटर गहरी घाटी में गिर गया। जिसमें ट्रक के परखच्चे

- **ट्रक में फल विक्रेता मेले में फल बेचने जा रहे थे। ट्रक 50 मीटर गहरी घाटी में गिरा।**

उड़ गए। इस हादसे में 11 लोगों की मौत हुई है और 10 लोग घायल हुए हैं। ये हादसा सुबह करीब 4 बजे हुआ।

एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि जिस सब्जी के ट्रक में वे लोग यात्रा कर रहे थे, वह बुधवार तड़के 50 मीटर गहरी घाटी में गिर गया। पीड़ित, सभी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ट्रम्प के महत्वाकांक्षी, नारेबाजी पूर्ण भाषण के बाद से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रणनीतियां उभरने लगी हैं बड़े देशों के बीच

तुरन्त ही चीन के राष्ट्रपति शी व रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने ''वर्चुअल'' मीटिंग आयोजित कर विशेष मैत्रीपूर्ण संबंधों को पुनः सार्वजनिक रूप से दोहराया

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 जनवरी। डॉनल्ड ट्रम्प के हाई डैसिबल उद्घाटन भाषण ने अंतर्राष्ट्रीय रणनीतिक रिश्तों को हिलाकर रख दिया है।

नए राष्ट्रपति के रूप में ट्रम्प के शपथ ग्रहण के कुछ घंटों के अंदर ही वो घटनाएं घटने लगी हैं, जो अवश्यंभावी थीं। रूस और चीन ने अपना ''असीम मित्रता'' सैशन आयोजित किया, जिसमें उन्होंने अपने गहरे रणनीतिक और रक्षा संबंधों की पुष्टि की। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन के साथ एक वर्चुअल बैठक की, जिसमें उन्होंने नए वैश्विक वातावरण पर विचार विमर्श किया।

उनके रिश्तों की इस मजबूत पुष्टि ने यह

- **इसका नतीजा यह निकला कि ट्रम्प कुर्सी संभालते ही यूक्रेन युद्ध समाप्त करने के अपने वादे को नहीं निभा पा रहे। ट्रम्प ने कहा, यूक्रेन बातचीत कर समझौते को तैयार है, पर, पुतिन आगे नहीं बढ़ रहे। ट्रम्प ने यूक्रेन को नये आधुनिकतम हथियार देने की बात भी कही।**
- **ट्रम्प अब चीन को मनाने का भी प्रयास कर रहे हैं, कि चीन अपने प्रभाव का इस्तेमाल कर रूस को बातचीत के लिये टेबल पर लाये।**
- **दूसरी ओर शपथ ग्रहण समारोह के तुरंत बाद अमेरिका ने क्वाड देशों (भारत, जापान, आस्ट्रेलिया व अमेरिका) की अहम बैठक आयोजित की। क्वाड देशों को स्पेशल ट्रीटमैंट देना भी इन देशों को मजबूती से साथ रखने के लिए है, चीन के बढ़ते दबाव के जवाब में।**

दर्शाया है कि इनमें से किसी एक देश के खिलाफ एकतरफा कार्रवाई की गई तो दूसरे देश की तरफ से भी प्रतिक्रिया होगी। इस प्रकार, राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रम्प को यूक्रेन मुद्दे पर रूस के खिलाफ कदम उठाने में मुश्किल हो सकती है।

दूसरी ओर, राष्ट्रपति शी जिनपिंग को अपने रूसी समकक्ष से दक्षिण चीन सागर, ताइवान या दुनिया के अन्य हिस्सों में उत्पन्न हो रही स्थितियों से निपटने में समर्थन मिल सकता है।

एक तरफ रूस-चीन धुरी और दूसरी तरफ आक्रामक संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच इस प्रकार का अलगाव व मनमुटाव वैश्विक रणनीतिक खेल में अन्य देशों के लिए कुछ कठोर विकल्प प्रस्तुत कर सकता है। ट्रम्प अपने उद्घाटन के तुरंत बाद रूस को गंभीर चेतावनियाँ दे चुके हैं।

ट्रम्प ने पहले डींग मारी थी कि उनके वाइट हाउस में फिर से प्रवेश करने के कुछ ही दिनों में यूक्रेन युद्ध समाप्त हो जाएगा, हालांकि, अब ट्रम्प अपनी स्क्रिप्ट बदल रहे हैं और अपने उद्घाटन के बाद की गई अपनी प्रैस बातचीत में उन्होंने घोषणा की है कि अगर रूस समझौता वार्ता में शामिल होने से इन्कार करेगा तो

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

आग लगने की अफवाह से लोग ट्रेन से कूदे, 12 की मौत

जलगांव, 22 जनवरी। महाराष्ट्र के जलगांव में बुधवार शाम 4:42 बजे बड़ा ट्रेन हादसा हुआ। यहां पाचोरा स्टेशन के पास माहेजी और परधाड़े के बीच पुष्पक एक्सप्रेस में आग लगने की अफवाह फैली। इस दौरान किसी यात्री ने चेन पुलिंग कर दी। ट्रेन रुकी और घबराए यात्री कूद गए। इसी दौरान दूसरे ट्रैक पर आ रही कर्नाटक एक्सप्रेस ने कई यात्रियों

- **ट्रेन से कूदने वाले कई यात्री दूसरे ट्रैक पर आ रही ट्रेन से कुचले गये।**

को कुचल दिया। हादसे में 12 लोगों की मौत हो गई। 40 पैसेंजर्स के घायल होने की खबर है। मध्य रेलवे के मुख्य प्रवक्ता स्वप्निल नीला ने कहा कि पुष्पक एक्सप्रेस में आग लगने की अफवाह के बाद कुछ यात्री नीचे उतर गए और बेंगलुरू से दिल्ली की ओर जा रही

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दो शातिर चोर गिरफ्तार

चार से अधिक मोबाइल टावरो से केबल चोरी की करना कबुला

ब्यावर (निसं) श्याम सिंह (आई.पी.एस.) पुलिस अधीक्षक के निर्देशानुसार, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एवं वृत्ताधिकारी के निकटतम सुपरविजन में थानाधिकारी विजय सिंह उप निरीक्षक शहर की टीम द्वारा मोबाइल टावरो से तार चोरी करने वाली गैंग के खिलाफ कार्यवाही करते हुए चोरी गये माल को बरामद कर 02 आरोपियों दिनेश उर्फ कोबरा पुत्र देवाराम मेघवाल उम्र 27 साल निवासी अम्बेडकर कोलोनी फतेहपुरिया दोयम पुलिस थाना साकेतनगर, समीर काठात पुत्र मोहम्मद खान मेहरात उम्र 19 साल निवासी नाका का बाडिया दुर्गावास पुलिस थाना साकेतनगर को गिरफ्तार किया गया।

20.जनवरी को चेतनसिंह ने उपस्थित होकर शिकायत दर्ज करवाई की मेरी जिओ कंपनी के टावरों की देखरेख का काम करती है। अमृतकौर हॉस्पिटल के पीछे स्थित जिओ कंपनी के टावर से रात्री के करीब 11 बजे किसी अज्ञात व्यक्तियों द्वारा 5 केबल की चोरी की गई जिसकी सूचना कंपनी के अलार्म सिस्टम द्वारा साइट डाउन होने पर टेक्नीशियन को मिलने पर टेक्नीशियन मौके पर पहुंचा तो केबल कटी हुई थी। रिपोर्ट पर प्रकरण दर्ज कर अपराध की गम्भीरता को मध्य नजर रखते हुए आरोपीयों की तलाश हेतु थाना स्तर पर एक विशेष टीम का गठन किया जाकर आसपास के सीसीटीवी कैमरे चैक किये गये व मुखबीर से प्राप्त सूचना के आधार पर संदिग्ध अभियुक्त दिनेश उर्फ कोबरा व समीर काठात को दस्तयाब कर पूछताछ करने पर चोरी की वारदात में शामिल होना स्वीकार किया गया। चोरी का माल बरामद कर उक्त आरोपिगण को गिरफ्तार किया जाकर जांच जारी है।

पुलिस ने चोरी का माल बरामद कर आरोपियों को गिरफ्तार किया।

- केबल व तांबे के तार बरामद

साक्षात्कार के लिए सफल अभ्यर्थियों की सूची जारी

अजमेर (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा एठीकल्चर रिसर्च ऑफिसर(कृषि विभाग) प्रतियोगी परीक्षा-2022 के अंतर्गत विभिन्न पदों के लिए साक्षात्कार के लिए सफल अभ्यर्थियों की सूचियां जारी की गई है। विस्तृत जानकारी आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

आयोग सचिव ने बताया कि उक्त परीक्षा के अंतर्गत 29 तथा 30 अगस्त 2022 को आयोजित परीक्षाओं के फलस्वरूप 15 से 24 अक्टूबर 2024 तक पात्रता जांच के लिए विचारित सूचियां जारी की गई थी।पात्रता जांच उपरांत एठोनॉमी के पदों के लिए 9, हॉर्टिकल्चर के पदों के लिए 3, प्लांट पैथोलॉजी के पदों के लिए 3 एवं एंटोमोलॉजी के पदों के लिए 9 अभ्यर्थियों को साक्षात्कार के लिए सफल घोषित किया गया है। साक्षात्कार की तिथि के सम्बन्ध में अभ्यर्थियों को यथा समय अवगत करवा दिया जाएगा।

आधी रात गर्ल्स हॉस्टल में अधिकारी पकड़ा

तीन दिन से ठहरा हुआ था अधिकारी

डूंगरपुर। समाज कल्याण विभाग के असिस्टेंट डायरेक्टर अशफाक खान तीन दिन से सावित्री बाई फुले गर्ल्स हॉस्टल में रात बिता रहे थे। इसकी भनक अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के कार्यकर्ताओं को लगी। मंगलवार आधी रात को कार्यकर्ता हॉस्टल पहुंचे और असिस्टेंट डायरेक्टर को कमरे से बाहर निकाला। उन्होंने बाकायदा कलेक्टर अंकित कुमार सिंह को कॉल कर इसकी सूचना दी। कलेक्टर ने असिस्टेंट डायरेक्टर को फौरन हॉस्टल से बाहर जाने के लिए कहा। साथ ही, नोटिस जारी कर जवाब-तलब किया गया है।

यह पूरा मामला डूंगरपुर शहर के वसुंधरा विहार कॉलोनी का है। वसुंधरा विहार स्थित सावित्री बाई फुले गर्ल्स हॉस्टल में मंगलवार रात करीब 12 बजे खूब हंगामा हुआ। यहां एसटी वर्ग की 40 छात्राएं रहती हैं। आरोप है कि शहर में समाज कल्याण विभाग के दो बॉयज हॉस्टल होने के बावजूद असिस्टेंट डायरेक्टर गर्ल्स हॉस्टल में रुके हुए थे। सावित्री बाई फुले गर्ल्स हॉस्टल में एबीवीपी के कार्यकर्ता आधी रात में आ धमके और समाज कल्याण विभाग के असिस्टेंट डायरेक्टर अशफाक खान को बाहर निकाला। सावित्री बाई फुले गर्ल्स हॉस्टल में एबीवीपी के कार्यकर्ता आधी रात में आ धमके और समाज कल्याण विभाग के असिस्टेंट डायरेक्टर अशफाक खान को बाहर निकाला।

- एबीवीपी कार्यकर्ताओं ने कमरे से बाहर निकाला, जमकर हंगामा किया

एबीवीपी के राष्ट्रीय सदस्य हर्षित ननोमा ने बताया कि शहर के सावित्री बाई फुले गर्ल्स हॉस्टल में किसी अधिकारी के अवैध रूप के रुकने की शिकायत मिली थी। एबीवीपी के जिला संगठन मंत्री रामकृष्ण मेहता,जिला संयोजक महिपाल गमेती,जनजाति प्रमुख राजेंद्र खराडी और संजय खराडी रात करीब 12.30 बजे हॉस्टल पहुंचे। इससे पहले पुलिस को भी सूचना दी गई। हॉस्टल गेट पर आवाज लगाने पर वार्डन गेट पर आए।

वार्डन से अधिकारी के बारे में पूछने पर उन्होंने बताया कि जिला अधिकारी कलेक्टर यहां रुके हुए हैं। एबीवीपी कार्यकर्ता मोबाइल कैमरा चालू रखते हुए हॉस्टल में गए और कमरे में रुके अधिकारी को पकड़ा। अधिकारी ने खुद को समाज कल्याण का डिप्टी डायरेक्टर अशफाक खान बताया। साथ ही उन्होंने कहां कि हॉस्टल का निरीक्षण करने आया हूं। एबीवीपी कार्यकर्ताओं ने 3 दिन से हॉस्टल में ठहरने के बारे में पूछा। कभी ट्रांसफर होकर आने तो कभी कमरा नहीं मिलने की बात अशफाक खान कहने लगे। इस पर कार्यकर्ताओं ने नाराजगी जताई।

मौके से कलेक्टर से की बात :- हर्षित ननोमा ने बताया कि मौके से ही जिला कलेक्टर अंकित कुमार सिंह को फोन कर घटना के बारे में बताया। इस पर कलेक्टर ने भी किसी अधिकारी के गर्ल्स हॉस्टल में ठहरने पर नाराजगी जताई और उन्हें तुरंत ही वहां से जाने के लिए निर्देश दिए। साथ ही महिला पुलिस कर्मियों को भी हॉस्टल पर तैनात करने की बात कही।

प्रोजेक्ट मैनेजर को ऑफिस से उठा ले गए बदमाश

मारपीट की और धमकाया

बीकानेर। पुलिस थाना क्षेत्र के जयमलसर गांव में कैंपर गाड़ी में सवार होकर पहुंचे बदमाश सोलर कंपनी के प्रोजेक्ट मैनेजर को ऑफिस से उठा ले गए। उसके साथ मारपीट की और धमकी देकर गांव में पटक गए। पुलिस बदमाशों को तलाश रही है। यूपी में गोरखपुर निवासी राजीव पांडेय जयमलसर गांव में लगे रिन्यू सोलर पॉवर कंपनी में प्रोजेक्ट मैनेजर है।

गांव और आसपास रहने वाले बदमाश प्रवृत्ति के लोग प्लांट में काम हासिल करने के लिए कंपनी के अधिकारियों पर दबाव बनाते रहते हैं। इसी कारण कैंपर गाड़ी में सवार बदमाश जयमलसर में लगे सोलर प्लांट कंपनी के प्रोजेक्ट मैनेजर राजीव के ऑफिस पहुंचे और उन्हें जबरन उठा ले गए। प्रोजेक्ट मैनेजर की ओर से पुलिस को दी गई रिपोर्ट में बताया गया है कि गाड़ी में तीन लोग सवार थे जिनमें से ड्राइवर का नाम प्रताप सिंह था। तीनों ने मारपीट की और जयमलसर गांव की ओर ले गए। उसका मोबाइल बंद कर दिया।

वारदात को अंजाम देकर तीनों बदमाश उसे जयमलसर गांव में पटककर फरार हो गए। जाने से पहले धमकी दी कि अगर काम नहीं दिया तो जान से मार देंगे। गांव के लोगों ने उसे प्लांट ले जाकर छोड़ा। प्रोजेक्ट मैनेजर ने पुलिस को बदमाशों की कैंपर गाड़ी पर लिखे नंबर भी बताए हैं। नाल थाना पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया और मामले की जांच एएसआई सुभाषचन्द को सौंपी गई है।

दो वर्ष से फरार चल रहा इनामी साइबर ठग गिरफ्तार

बौंली-बामनवास। सवाई माधोपुर जिला पुलिस अधीक्षक ममता गुप्ता के निर्देशन में चलाए जा रहे साइबर शील्ड एंटीवायरस अभियान के तहत गठित पेशल टीम ने जिला स्तर पर 5हजार का इनामी एवं दो वर्ष से फरार चल रहा साइबर ठग अजहरुद्दीन जाति मेव निवासी बास गोठड़ा जिला अलवर को थाना बानसूर क्षेत्र से गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है।

सवाई माधोपुर जिला पुलिस अधीक्षक ममता गुप्ता ने बताया कि आरोपी दिल्ली क्राइम ब्रांच का अधिकारी बनकर परिवादी का न्यूड वीडियो वायरल करने की धमकी देकर 2लाख25हजार लेने की वारदात में 2 वर्ष से फरार चल रहा था। आरोपी की गिरफ्तारी को लेकर बाटोदा थाना प्रभारी यशपाल सिंह, सहायक उप निरीक्षक अजीत मोगा, हैड कांस्टेबल बलवीर सिंह मान टाउन थाना, हैड कांस्टेबल लक्ष्मण सिंह मान टाउन थाना, कांस्टेबल विजय सिंह मान टाउन थाना एवं कांस्टेबल मनिंदर सिंह थाना बानसूर की एक विशेष टीम गठित की गई। इस दौरान सहायक उप निरीक्षक अजीत मोगा को सूचना मिली कि आरोपी अजहरुद्दीन गुजरात गया हुआ है।

इस पर हैड कांस्टेबल लक्ष्मण सिंह, बलवीर सिंह एवं कांस्टेबल विजय सिंह को नेनावा बनासकांठा गुजरात भेजा गया। पुलिस टीम द्वारा पीछा करने की आरोपी को भनक लग जाने पर आरोपी बनासकठा से रवाना होकर सांचौर, जालौर राजस्थान आ गया पुलिस टीम जालौर पहुंची तो आरोपी भीलवाड़ा जयपुर होते हुए अलवर बानसूर आ गया पुलिस टीम ने आरोपी का करीब 1हजार किलोमीटर पीछा करके बानसूर थाना क्षेत्र जिला अलवर से गिरफ्तार किया है।

आरोपी के खिलाफ सरकारी शिक्षक निरंजीलाल रैगर निवासी जाखोलस कला थाना बाटोदा ने मामला दर्ज कराया था की 31 जुलाई 2022 को व्हाट्सएप पर अनजान नंबर का एक न्यूड वीडियो व न्यूड फोटो उसके पास आया एक लड़की ने कॉल करके सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर छवि खराब करने की धमकी देकर ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया एवं अलग-अलग बैंक अकाउंट से पैसे डलवाए इस प्रकार साइबर ठगी व बेईमानी पूर्वक करीब 2लाख50हजार रुपए प्राप्त किए। पुलिस थाना बाटोदा ने अपराध पंजीबद्ध कर जांच की गई जिसमें अजहरुद्दीन को अपराध प्रमाणित पाया गया।

जेईई मेन परीक्षा शुरू : मैथमेटिक्स रही मुश्किल

कोटा, (निसं)। देश की सबसे बड़ी इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा जेईई मेन की शुरुआत बुधवार से हुई। पहली पारी का एग्जाम सुबह 9 से 12 तक और दूसरी पारी का 3 बजे से शाम 6 बजे तक हुआ।

परीक्षा में बैठने वाले स्टूडेंट्स के अनुसार कुल मिलाकर मैथ्स मुश्किल लगा लेकिन फिजिक्स और केमिस्ट्री का पेपर तुलनात्मक रूप से आसान था। यह भी देखा गया कि कक्षा 12वीं के सवाल कक्षा 11वीं की तुलना में अधिक थे। मोशन एजुकेशन के फाउंडर तथा सीईओ नितिन विजय ने बताया कि पहली पारी में मैथ्स का डिफिकल्टी लेवल मध्यम से कठिन था। इसके 40 प्रतिशत सवाल आसान, 40 प्रतिशत मध्यम और को 20 प्रतिशत कठिन कहा जा सकता है। न्यूमेरिकल वैल्यूज वाले सवालों के पैटर्न और स्ट्रक्चर में बदलाव के कारण मैथ्स का डिफिकल्टी लेवल गत वर्ष से अधिक बताया जा रहा है। यह उन स्टूडेंट्स के लिए ही मैनेजेबल था जिन्होंने परीक्षा के लिए अच्छी तैयारी की है। फिजिक्स का डिफिकल्टी लेवल मध्यम स्तर पर था। इसमें 50 प्रतिशत आसान, 33 प्रतिशत मध्यम और 17 प्रतिशत कठिन सवाल थे। अधिकांश सवाल आसान से मध्यम स्तर थे। केमिस्ट्री वाला पार्ट मध्यम से कठिन था। यह 37 प्रतिशत आसान, 33 प्रतिशत मध्यम और 30 प्रतिशत कठिन कहा जा सकता है।

फिजिक्स में डी ब्रोगली वेवलेंथ, एसएमआर, पोटेंशियोमीटर, रे ऑप्टिक्स, हीट, सेमीकंडक्टर, मैथ्स में स्टेटिस्टिक्स, प्रोबेबिलिटी, वेक्टर्स और 3-डी ज्योमेट्री, मेट्रिक्स व डेटर्मिनेन्ट्स और केमिस्ट्री में मोल कांसेप्ट, केटेलिस्ट, बायोमोलीक्यूल्स, ऑर्गेनिक और फिजिकल केमिस्ट्री को अधिक वेटेज दिया। कंप्यूटर आधारित इस टेस्ट (सीबीटी) में 300 अंक के एमसीक्यू और न्यूमेरिकल वैल्यू आधारित 75 सवाल पूछे गए। इनका जवाब 180 मिनट में देना था। जेईई मेन 2025 परीक्षा पैटर्न के अनुसार उम्मीदवारों को प्रत्येक सही उत्तर के लिए 4 दिए जाएंगे, जबकि प्रत्येक गलत उत्तर के लिए 1 अंक काटा जाएगा।

नहर की दीवार के सहारे मिला युवक का शव

कोटा, (निसं)। किशोरपुरा थाना इलाके मे दांयी मुख्य नहर के किनारे बुधवार को एक युवक का शव पड़े होने की सूचना मिली। सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची, और मौके पर नगर निगम की गोताखोर टीम को बुलाया गया। नगर निगम के गोताखोर विष्णु श्रृंगी ने बताया कि कंट्रोल रूम से दांयी मुख्य नहर में शव पड़े होने की सूचना मिली थी, सूचना पर टीम को मौके पर रवाना किया गया।

विष्णु श्रृंगी ने बताया कि मौके पर पहुंचे तो युवक का शव नहर में नही नहर के किनारे दीवार के सहारे पड़ा था, लेकिन वहां तक पहुंचने के लिये कोई जगह नही मिलने पर नहर की टुटी सैफ्टीवॉल को हथोड़े के सहारे तोड़कर शव को बाहर निकालकर पुलिस को सौंपा गया। किशोरपुरा थाने के थानाधिकारी भूरी सिंह ने बताया कि मृतक नशा करने का आदी था जिसके हाथ में एक इंजेक्शन लगा हुआ था। मृतक की शिनाख्त किशोरपुरा निवासी भवानी सिंह (26) के रूप में की गई।

निवाई में अवैध बजरी माफियाओं का आंतक

बाइक सवार वृद्ध व्यक्ति को बजरी भरे टैक्ट्रर ने मारी टक्कर, ग्रामीणों में भारी आक्रोश

निवाई। अवैध बजरी भरे टैक्ट्रर ने वृद्ध व्यक्ति के टक्कर मार दी जिससे ग्रामीणों में भारी आक्रोश व्याप्त है। कांटोली आश्रम के संत श्रीराम महाराज सहित कई ग्रामीणों ने बताया कि अवैध बजरी भरे टैक्ट्रर ने बाईक सवार गोविन्दनारायण मीणा निवासी कांटोली के टक्कर मार दी। ग्रामीणों ने बजरी माफियाओ को रूकवाने का प्रयास किया तो उसके अन्य साथियों ने धक्का मुक्की कर उसे छुड़ाकर ले गए।

उन्होंने बताया कि उपखंड क्षेत्र में लगातार धड़ल्ले से अवैध बजरी परिवहन हो रहा है। जिसकी सूचना के बाद भी घंटों तक पुलिस नहीं पहुंचती है। ग्रामीणों ने बताया कि दतवास पुलिस की मिलीभगत से करोड़ों का अवैध बजरी का परिवहन हो रहा है। उन्होंने बताया कि न्यायालय सहित शासन व प्रशासन के सख्त निर्देशों के बाद भी प्रशासन बजरी खनन व परिवहन पर रोक लगाने में नाकाम नजर आ रहा है। अवैध खनन व परिवहन में शामिल लोग

- दतवास पुलिस की मिलीभगत से हो रहा हैं करोड़ों का अवैध बजरी का परिवहन

गांवों मे ट्रैक्टर ट्रॉली को सरपट दौड़ाते हुए लेकर जाते हैं। जिससे गांवों मे दुर्घटना का अंदेशा बना रहता है।

इन बजरी माफियाओं के दलाल ट्रैक्टर ट्रॉली के आगे आगे मोटर साइकिल पर चलते हुए रास्तों पर पुलिस का ध्यान रखते हुए ट्रैक्टर चालकों को रास्तों की पल पल की जानकारी उपलब्ध करवाते हैं। सरपट दौड़ते ट्रैक्टरों की वजह से सडक़ें पूरी तरह क्षितग्रस्त हो चुकी हैं। बजरी माफियाओं ने पुलिस से बचने के लिए अलग अलग शार्ट मार्ग ढूंढ रखे हैं। पुलिस की कोई नाकाबंदी नहीं होने से ट्रेक्टर चालकों के हौसले बुलंद हैं। पुलिस प्रशासन द्वारा भी पूरी तरह हाथ पर हाथ धरकर बैठने से भी बजरी माफियाओं मे कोई डर नहीं हैं। ग्रामीणों ने उक्त घटना की सूचना पुलिस को दी। जिस पर बरोनी थाना पुलिस मौके पर पहुची लेकिन सीमा क्षेत्र दतवास थाना का होने के कारण बैरंग लौट गई। जिससे ग्रामीणों में भारी आक्रोश व्याप्त है। श्रीराम महाराज ने पुलिस अधीक्षक सागवान को दूरभाष पर घटना की सूचना देकर बजरी माफियाओं पर कार्रवाई की मांग की है।

टोंक में चार ट्रैक्टर-ट्रोली व एक डम्पर जब्त :- जिले भर में जिला पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान के निर्देशन में चलाये जा रहे विशेष अभियान के तहत अवैध बजरी खनन व परिवहन के क्षेत्र में कार्यवाही करते हुए जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों से 4 ट्रैक्टर, एक ट्रोली व एक डम्पर बजरी से भरा जप्त कर एक चालक को गिरफ्तार किया है। थाना पचेवर से एक ट्रैक्टर-ट्रोली एवं चालक, थाना घाड क्षेत्र से तीन ट्रैक्टर-ट्रोली व बरोनी थाना क्षेत्र में एक डम्पर अवैध बजरी से भरा जप्त किया गया।

हिस्ट्रीशीटर की 1.15 करोड़ की संपत्ति फ्रिज

पुलिस ने मिशन संकल्प के तहत की कार्रवाई

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर की पुलिस मादक तस्करों के विरुद्ध निरंतर अभियान चला रही है। अभियान मिशन संकल्प के तहत पुलिस की ओर से जोधपुर के लूणी थाने के हिस्ट्रीशीटर की एक करोड रुपए से अधिक की संपत्ति को एनडीपीएस एक्ट की धारा 68 एफ के तहत फ्रिज किया गया। इसको लेकर डीसीपी वेस्ट राजर्षि राज वर्मा ने जानकारी दी।

डीसीपी ने बताया कि जोधपुर में वेस्ट जिले की पुलिस मादक पदार्थ तस्करी को रोकने के लिए मिशन संकल्प अभियान चला रही है। इस अभियान के तहत उन तस्करों को चिन्हित किया गया है। जो लंबे समय से तस्करी के कामों में लिप्त है और तस्करी के जरिए काली कमाई कर अवैध तरीके से संपत्ति अर्जित कर रहे हैं। उन्होंने कहा ऐसे तस्करों के खिलाफ पुलिस का अभियान जारी है। इसी के तहत लूणी थाने के हिस्ट्रीशीटर दिनेश बिश्नोई उर्फ कालू की अवैध संपत्ति को फ्रीज किया गया है। उसकी 4 लाख 50 हजार रुपए बाजार कीमत की दो बीघा 10 विश्व कृषि भूमि, 42 लाख कीमत की 14 बीघा पांच बिस्वा कृषि भूमि, निर्माणसुदा एक रहवासीय मकान जिसकी बाजार कीमत 68 लाख 12 हजार 500 बताई जा रही है। इस तरह से कुल 1 करोड़ 15 लाख रुपए की संपत्ति को फ्रिज किया गया है। हिस्ट्रीशीटर दिनेश के खिलाफ 11 मामले अलग-अलग स्थान में दर्ज है। जिनमें से 9 मामले एनडीपीएस एक्ट के हैं।

इसके अलावा उसकी पूजा इंटरप्राइजेज नाम की एक फर्म भी पाई गई है। जिसके जरिए 60 लाख रुपए का रोड निर्माण से संबंधित कार्य करना भी पाया गया। इसको लेकर भी जांच की जा रही है। वहीं तीन बैंक खातों को भी फ्रिज करवाया गया। जिसमें लाखों रुपए का लेनदेन होना पाया गया है। इसके अलावा मनी लॉन्ड्रिंग को लेकर भी जांच की जा रही है।

- हिस्ट्रीशीटर के खिलाफ अलग-अलग स्थान में 11 मामले दर्ज है

विदेशी पर्यटक पहुंचे मालासेरी डूंगरी

आसींद (निसं)। विदेशी पर्यटक अपने परिवार के साथ पहली बार मंगलवार को भगवान श्री देवनारायण की जन्म स्थली ,माता साडू की अखंड तपोभूमि ,भगवान विष्णु के गरुड़ अवतार लीलाघर घोड़े की जन्म स्थली मालासेरी डूंगरी पर दर्शन करने आए और भगवान श्री देवनारायण जी के दर्शन कर आशीर्वाद लिया। जन्मस्थली मालासेरी डूंगरी की लीला को विस्तृत से देखा एवं यहां के पूरे इतिहास के बारे में जानकारी ली तत्पश्चात श्री देवनारायण जन्म स्थली मालासेरी डूंगरी पर ।राजस्थान धरोहर प्राधिकरण द्वारा बनाए गये भगवान श्री देवनारायण के पैनोरमा का अवलोकन किया और उसमें देवनारायण जी की जीवन लीला और बगड़ावत महाभारत चौहान वंश के पूरे इतिहास को देखा और भगवान श्री देवनारायण जी इतने बड़े इतिहास को देख कर के काफी प्रभावित हुए।

कार्यालय नगर निगम, उदयपुर
टाउनहॉल लिंक रोड, उदयपुर (राज.) 313001
दूरभाष स. 0294-2421255, 2420013, Helpline no.0294-2426262 वेबसाईट- www-udaipurmc.org
क्रमांक:- राजस्व/2024-25/99 दिनांक:- 17.01.2025
निविदा सूचना
नगर निगम उदयपुर द्वारा वाहन पार्किंग स्थल "आसीन्द की हवेली ऊपरीतल" पर 2 वर्ष की अवधि के लिए वाहन पार्किंग कार्य हेतु सील बन्द निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा की विस्तृत जानकारी, निविदा प्रपत्र एवं नियम शर्तों की सूचना वेबसाईट https://sppp.Rajasthan.gov.in व www.udaipurmc.org पर उपलब्ध है। निविदा की प्रारंभ तिथि 22.01.2025 अन्तिम तिथि 29.01.2025 तथा खुलने की तिथि 30.01.2025 है।
UBN No.- UNP2425SSOB00173
राज.संवाद/सी/24/10667 आयुक्त, नगर निगम, उदयपुर

AGRICULTURAL RESEARCH STATION, UMMEDGANJ, KOTA
No. :- F. 16 ( )/ZDR/ARS/Kota/2024-25/5452-60 Date :- 21/01/2025
ई-निविदा सूचना
कृषि अनुसंधान केन्द्र, उम्मेदगंज, कोटा, पर Chemicals, Glasswares, Plasticware and other miscellaneous lab items etc. की आपूर्ति हेतु ई-निविदा आमंत्रित की जाती है जिसकी अनुमानित लागत रूपये 34.00 लाख है। इच्छुक विनिर्माता/अधिकृत विक्रेता निविदा फार्म दिनांक 21.01.2025 से 31.01.2025 तक www.eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाईन जमा कर सकते है। निविदा से सम्बन्धित समस्त जानकारी व शर्तें www.sppp.rajasthan.gov.in तथा विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.aukota.org से भी प्राप्त की जा सकती है।
UBN : AUK2425GLOB00121, NIB Code : AUK2425A0077
राज.संवाद/सी/24/10654 केंद्रीय निदेशक अनुसंधान

राज.स्वा.वि.वि. आयुर्विज्ञान महाविद्यालय
कार्यालय- प्रधानाचार्य एवं नियंत्रक, जयपुर
Office of the Principal & Controller, RUHS College of Medical Sciences, Jaipur (Constituent College of Rajasthan University of Health Sciences)
क्रमांक :- आर.यू.एच.एस.-सी.एम.एस./पैरामेडिकल/2024-25/8757 दिनांक :- 21/01/2025
विज्ञप्ति
RPMC 2024 के निर्देशानुसार प्रशिक्षण सत्र 2024-25 में चार चरणों की काउन्सलिंग के पश्चात् पैरोमेडिकल पाठ्यक्रम के अन्तर्गत रिक्त रही सीटों (DOTT-01) पर RUHS-CMS में दिनांक 27.01.2025 को रिक्त रही सीट की योग्यता सूची की प्रक्रिया सम्पादित की जावेगी। योग्य अभ्यर्थी दिनांक 25.01.2025 तक दोपहर 04:00 PM बजे तक आवेदन करने हेतु महाविद्यालय वेबसाइट www.ruhscms.org पर दिए गए आवेदन पत्र को भर मय उल्लेखित दस्तावेजों की स्वप्रमाणित छाया प्रति कार्यालय में जमा कराना सुनिश्चित करें। समस्त अग्रिम आवश्यक निर्देशों की जानकारी हेतु अभ्यर्थी महाविद्यालय की वेबसाइट www.ruhscms.org का निरन्तर अवलोकन करते रहें।
प्रधानाचार्य एवं नियंत्रक
राज.संवाद/सी/24/10662 राज.स्वा.वि.वि. आयुर्विज्ञान महाविद्यालय, जयपुर

Office of The Block Development Officer Panchayat Samiti Sayla (Jalore)
No.-614 Date-13/01/2025
Notice of Inviting Bid
Bid for Work tenders of various work as below are invited from interested bidders under various Gram Panchayats of Panchayat samiti sayla. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://proc.rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in) of the state; and notice board of this office.

Name of Gram Panchayat	approximate value of the procurement	UBIN
Revtda	10.00 Lakh	ZJR2425WSOB01083
	10.00 Lakh	ZJR2425WSOB01084
	10.00 Lakh	ZJR2425WSOB01085
	10.00 Lakh	ZJR2425WSOB01086
	10.00 Lakh	ZJR2425WSOB01087
	10.00 Lakh	ZJR2425WSOB01088
Jalampura	05.00 Lakh	ZJR2425WSOB01080
	05.00 Lakh	ZJR2425WSOB01081
Thalwad	02.00 Lakh	ZJR2425WSOB01082
Walera	13.00 Lakh	ZJR2425WSOB01078
Sangana	13.00 Lakh	ZJR2425WSOB01079

DIPR/C/709/2025
Block Development Officer
Panchayat Samiti Sayla (Jalore)

लाल किला प्रांगण में राजस्थान की झांकी ''सोणो राजस्थान'' बनेगी आकर्षण का केंद्र

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली में इस वर्ष गणतंत दिवस की मुख्य परेड में कर्तव्य पथ से निकलने वाली चुनिंदा झांकियों और दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किला प्रांगण में 26 से 31 जनवरी तक आयोजित होने वाले भारत पर्व-2025 में भाग लेने वाली झांकियों की तैयारियों का बुधवार को नई दिल्ली के दिल्ली कैंट परेड ग्राउंड दिल्ली केंट स्थित गणतंत्र दिवस परेड राष्ट्रीय रंगशाला शिविर में प्रेस प्रिव्यू हुआ।

इस वर्ष गणतंत्र दिवस परेड में विभिन्न राज्यों सहित केन्द्रीय मंत्रालयों की 31 झांकियां शामिल होंगी, जबकि लाल किला प्रांगण में 26 से 31 जनवरी तक आयोजित होने वाले भारत पर्व-2025 में मुख्य परेड में शामिल झाँकियों सहित विभिन्न राज्यों की 43 झांकियां भाग लेंगी ।हालांकि इस बार राजस्थान की झाँकी गणतंत दिवस की परेड में कर्तव्य पथ से निकलने वाली चुनिंदा झांकियों में तो शामिल नहीं होंगी,लेकिन दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किला प्रांगण में आयोजित होने वाले भारत पर्व-2025 में राजस्थान की झांकी सोणो राजस्थान भी मुख्य परेड में निकलने वाली झांकियों के साथ ही शामिल होंगी और जन आकर्षण का केंद्र बनेगी। इस झाँकी में विरासत ओर विकास का सुन्दर मिश्रण किया गया हैं। यह नयनाभिमानी यह झांकी विकसित भारत की संकल्पना लिए राजस्थान के समृद्ध इतिहास,संस्कृति और स्थापत्य परंपरा के साथ ही राज्य के नवीन निर्माण की एक सुंदर झांकी है। झांकी के नोडल अधिकारी राजस्थान ललित कला अकादमी के डॉ.रजनीश हर्ष ने प्रेस प्रिव्यू में पत्रकारों को बताया कि यह सुन्दर झांकी राजस्थान की उत्सवधर्मी संस्कृति, स्थापत्य परंपरा और हस्तशिल्प का सुंदर मिश्रण हैं।

इस बार भी झाँकी का डिजाइन सिद्धस्त कलाकार हरशिव शर्मा द्वारा सुंदर तरीके से किया गया है। इस अद्भुत झांकी के अठाभाग में राजस्थान के पारंपरिक पर्व तीज की सुप्रसिद्ध सवारी के मनोहारी दृश्य को शामिल किया गया है, जबकि पिछले भाग में शेखावाटी की प्राचीन और दुर्लभ हवेलियों की समृद्ध विरासत को दर्शाया गया है। झाँकी के नीचे के पैनल में इन हवेलियों में बने हुए पुराने भित्ति चित्र ओर विभिन्न प्रकार के म्यूरल की डिजाइन का दिग्दर्शन किया गया हैं। साथ ही झाँकी में राजस्थान सरकार द्वारा जल संरक्षण और सौर ऊर्जा के क्षेत्र में किए गए विकास कार्यों की झलक को भी शामिल किया गया हैं। डॉ.हर्ष ने बताया कि राज्य के कला और संस्कृति विभाग के शासन सचिव रवि जैन, उप शासन सचिव बृज मोहन नोगिया, जयपुर की संभागीय आयुक्त एवं राजस्थान ललित कला अकादमी की प्रशासक रश्मि गुप्ता के मार्गदर्शन में बनाई गई हैं। राजस्थान का गौरव कही जाने वाली हवेलियों को हाल ही में राजस्थान के पर्यटन विभाग ने विकसित कर म्यूजियम में बदलने का सराहनीय प्रयास किया है,ताकि देशी विदेशी पर्यटक इनका दीदार कर सकें।

इस सांस्कृतिक झांकी में विकसित भारत की संकल्पना के तहत राजस्थान की उत्सवधर्मी संस्कृति में समाए महिलाओं के सुप्रसिद्ध त्यौहार तीज ओर खेतीबाडी ओर उद्योगों में जल संरक्षण, सौर ऊर्जा के विकास का सुंदर ढंग से प्रदर्शन किया गया है। झांकी का निर्माण कार्य इंवेंटिवो क्रिएशन प्राइवेट लिमिटेड फैब्रिकेटर द्वारा किया गया है। झाँकी को नेशनल कैनवास पर उतारने के लिए उनके साथ कलाकार हरशिव शर्मा, विनय शर्मा समुद्र सिंह और प्रीति सोलंकी अकादमी की पूरी टीम ने फैब्रिकेटर के साथ मिलकर रात दिन काम किया है। उल्लेखनीय है कि भारत पर्व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर वर्ष 2014 से दिल्ली में अनवरत मनाया जा रहा हैं।इस पर्व का उद्देश्य विविधताओं से भरे भारत के सांस्कृतिक वैभव का प्रदर्शन करना और कलाकारों का उत्साह वर्धन करना हैं। भारत पर्व में इस बार राजस्थान की झाँकी भी अन्य झाँकियों के साथ दिल्लीवासियों और देश विदेश के दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करेगी।

लाल किला प्रांगण में निकलने वाली झांकी का दृश्य।

- नई दिल्ली की गणतंत्र दिवस परेड राष्ट्रीय रंगशाला में हुआ प्रेस प्रिव्यू

जिला समाप्त करने के विरोध में 14वें दिन भी जारी रहा क्रमिक अनशन

धरने पर कहार समाज शाहपुरा के सदस्य बैठे

शाहपुरा। जिला बचाओ संघर्ष के द्वारा उपखंड कार्यालय शाहपुरा के बाहर 14 वें दिन कहार समाज शाहपुरा के सदस्यों ने क्रमिक अनशन धरना दिया । संघर्ष समिति के महासचिव व अभिभाषक संस्था के सहसचिव कमलेश मुण्डेतिया ने बताया कि कहार समाज के देवीलाल पूर्व पार्षद राजू कर रमेश चंद्र कर किशन कर प्रेमचंद कर नवयुग मंडल के अध्यक्ष राजू कहर प्रहलाद कर शाहिद सैकडो लोग क्रमिक अनशन धरने पर बैठे जिन्हें संयोजक रामप्रसाद जाट ने माला पहनकर स्वागत किया।

कहार समाज ने विशाल जन आक्रोश रैली निकाली : जिला बचाओ संघर्ष समिति शाहपुरा के आ ान पर कहार समाज के लोगों ने श्री राम मंदिर उदयभान गेट से एकत्र होकर कलीजरी गेट चौराहा से बालाजी की छतरी सदर बाजार होते हुए त्रिमूर्ति चौराहे पर प्रदर्शन कर नारेबाजी करते हुए उपखंड कार्यालय स्थित धरना स्थल पर पहुंचे और तहसीलदार को राज्यपाल के नाम शाहपुर जिले को समाप्त करने विरोध में और वापस शाहपुरा को जिला बनाने की मांग ज्ञापन दिया । इस मौके पर

उपखंड कार्यालय शाहपुरा के बाहर कहार समाज शाहपुरा के सदस्यों ने क्रमिक अनशन किया।

अभिभाषक संस्था के उपाध्यक्ष गजेंद्र प्रताप सिंह राणावत सचिव वीरेंद्र पथरिया सह सचिव कमलेश मुंडेतिया कोषाध्यक्ष तेज प्रकाश पाठक पुस्तकालय अध्यक्ष दीपक मीणा वरिष्ठ अधिवक्ता गोविंद सिंह हाडा त्रिलोक चंद्र नौलखा कल्याणमल धाकड दिनेश चंद्र व्यास अनिल शर्मा रामप्रसाद जाट नमन ओझा अंकित शर्मा लालाराम गुर्जर राजेश वर्मा शरीफ मोहम्मद आशीष पालीवाल विवेक दाधीच किशन खटीक आशीष भारद्वाज सोहेल खान सहित संघर्ष समिति के रामेश्वर सोलंकी हाजी उस्मान छिपा राजेंद्र बोहरा सुनील मिश्रा अशोक भारद्वाज भगवान सिंह यादव उदय लाल बेरवा अरुण राव सहित कई सदस्य मौजूद रहे। धरने पर शाहपुरा जिला समाप्त होने के नुकसान और शाहपुरा जिला बने रहने के फायदे के बारे में बात कर लोगों को जागरूक किया। संघर्ष समिति संयोजक रामप्रसाद जाट महासचिव कमलेश मुंडोतिया कर समाज के पूर्व अध्यक्ष देवीलाल कहार राजू कहार रमेश प्रेमचन्द अधिवक्ता दिनेश चंद्र व्यास गजेंद्र प्रताप सिंह राणावत अनिल शर्मा नमन ओझा सहित समिति के सदस्यों ने संबोधित किया।

मानव श्रृंखला एवं 4 किलोमीटर पैदल मार्च कर किया विरोध प्रदर्शन : शाहपुरा जिला बचाओ आंदोलन में कर समाज भी पीछे नहीं रहा कहार समाज ने चार किलोमीटर लंबा पैदल मार्च उदयभान गेट से बालाजी की छतरी होकर उपखंड कार्यालय तक निकाला और उपखंड कार्यालय के बाहर एक किलोमीटर लंबी मानव श्रृंखला बनाकर प्रदर्शन करते हुए नारेबाजी कर शाहपुरा को पुणे जिले का दर्जा देने की मांग की।

घर से बुलाकर दोस्त को पीटा, इंस्टाग्राम पर डाली रील

शराब के लिए रुपए भी मांगे, वीडियो देख पिता ने दर्ज करवाया मामला

पाली, (नि.सं.)। शराब पीने के लिए दोस्तों ने कोचिंग छात्र से पैसे मांगे, नहीं देने पर लात-घूसों से बुरी तरह पीटा। आरोपियों ने घटना का वीडियो भी बनाया। वारदात के बाद इंस्टाग्रम पर अपने फॉलोअर्स बढ़ाने के लिए वीडियो की रील बनाकर अपलोड कर दी। घटना का वीडियो घायल छात्र के पिता ने देखा, जिसके बाद पुलिस में मामला दर्ज करवाया गया। मामला पाली के औद्योगिक नगर थाना क्षेत्र का है, जहां 16 जनवरी को आरोपियों ने वारदात की।

औद्योगिक थाने के जसवंत सिंह राजपुरोहित ने बताया कि थाना क्षेत्र के नगर भालेलाव रोड रहने वाले पिंटू पुत्र राजूराम ने रिपोर्ट दी। बताया कि वह करीब 6 महीने से जयपुर में लोको पायलट बनने की कोचिंग कर रहा है। 14 जनवरी को वह जयपुर से पाली अपने घर आया था। 16 जनवरी की रात करीब साढ़े 12 बजे गुरु नगर निवासी उसके परिचित आर्यन ने उसे कॉल किया। जरूरी काम होने की बात कहते हुए गली के बाहर बुलाया। जहां उसके साथ भालेलाव रोड निवासी रितेश और राहुल भी थे।

रिपोर्ट में बताया कि तीनों युवक नशे में थे और शराब पीने की बात कहते हुए 500 रुपए मांगे। देने से मना किया तो बेरहमी से मारपीट की। सड़क पर पलट कर लातों से मारा। चेहरे पर लात-घूंसों से बुरी तरह पीटा, जिससे उसे अंदरूनी चोटें भी आई। मारपीट के दौरान आरोपियों ने उसके पायजामे की जेब में रखे 500 रुपए भी ले लिए। रिपोर्ट में बताया कि आरोपी रितेश और राहुल ने उसे जाते समय किसी को कुछ भी बताने पर जान से मारने की धमकी दी। साथ ही जातिसूचक शब्दों से अपमानित किया। इसलिए डर के मारे उसने घर पर आकर किसी को भी मारपीट की बात नहीं बताई। इसके बाद 17 जनवरी को वह कोचिंग के लिए वापस जयपुर चला गया।

रिपोर्ट में बताया कि आर्यन, रितेश ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर उससे की गई मारपीट का वीडियो अपलोड कर दिया। यह वीडियो उसके एक दोस्त ने उसके पिता को दिखाया, तो उन्होंने कॉल कर जयपुर से उसे पाली बुलाया। पूरे मामले की जानकारी ली। इसके बाद औद्योगिक नगर थाने में 20 जनवरी को मामला दर्ज करवाया गया।

स्पा सेंटर पर दबिश, 12 युवतियां व 5 युवक मिले

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर में स्पा सेंटर की आड़ में कई जगह पर अनैतिक गतिविधियां भी की जा रही है। पूर्व में भी इसको लेकर कार्यवाही की गई है। इसके बावजूद इस तरह की गतिविधियां थम नहीं रही है। इसी को लेकर जोधपुर के सरदारपुरा थाना पुलिस की ओर से वन मोर स्पा पर कार्रवाई की गई। यहां पर पुलिस ने स्पा सेंटर पर दबिश दी। जहां 12 युवतियां और पांच युवक मिले इन सभी को धारा 170/ 126 में गिरफ्तार किया गया। इनमें से गिरफ्तार नौ युवतियां थाईलैंड की है।

सरदारपुरा थाने के थाना प्रभारी विश्राम मीणा ने बताया कि उच्च अधिकारियों के निर्देशन में एसीपी छवी शर्मा के नेतृत्व में टीम ने नौवीं रोड पर संचालित अवैध स्पा सेंटर वन मोर पर अवैध गतिविधियों की सूचना पर दबिश दी। यहां पर विदेश की 9 युवतियां मिली जो थाईलैंड की रहने वाली थी। इन युवतियों के सी फॉर्म भी नहीं भरवाए गए थे। इसके चलते सीआईडी जॉन जोधपुर को सूचना दी गई। मामला विदेशी नागरिकों से संबंधित होने के चलते विदेशी अधिनियम 1946 का उल्लंघन करने को लेकर भी मामला दर्ज किया गया है। इसके अलावा तीन भारतीय युवतियों सहित कुल 17 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है।

गिरफ्तार थाईलैंड की युवतियां मिस आर्फे, शशिकरण सुखजीत, यानिशा वांगमत्थाई, मीना थान्यकरणपुष, सुकन्या मावो, सुजीता फेटपासोट, सौंपोगर, बटसरफॉन आरगी, मातिगा बिना सी फॉर्म के रह रही थी। इस मामले में तीन अन्य युवतियां कपिल पुत्री पदम बहादुर निवासी यूं ब्लॉक शकूरपुर पूर्वी दिल्ली, रिया पुत्री प्रदीप कुमार पंजाबी निवासी रोहिणी सेक्टर 6 सेक्टर 5 नॉर्थ वेस्ट दिल्ली और अनु शर्मा पुत्री पदम शर्मा निवासी प्लॉट नंबर 3 गली नंबर 12 महिपालपुर साउथ वेस्ट दिल्ली को गिरफ्तार किया गया। उसके अलावा मौके से अतीक रहमान, मोहम्मद जूनाइल, अनिल कुमार, शंकर सिंघानिया और केशव अठावाल को भी गिरफ्तार किया गया।

पुलिस ने इसको लेकर अनिल कुमार पुत्र पीताम्बर माहेश्वरी निवासी श्याम नगर पाल रोड के खिलाफ बिना रजिस्ट्रेशन व सी फॉर्म तथा विदेशी पंजीयन अधिकारी जोधपुर शहर को सूचित किए बिना विदेशी नागरिकों को अपने गेस्ट हाउस में अवैध रूप से ठहराने को लेकर मामला दर्ज किया गया है। बता दे कि इससे पूर्व भी सरदारपुरा में स्पा सेंटर से पुलिस ने दो थाईलैंड की युवतियों को गिरफ्तार किया था। इसके बावजूद थाईलैंड की युवतियों को अवैध तरीके से जोधपुर में स्पा सेंटर में रुकवाया जाना नहीं रुक रहा है।

महाकुम्भ स्पेशल ट्रेन का संचालन

कोटा, (निसं)। रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा हेतु महाकुंभ मेला के लिए भावनगर टर्मिनस-बनारस-भावनगर टर्मिनस मेला स्पेशल रेलसेवा का संचालन किया जा रहा है। गाड़ी संख्या 09555 भावनगर टर्मिनस-बनारस महाकुम्भ मेला स्पेशल ट्रेन दिनांक 22.01.25, 16.02.25 व 20.02.25 को (03 ट्रिप) भावनगर टर्मिनस से 05.00 बजे रवाना होकर अगले दिन 14.45 बजे बनारस पहुँचेगी। इसी प्रकार गाडी संख्या 09556 बनारस-भावनगर टर्मिनस मेला स्पेशल ट्रेन दिनांक 23.01.25, 17.02.25 व 21.02.25 को (03 ट्रिप) बनारस से 19.30 बजे रवाना होकर तीसरे दिन 05.00 बजे भावनगर टर्मिनस पहुँचेगी।

ठहराव स्टेशन:- यह स्पेशल ट्रेन दोनों दिशाओं में सुरेन्द्रनगर, विरमगाम, महेसाना, पालनपुर, आबूरोड, पिंडवाडा, फालना, रानी, मारवाड जं., ब्यावर, अजमेर, किशनगढ़ , जयपुर, बांदीकुई, भरतपुर, आगराफोर्ट, टूण्डला, इटावा, गोविन्दपुरी, फतेहपुर, प्रयागराज व ज्ञानपुर रोड स्टेशनों पर रूकेगी। इस संबंध में सर्व-संबधित स्टेशनों और कर्मचारियों को निर्देशित किया गया है। यात्रियों से अनुरोध है कि ऊक्त ट्रेन की उचित स्थिति की जानकारी स्टेशन, रेल मदद 139 एवं ऑनलाइन प्राप्त कर यात्रा करें।

दुष्कर्म के दो आरोपियों को 20 साल की सजा

कोटा, (निसं)। कोटा ग्रामीण के एक थाने मे नाबालिग से दुष्कर्म के मामले मे सुनवाई करते हुए पोक्सो क्रम-5 न्यायालय ने आरोपी व सह-आरोपी को दोषी मानते हुए 20 साल की सजा सुनाई है। पोक्सो क्रम-5 न्यायालय के न्यायाधीश ने मामले में सुनवाई करते हुए आरोपी व सह-आरोपी को 20-20 साल की सजा के साथ आरोपी को 40 हजार व सह-आरोपी को 30 हजार के अर्थदंड से दंडित किया। विशिष्ट लोक अभियोजक सुरेश वर्मा ने बताया कि कोटा ग्रामीण के एक थाने में पीड़िता के पिता ने 7 नवबंर 2019 को शिकायत दी थी। शिकायत में कहा कि 15 वर्षीय उसकी बेटी स्कूल पढ़ ने गई जो स्कूल से वापस नही लौटी। पुलिस ने पीड़िता के पिता की शिकायत पर मामला दर्ज कर अनुसंधान कर नाबालिग को दस्तयाब किया।

बदमाश ने कार में रखा आईफोन चुराया

- कार के टायर के नीचे पैर आने का झांसा देकर चालक को गुमराह किया
- दो अज्ञात बदमाशों के खिलाफ मोबाइल चोरी का मामला दर्ज

जयपुर। बजाज नगर थाना इलाके में एक शातिर बदमाश ने कार का कांच खटखटा कर उसमें रखा आईफोन चुरा लिया और मौके से फरार हो गया। वारदात की जानकारी मिलने के बाद पीडित अज्ञात दो बदमाशों के खिलाफ चोरी का आरोप लगाते हुए मामला दर्ज कराया। पुलिस ने मामला दर्ज कर सीसीटीवी फुटेज के आधार आरोपियों की तलाश शुरु कर दी है।

जांच अधिकारी हेड कांस्टेबल रामवीर के अनुसार नाबार्ड कर्मचारी सचिन बाडेटिया ने मामला दर्ज कराया है कि वह 17 जनवरी को सुबह अपने दफ्तर जा रहा था। इसी दौरान टोंक फाटक पुलिया पर अधिक ट्रेफिक में कार धीरे-धीरे पुलिया के नीचे उतर रही थी। तभी एक बदमाश ने लैफ्ट खिडकी पर आकर कांच को जोर-जोर खटखटाना शुरु कर दिया।

पीडित ने खिडकी का कांच नीचे उतार कर कांच खटखटाने का कारण पूछा तो शातिर बदमाश ने खुद का पैर कार के टायर के नीचे आने का बहाना बनाया और कार सही से चलाने के लिए कहा। तभी पीडित ने कार रोक कर उसे गाडी में बैठने और डॉक्टर के पास चलने को कहा। इसी दौरान राइड साईड वाली खिडकी पर एक युवक आया और कांच पर जोर-जोर से मारना शुरु कर दिया। उसने कार सही से चलाने की नसीहत दी।

कुछ देर कहा सुनी होने के बाद दोनो बदमाश मौके से चले गए। पीडित जैसे ही अपने दफ्तार पहुंचा और लैफ्ट साइड सीट पर रखा अपना आईफोन संभाला तो उसे मोबाइल फोन नहीं मिला। जिसके बाद उसने थाने पहुंच अज्ञात दोनो बदमाशों के खिलाफ मोबाइल चोरी का आरोप लगाते हुए मामला दर्ज कराया। पुलिस ने आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज के आधार पर दोनों बदमाशों की तलाश शुरु कर दी है।

शिक्षक की जमानत खारिज

बौंली-बामनवास। सवाई माधोपुर परिवार एवं पोक्सो न्यायालय की विशेष न्यायाधीश सुश्री मीनाक्षी जैन ने सरकारी स्कूल में पढ़ने वाली 16 वर्षीय नाबालिग पीड़िता का अपहरण कर दुष्कर्म करने एवं आत्महत्या को विवश करने वाले आरोपी शिक्षक रामरतन मीणा निवासी नरौली चौड पुलिस थाना बाटोदा का मामले की गंभीरता को देखते हुए जमानत प्रार्थना पत्र खारिज कर दिया। पीड़िता व राज्य सरकार की ओर से पैरवी करते हुए विशिष्ठ लोक अभियोजक अनिल कुमार जैन ने न्यायालय को अवगत कराया की जिले के एक थाने में पीड़ित पिता ने मामला दर्ज कर बताया था कि मेरी 16 वर्षीय बच्ची सरकारी स्कूल में पढ़ने जाती थी 9 अगस्त 2023 को मेरी पत्नी भरतरी जी के दर्शन करने गई हुई थी घर पर मेरी बच्ची व मेरे पिताजी ही थे मेरे पिताजी ने मुझे बताया कि बच्ची घर से कहीं चली गई है।

जवाहर कला केन्द्र में मधुरम महोत्सव शुरू

- जितेंद्र राणा ने दी उपशास्त्रीय गायन की प्रस्तुति

जयपुर। जवाहर कला केन्द्र के रंगायन सभागार में बुधवार को गायन और वादन के दो दिवसीय महोत्सव मधुरम का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम के प्रथम दिन जितेंद्र राणा ने उप शास्त्रीय गायन व डॉ. राजर्षि कसौधन और रोशनी केशरी ने उप शास्त्रीय, शास्त्रीय और सुगम संगीत के सौंदर्य से सराबोर प्रस्तुति से समां बांधा। महोत्सव के दूसरे दिन गुरुवार को विभिन्न बॉलीवुड सॉन्ग्स में अपनी सारंगी की धुन का जादू दिखाने वाले मोमिन खान एकल वादन प्रस्तुति देंगे, उनके साथ प्रसिद्ध तबला वादन सत्यजीत तलवलकर संगत करेंगे।

जितेंद्र राणा ने राग खमाज को अपनी प्रस्तुति का आधार बनाया। उन्होंने विलंबित लय में निबद्ध ठुमरी सांची कहो मोसे कहां बितायी रतिया के साथ प्रस्तुति की शुरुआत की। राग शंकरा पर ऐसो ढीठ लंगर गाकर उन्होंने प्रस्तुति को आगे बढ़ाया। अंत में कबीर भजन के साथ उन्होंने माहौल को आध्यात्मिक भावनाओं से भर दिया। जितेंद्र राणा के साथ तबले पर सलामत खान, सारंगी पर साबिर खान, हार्मोनियम पर भंवर नागौरी और तानपुरे पर सौम्या व तान्या ने संगत की।

दूसरी प्रस्तुति में डॉ. राजर्षि कसौधन एवं रोशनी केशरी ने शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत की रचनाएं पेश की। डॉ. राजर्षि कसौधन ने राग यमन में जयपुर घराने की बंदिश को तीन ताल में निबद्ध कर श्रोताओं के कानों में मिठास घोली। इसके बाद बांसुरी पर धुन छेडकर ग़ज़लों का गुलदस्ता सजाया। राजर्षि कसौधन ने बांसुरी पर होंठो से छू लो तुम, मेरा गीत अमर कर दो की धुन का वादन कर शुरुआत की। ग़ज़लों का यह सुरीला सफर आगे बढ़ा चिट्ठी न कोई संदेश, तुम इतना जो मुस्कुरा रहे हो, तुमको देखा तो ये ख़याल आया सरीखी ग़ज़लों की धुनों के साथ। इसके बाद रोशनी केशरी ने बनारस घराने की ठुमरी बरसन लागी बदरिया का गायन किया। इसके बाद सुगम संगीत की प्रस्तुति में जिंदगी के सफर में गुजर जाते हैं जो मुकाम गीत पेश किया गया। इस संगीतमयी महफिल में सादगी तो हमारी जरा देखिए कव्वाली भी श्रोताओं को सुनने को मिली। आखिर में बनारसी ठुमरी और बांसुरी की धुनों के साथ इस सुरीली शाम का समापन हुआ। तबले पर ऋषि शर्मा और की-बोर्ड पर पीयूष कुमार ने संगत की।

जैनाचार्य पीयूष सागर 25 को बीकानेर पहुंचेंगे

- विहार धाम के लोकार्पण का कार्यक्रम दो दिन चलेगा

बीकानेर। डेढ़ महीने बाद एक बार फिर खरतगच्छ के आचार्य पीयूष सागर महाराज और 6 मुनिवृंदों के साथ 25 जनवरी को बीकानेर पहुंचेंगे। वे एनएच 62 उदयरामसर-नोखा रोड पर बीकानेर से 14.5 माइल स्टोन पर सेठ थानमल नेमीदेवी विहार धाम का लोकार्पण करेंगे। यह विहार धाम इस रास्ते विहार पर जाने वाले जैन समाज के मुनि और साध्वीवृंदों के विश्राम के काम आएगा। विहार धाम के लोकार्पण का कार्यक्रम दो दिन चलेगा।

इसमें जैनाचार्य सहित 7 मुनि और दो साध्वियां शामिल होंगी। जैनाचार्य के साथ जैन मुनि सम्यक रतनसागर, समवेगरतन सागर, संमार्ग रतन सागर सहित 6 मुनिजन, साध्वी विजयप्रभाश्री और प्रभंजनाश्री कार्यक्रम में शामिल होंगे। जैनाचार्य, मुनि और साध्वीवृंद 25 को सुबह यहां पहुंच जाएंगे। 25 जनवरी को सुबह साढ़े आठ बजे विहार धाम के प्रवेश द्वार का उद्घाटन होगा। इसके बाद स्नात्र पूजन होगा। सुबह सवा नौ बजे कुंभ स्थापना, दीपक स्थापना होगी। इसके बाद दोपहर को ढाई बजे के करीब 18 पूजन का कार्यक्रम होगा। शाम को 6 बजे एक शाम प्रभु के नाम होगी। इसी तरह 26 को सुबह सवा आठ बजे के करीब स्नात्र पूजन होगा। सुबह 9:18 बजे भगवान पार्श्वनाथ, गणधर गौतम स्वामी, दादा गुरुदेव की प्रभावकारी प्रतिष्ठा सेठ थानमल नेमीदेवी विहार धाम का लोकार्पण होगा। विहार धाम के लोकार्पण के बाद प्रवचन और मांगलिक होगा। इसके बाद 31 अगस्त को उदासर में पूजन का कार्यक्रम होगा।

परिसीमन 2011 की जनगणना से, एस.सी. बाहुल्य वार्डों पर नजर

- वार्ड परिसीमन की आपत्तियां 9 फरवरी तक मांगी गई हैं

बीकानेर, (कासं)। निकाय चुनाव को लेकर निकायों में परिसीमन की प्रक्रिया चल रही है। 2011 की जनगणना के आधार पर ही निगम वार्डों की जनसंख्या के मुताबिक परिसीमन करने की तैयारी है। निगम ने अपनी ओर से कोई बदलाव नहीं किया। 9 फरवरी तक आपत्तियां मांगी हैं। एक मार्च तक वार्ड गठन मय नक्शे एवं प्राप्त दावों तथा आपत्तियों पर टिप्पणी के सहित राज्य सरकार को प्रेषित किए जायेंगे। 2 से 21 मार्च तक राज्य सरकार द्वारा आपत्तियों का निस्तारण करते हुए प्रस्तावों का अनुमोदन किया जायेगा। उन आपत्तियों के आधार पर निगम कोई बदलाव कर सकता है। इस बीच शहर की जनगणना 625256 मानकर ही परिसीमन किया जायेगा।

शहर की कुल जनसंख्या 625256 में अनुसूचित जाति के 72652 हैं। अनुसूचित जनजाति की 3094 जनसंख्या है। शहर में औसतन वार्ड की जनसंख्या 7816 है मगर निगम के दस्तावेजों में सबसे बड़ा वार्ड 71 है जिसकी आबादी 9319 और दूसरे नंबर पर 56 जिसकी आबादी 9286 है।

आबादी के लिहाज से सबसे छोटा वार्ड 15 है जिसकी आबादी 6292 है। यानी सबसे बड़े वार्ड से सबसे छोटे वार्ड के बीच 3067 संख्या का अंतर है। निगम के दस्तावेजों की जब गहनता से जांच की अनुसूचित जाति की संख्या की स्थिति भी स्पष्ट हुई। वार्ड 76 ऐसा है जिसमें एससी की एक भी आबादी नहीं दर्शाई गई। एक से 100 की आबादी वाले 11 वार्ड हैं। इसमें से ज्यादातर वार्ड परकोटा क्षेत्र के हैं। कई वार्ड ऐसे हैं जिसमें 17, 9, 47 और 97 जितनी ही एससी की आबादी है। 100 से 1000 आबादी वाले वार्डों की संख्या 43 है। यानी वार्डों की आबादी तो 8000 के करीब है लेकिन एससी की आबादी उसमें से 1000 के नीचे है।

1000 से 2000 आबादी के बीच के वार्डों की संख्या 15 है। 2000 से 3000 आबादी वाले वार्डों की संख्या 5 है। 4000 से 5000 आबादी वाले वार्ड दो और 5000 से ऊपर वाला एक वार्ड है जहां एससी की आबादी है। परिसीमन को लेकन निगम प्रशासन ज्यादा छेड़छाड़ अपनी ओर से करने के मूड में नहीं है लेकिन अगर आपत्तियां ज्यादा आई तो उसमें बदलाव संभव है। आपत्तियां 9 फरवरी तक मांगी गई हैं। उसके बाद ही उसमें कुछ बदलाव संभव है। शहर में 50 नंबर वार्ड सबसे बड़ा है।

सलूम्बर शहर के बाजार में दिखा पैंथर, मकानों पर छत पर कूदता दिखा

सलूंबर के नागदा बाजार में दिखा तेंदुआ, ड्रोन से हो रही तलाश

उदयपुर, (कासं)। बुधवार प्रात: सलूम्बर के नागदा बाजार में व्यापारियों ने लेपर्ड को देखा तो उनके होश उड़ गए। इसके बाद व्यापारियों ने शोर मचाया तो तेंदुआ तेजी से भागकर एक मकान की छत पर चढ़ गया। उसके बाद तेंदुए एक मकान से दूसरे मकान की छत पर घुमता रहा। उदयपुर और आसपास के आदिवासी अंचल के बाद सलूम्बर शहर में तेंदुए के पहुंचने से पूरा शहर सहम उठा। वन विभाग के एसीएफ महेन्द्र सिंह चुंडावत ने बताया कि पैंथर साइटिंग नहीं होने से रेस्क्यू नहीं हो पाया है। टीम मौके पर तैनात है।

जानकारी के अनुसार सलूम्बर शहर के नागदा बाजार में बुधवार को आबादी क्षेत्र में तेंदुए को सुबह 8 बजे सबसे पहले एक बालिका ने देखा और उसके बाद उसने शोर मचाया तो मौके पर कई व्यापारी और स्थानीय लोग

- प्रशासन ने लोगों से घरों में रहने की अपील, दुकानें शाम 5 बजे बंद
- बुधवार को आबादी क्षेत्र में तेंदुए को सुबह 8 बजे सबसे पहले एक बालिका ने देखा

जमा हो गए। लोगों के एक साथ चिल्लाने से तेंदुआ एक मकान की छत पर चढ़ कर गया। आबादी क्षेत्र में घबराए लोगों ने आनन.फानन में वन विभाग को सूचना दी। इस दौरान लोगों ने तेंदुए के मूवमेंट का वीडियो बना लिया। तेंदुआ छत की मुंडेर पर खड़ा होकर नीचे झांकता नजर आ रहा है। देखते ही देखते क्षेत्र में काफी भीड़ इकट्ठी हो गयी। हालांकि तब तक तेंदुआ ओझल हो चुका था। वहीं पूरे इलाके में दहशत का माहौल है।

वन विभाग के अधिकारियों ने संभावना जताई है कि भीड़ इकट्ठी होने के कारण पैंथर कहीं किसी छत या खाली घर में दुबका हुआ है। भीड़ कम होने पर वह बाहर निकल सकता है। इस पर जिला प्रशासन ने सभी दुकानें शाम 5 बजे से बंद करने और लोगों को घरों में रहने के निर्देश दिए हैं ताकि भीड़ कम होने से पैंथर बाहर निकले, ताकि उसका रेस्क्यू किया जा सके या वह खुद जंगल की ओर लौट जाए। टीम कस्बे में घरों की छतों पर ड्रोन कैमरा उड़ा कर भी पैंथर की तलाश कर रही है।

तेंदुए के बस्ती क्षेत्र में घुस आने से जन जीवन प्रभावित हुआ है। भय के कारण लोग घरो में दुबके हुए है । शाम 5 बजे प्रशासन ने सारे बाजार बंद करवा दिए और बेरीकेडिंग करवाकर आवाजाही को रोकने की कवायद की है वही ड्रोन के जरिये छिपे हुए तेंदुए की तलाश की जा रही है। नागदा बाजार और उसके आस-पास के इलाको में सन्नाटा पसरा हुआ है ।

बस्ती क्षेत्र में तेंदुआ आने की सूचना पर वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची है और उसको रेस्क्यू करने का प्रयास शुरू जारी है। सलूम्बर के साथ.साथ उदयपुर से वन विभाग की टीमें सलूम्बर पहुंची। सलूंबर के क्षेत्रीय वन अधिकारी दिलीप सिंह चौहान ने बताया कि सूचना मिलने पर स्थानीय वनकर्मिचों को मौके पर भेजा और उदयपुर से भी टीम को बुलाया गया। तेंदुए को रेस्क्यू के प्रयास शुरू किए गए।

महासती डॉ. संयम लता ने आसींद से किया मंगल विहार

आसींद, (निसं)। दक्षिण चंद्रिका महासती डॉ.संयम लता ने बुधवार को प्रात: आसींद से पुरानी पड़ासोली मंगल विहार किया। महासती गुरुवार को प्रात: 9 बजे प्रकाश कोठारी के निवास पर अनुष्ठान करवाएंगे। शुक्रवार को पुरानी पड़ासोली से जगपुरा होते हुए शंभूगढ़ विहार करेंगे।

- आज पुरानी पड़ासोली से जगपुरा होते हुए शंभूगढ़ विहार करेंगे

महासती ने कहा कि आसींद अल्पप्रवास के दौरान भक्तों का अपार स्नेह मिला। आसींद संघ के सभी सदस्यों की धर्म के प्रति अच्छी रुचि है जिसे और बढ़ावे। आसींद में जो पिछले चार वर्षों से हर रविवार को नियमित नवकार महामंत्र का जो जाप चल रहा है उसमें संघ के सभी परिवार शामिल होकर श्रद्धा भाव के साथ जाप करे जिससे पूरे आसींद में समृद्धि बनी रहेगी एवं कर्मों की निर्जरा होगी। साध्वी मंडल के 28 जनवरी को विजयनगर पहुंचने की संभावना है।

महासती डॉ.संयम लता ने बुधवार को प्रात: आसींद से पुरानी पड़ासोली मंगल विहार किया।

आरटीओ टीम पर केस दर्ज नहीं करने का आरोप

नोखा, (कासं)। भारतमाला रोड पर देसलसर फांटे के पास आरटीओ टीम की ओर से ट्रकों से जबरन वसूली, रूपए नहीं देने पर मारपीट करने और थाने में रिपोर्ट देने के बावजूद मुकदमा दर्ज नहीं करने का आरोप लगाया गया। नोखा विधायक सुशीला डूडी ने इस संबंध में एसपी-आईजी से मिलकर नाराजगी जताई।

19 जनवरी को भारतमाला रोड पर देसलसर फांटे के पास आरटीओ टीम और ट्रक चालकों में बोलचाल और मारपीट हो गई थी। इस मामले को लेकर नोखा विधायक सुशीला डूडी, जिला प्रमुख मोडाराम मेघवाल और देहात कांग्रेस अध्यक्ष बिशनाराम सियाग के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल एसपी-आईजी से मिला। पुलिस अधिकारियों के समक्ष आरोप लगाया कि आरटीओ की टीम जबरन वसूली कर रही थी। एक ट्रक गुजरात से कोयला भरकर पंजाब जा रहा था। उसे रोककर वसूली की जाने लगी और इसका विरोध किया तो मारपीट की। मुकदमा दर्ज करवाकर ट्रक में सवार बासी निवासी सहीराम को गिरफ्तार करवा दिया गया। जबकि उसके साथ मारपीट करने वाले आरटीओ के एसआई सुरेश कुमार व अन्य के विरूद्व नोखा पुलिस थाने में रिपोर्ट दी गई तो मुकदमा दर्ज नहीं किया। नोखा विधायक डूडी ने एसपी-आईजी से घटना पर नाराजगी जताई और मुकदमा दर्ज कर जांच करने के लिए कहा। प्रतिनिधिमंडल में कांग्रेस संगठन महासचिव प्रहलाद सिंह मार्शल, जितेन्द्र कस्वां, राजपाल कुलहरि, श्रवण जाखड़, जेठाराम, दानाराम, गिरधारी कूंकणा शामिल थे।

कलेक्टर ने स्कूटी चलाकर दिया बेटियों को पढ़ाने का संदेश

बीकानेर, (कासं)। 'बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ' योजना के दस वर्ष पूर्ण होने उपलक्ष में बुधवार को जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि की अगुवाई में बाइक रैली निकाली गई।

पुलिस अधीक्षक कावेन्द्र सिंह सागर ने जूनागढ़ के आगे से बाइक रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर जिला कलेक्टर ने कहा कि बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ योजना के तहत बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने तथा

- **बाइक रैली से बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ के साथ यातायात नियमों के प्रति जागरूकता तथा सड़क सुरक्षा के संदेश भी दिया**

महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य से इस रैली का आयोजन किया गया है। योजना के तहत राजस्थान मरू उड़ान कार्यक्रम भी संचालित किया जा रहा है। जिले में 8 मार्च तक विभिन्न विभागों के सहयोग से बालिका शिक्षा के प्रति आमजन में जागरूकता के लिए विभिन्न कार्यक्रम और गतिविधियां आयोजित की जायेगी।

जिला कलेक्टर ने कहा कि बालिकाओं को शिक्षा प्राप्त करने का समान अवसर मिलने से ही उनके उज्जवल भविष्य और विकसित समाज की संकल्पना को साकार किया जा सकता है। इस रैली के माध्यम से बालिका शिक्षा के प्रति सकारात्मक वातावरण निर्माण और संदेश देने का प्रयास किया गया है।

बीकानेर कलेक्टर नमृता वृष्णि (बीच में) महिला एवं अधिकारिता विभाग की उपनिदेशक डॉ अनुराधा सक्सेना को अपनी स्कूटी पर पीछे बिठा कर बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ रैली में शमिल हुई।

पुलिस अधीक्षक कावेन्द्र सिंह सागर ने कहा कि बाइक रैली के माध्यम से बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ के साथ-साथ यातायात नियमों के प्रति जागरूकता तथा सड़क सुरक्षा के संदेश भी दिया गया है। रैली में पुलिस परिवहन विभाग की भागीदारी भी सुनिश्चित की गई है। बाइक रैली के दौरान जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि ने स्वयं स्कूटी चलाकर बालिका शिक्षा का संदेश दिया। जिला कलेक्टर महिला एवं अधिकारिता विभाग की उपनिदेशक डॉ अनुराधा सक्सेना को अपनी स्कूटी के पीछे बिठा कर रैली में शमिल हुई। डॉ सक्सेना ने बताया कि महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा के प्रति जागरूकता, महिलाओं की शिक्षा स्वास्थ्य स्वरोजगार, आत्मरक्षा के साथ आत्म विश्वास बढ़ाने की दिशा में एक नवाचार के रूप में राज्य सरकार द्वारा राजस्थान मरू उड़ान कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम में जिला प्रशासन के साथ चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, उद्योग, पुलिस, परिवहन,कृषि, शिक्षा, आरएसएलडीसी सहित विभिन्न गैर सरकारी संगठनों महाविद्यालयों आदि का सक्रिय सहयोग लिया गया है। रैली जूनागढ़ से कलेक्ट्रेट, गांधी पार्क, सर्किट हाउस, म्यूजियम, जयपुर रोड स्थित महिला अधिकारिता कार्यालय तक निकाली गई। रैली में पुलिस विभाग की निर्भया स्क्वायड, कालिका टीम सदस्य, विधि राजकीय व निजी कॉलेज के विद्यार्थी शामिल हुए। रैली में बालिका शिक्षा का संदेश देते बैनर, परिवहन विभाग द्वारा सड़क सुरक्षा नियमों की जानकारी दी गई। इस दौरान छात्राओं को निःशुल्क हेलमेट भी वितरित किए गए। इस दौरान अतिरिक्त जिला कलेक्टर (नगर) रमेश देव, प्रादेशिक परिवहन अधिकारी अनिल पांडेय, जिला परिवहन अधिकारी भारती नैथानी, आईसीडीएस उपनिदेशक सुभाष बिश्नोई सहित महिला अधिकारिता के सतीश परिहार, विजयलक्ष्मी जोशी सहित अन्य कार्मिक मौजूद थे।

चोरी की वारदात का खुलासा

श्रीगंगानगर, (कासं)। जवाहर नगर सेक्टर 8 के बंद मकान से 73 ग्राम सोना और 15 किलो 900 ग्राम चांदी चोरी की वारदात का खुलासा किया।

जवाहर नगर पुलिस ने तीन युवकों को गिरफ्तार कर चार दिन के रिमांड पर लिया है। जांच अधिकारी हैड कांस्टेबल गुलाबसिंह ने बताया कि दो ई छोटी निवासी हरप्रीतसिंह पुत्र गुरमुखसिंह, रामलाल कॉलोनी निवासी मोनू पुत्र पंकज कुमार और एसएसबी रोड निवासी संदीप पुत्र पप्पूराम को इस वारदात के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। तीनों युवक छोटी-मोटी मजदूरी करते हैं। नशे के आदी हैं।

हेरोइन का नशा करते समय कांडा नाम के युवक को अपने साथियों के साथ चोरी की बात करते सुना था। इसके बाद इन्होंने भी चोरी की योजना बनाई। रात को पैदल ही रैकी करके ताला लगा मकान तलाश किया और फिर रॉड लेकर चोरी करने को घुस गए। आरोपियों ने बाहर की लोहे की जाली को तोड़ा। फिर कमरे के रोशनदान में लगे एग्जास्ट फैन को तोड़कर फेंक दिया। इसके बाद मकान में प्रवेश कर चोरी की वारदात की।

जांच अधिकारी हैड कांस्टेबल गुलाब सिंह ने बताया कि आरोपी हरप्रीत शादी या अन्य समारोह में फ्रूट चाट का काम करता है। संदीप ट्रैक्टर चलाता है। तीसरा आरोपी मोनू मजदूरी करता है। तीनों छजगरिया बस्ती या आसपास से नशा बेचने वालों के यहां मिलते-जुलते रहते थे। आसपास कॉलोनी के होने के कारण दोस्त हो गए थे। नशे की जरूरत पूरी करने को ताले तोड़े। चुराये गए सामान की बरामदगी के लिए पूछताछ की जा रही है। आरोपी चोरी के बाद मोटा माल हाथ लगने के बाद मानसिक संतुलन खो बैठे।

सार-समाचार

रामभक्ति काव्य परंपरा व्याख्यान

प्रो. मदन सैनी ने राजस्थानी साहित्य में रामभक्ति काव्य परंपरा व्याख्यान दिया।

बीकानेर, (कासं)। राजकीय डूंगर महाविद्यालय बीकानेर के राजस्थानी विभाग द्वारा विस्तार व्याख्यान माला कार्यक्रम के तहत एक विशेष व्याख्यान का आयोजन रखा गया। व्याख्यान का विषय 'राजस्थानी साहित्य में रामभक्ति काव्य परंपरा' रखा गया था। विषय पर अपनी बात रखते हुए मुख्य वक्ता डॉ. मदन सैनी ने कहा कि राजस्थानी साहित्य में रामकथा लिखने की परंपरा तुलसीदास से पूर्व की है। राजस्थानी के कवि मेहोजी गोदारा ने रामचरित मानस से पूर्व ही रामायण की रचना कर दी थी, जिसमें कथात्मक अंतर मिलता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. राजेन्द्र पुरोहित ने विद्यार्थियों को भगवान राम के आदर्शों को जीवन में आत्मसात करने का आग्रह किया और कहा कि वर्तमान दौर में जीवन को संघर्ष मानकर अपने कर्तव्य से विमुख रहने वालों को राम के पदचिन्हों पर चलने की आवश्यकता है। कार्यक्रम में विभाग प्रभारी तथा संयोजक डॉ. ब्रजरतन जोशी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए विभाग की उपलब्धियां गिनाई। इस अवसर पर राजस्थानी संस्कृति की परंपरानुसार मुख्य वक्ता डॉ. मदन सैनी को साफा एवं शॉल अर्पण किया।

टीबी मरीजों को पोषण सामग्री बांटी

रोटरी क्लब बीकानेर रॉयल्स के नए प्रकल्प टीबी क्लिनिक का शुभारंभ कर टी. बी. मरीजों को पोषण सामग्री बांटी।

बीकानेर, (कासं)। रोटरी क्लब बीकानेर रॉयल्स ने प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत एक नए प्रकल्प का शुभारंभ किया। इसका कार्यक्रम बुधवार को पीबीएम अस्पताल के टीबी क्लीनिक में किया गया। कार्यक्रम का संयोजन रोटे. जगदीप सिंह ओबेराय और रोटे. डॉ. सी.एस. मोदी द्वारा किया गया। इस प्रकल्प के तहत जरूरतमंद टीबी मरीजों को पोषण के लिए खाद्य सामग्री प्रदान की गई। आरंभिक चरण में 15 मरीजों को तीन माह तक आवश्यक खाद्य सामग्री के पैकेट वितरित किए गए। यह अभियान रोटरी क्लब बीकानेर रायल्स द्वारा प्रत्येक माह नियमित रूप से संचालित किया जायेगा। प्रथम चरण के इस अभियान का वित्त पोषण रोटे. गोपाल अग्रवाल और रोटे. जगदीप सिंह ओबेराय ने किया। क्लब के इस प्रयास का उद्देश्य टीबी मरीजों को पोषण संबंधी सहायता प्रदान करना है, जिससे वे शीघ्र स्वस्थ हो सकें और प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान को गति मिल सके।

जुआ खेलते 10 जने गिरफ्तार

बीकानेर, (कासं)। कोटगेट थाना पुलिस ने बांद्राबास के एक मकान में जुआ खेल रहे दस लोगों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से 34400 रूपये नकदी जब्त की। पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि बांद्रा बास के एक मकान में जुए का अड्डा चल रहा है। पुलिस की टीम ने मौके पर छापा मारा तो जुआरी ताश के पत्तों पर दांव लगा रहे थे। पुलिस ने मकान की घेराबंदी कर बांद्रा बास निवासी परसाराम चांगरा, किशन वाल्मीकि, रानी बाजार इंडस्ट्रियल एरिया निवासी रेवन्त बन गेस्वामी, बांद्रा बास निवासी अर्जुन वाल्मीकि, चौधरी कॉलोनी निवासी बालकिशन विश्नोई, बांद्रा बास निवासी साजन वाल्मीकि, श्रीकान्त वाल्मीकि, किशोर वाल्मीकि, रानी बाजार बंगाली मंदिर क्षेत्र निवासी योगेन्द्र सिंह और बांद्रा बास निवासी सुनिल चांगरा को हिरासत में लिया। कोटगेट एसएचओ विश्वजीत सिंह के नेतृत्व में पुलिस टीम में एसआई गौरव बोहरा, कांस्टेबल सोनू शर्मा, बबलूराम, अशोक, शिवराज और डी.आर. मुकेश शामिल थे।

शहीद बेटे की प्रतिमा लगाने की गुहार

बीकानेर, (कासं)। शहीद मेजर जेम्स थॉमस की 88 वर्षीय माता मेरी कुटी थॉमस ने जिला कलेक्टर को पत्र लिखकर वीर पुत्र और बीकानेर के सर्वश्रेष्ठ योद्धा कीर्ति चक्र सम्मानित मेजर जेम्स थॉमस की प्रतिमा को पब्लिक पार्क में स्थापित करने की मांग की है। उन्होंने केन्द्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल, मंत्री सुमित गोदारा, बीकानेर के सभी विधायकों सहित जिले के प्रशासनिक अधिकारियों से इस कार्य में पूर्ण सहयोग देने की अपील की है। थॉमस ने कहा कि मेजर जेम्स थॉमस ने 19 साल पहले देश की रक्षा के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। ऐसे वीर सपूत का सम्मान करना हमारा नैतिक कर्तव्य है। उन्होंने पब्लिक पार्क जैसे प्रमुख स्थल पर प्रतिमा स्थापना कर शहीद की स्मृति को अमर करने की बात कही। बीकानेर के युवा लम्बे समय से इस विषय को लेकर सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं। शहीद मेजर जेम्स थॉमस के सम्मान में युवाओं ने एकजुट होकर प्रतिमा स्थापना की मांग को बुलंद किया है। इस अभियान में एडवोकेट रामदयाल राजपुरोहित, सहीराम गोदारा, मनीष गौड़, गजेंद्र, राजू, सीताराम सियाग, गणेशदान, रामरख सहित कई अन्य युवा सक्रिय रहे।

पीबीएम में आईसीयू में वेंटिलेटर सहित150 उपकरण खराब

बीकानेर,(कासं)। पीबीएम हॉस्पिटल में 150 से अधिक उपकरण खराब पड़े हैं। मेडिसिन आईसीयू में वेंटिलेटर और मॉनिटर दूसरे स्टोर से मंगवाने पड़ रहे हैं। सोनोग्राफी और एक्सरे मशीन तक काम नहीं कर रही है।

दरअसल राज्य सरकार ने मेडिकल कॉलेज से संबद्ध अस्पतालों में उपकरणों की मेंटिनेंस और रिपेयरिंग का काम सारिक्स कंपनी को सौंप दिया है। पहले यह काम केटीपीएल के पास था। नई कंपनी आने से खराब उपकरणों की शिकायतें बढ़ गई हैं। कारण उन्हें ठीक करने के लिए दक्ष इंजीनियरों की कमी बनी हुई है। मेडिसिन आईसीयू में वेंटिलेटर और मॉनिटर पंद्रह दिन से खराब पड़े हैं। खराब उपकरणों की जगह दूसरे लगाये गए हैं, लेकिन यह भी खराब हो गए तो मरीजों के लिए समस्या खड़ी हो जायेगी। इसी प्रकार एक एक्सरे और सोनोग्राफी मशीन भी

- **मेडिसिन आईसीयू में वेंटिलेटर और मॉनिटर पंद्रह दिन से खराब पड़े हैं**
- **एक्सरे सोनोग्राफी मशीन भी खराब पड़ी है**

खराब पड़ी है।

स्थिति ये है कि ऑपरेशन थिएटर में काम आने वाली पांच टेबल खराब हैं। इसके अलावा छोटे-बड़े 150 से अधिक उपकरणों के खराब होने की सूचना ई उपकरण पोर्टल पर अपलोड की गई है। संवेदक के इंजीनियर उन्हें देख तो रहे हैं, लेकिन ठीक एक भी मशीन नहीं हो पाई है। राहत की बात ये है कि सर्दी के मौसम में मरीजों को लोड कम है। जानकारी के अनुसार सारिक्स कंपनी ने दक्षिण भारत से 12 इंजीनियर पीबीएम हॉस्पिटल भेजे हैं, जो रोज की शिकायत देखेंगे। लेकिन कंपनी का सैटअप पूरी तरह नहीं बन पाया है। इसलिए ई उपकरण पोर्टल पर मशीनों की संख्या रोज बढ़ रही है।

आचार्य तुलसी रीजनल कैंसर रिसर्च सेंटर में लिनियर एस्सीलेटर मशीन दो दिन-तीन दिन खराब रही। इससे कैंसर के करीब 200 मरीजों के सेक नहीं लग पाए। कुछ मरीज मरीज पीबीएम अधीक्षक के पास भी पहुंचे। इस मशीन से रोज कैंसर के 100 मरीजों की रेडियोथैरेपी होती है।

यह कोबाल्ट मशीन का अपग्रेड वर्जन है। कैंसर हॉस्पिटल की कार्यवाहक निदेशक डॉ. नीति शर्मा ने बताया कि मशीन महंगी होने के कारण उसकी सीएमसी कर रखी है। उसे ठीक करने के लिए कंपनी चंढ़ीगढ़ से इंजीनियर भेजा है।

एन.सी.सी. यूनिट ने जीते 8 मैडल

बीकानेर,(कासं)। वेटरनरी महाविद्यालय की 1 राज आर एंड वी स्क्वाड्रन एनसीसी यूनिट ने वार्षिक गणतंत्र दिवस शिविर के तहत नई दिल्ली में आयोजित आर एंड वी यूनिटों की विभिन्न प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक पदक जीतकर देश में सभी एनसीसी यूनिटों में प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए इतिहास कायम किया है।

कमांडिंग आफिसर कर्नल देवेन्द्र सिंह दुहन ने बताया कि राष्ट्रीय स्तर की इस प्रतियोगिता में अंडर ऑफिसर स्वर्णिका राठौर ने दो स्वर्ण पदक एवं एक रजत, अंडर ऑफिसर अंश करनावत ने एक स्वर्ण, एक रजत एवं एक कांस्य तथा अंडर ऑफिसर मणिराज सिंघवी ने एक स्वर्ण एवं एक रजत पदक सहित कुल आठ पदक जीते। इस यूनिट के सभी घोड़ों ने भी विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण, रजत एवं कांस्य पदक प्राप्त किये।

10 लाख का माल चोरी कर 8 लोगों ने बेचा

नोखा, (कासं)। नोखा थाने में स्क्रैप चोरी का मामला दर्ज हुआ है।

नोखा के वार्ड 19 निवासी मनफूल बिश्नोई ने बताया कि उनका स्क्रैप गोदाम कसाईयों का मोहल्ला मक्का मस्जिद के पीछे स्थित है। आरोप है कि संदीप और मनीष नाई ने छल से गोदाम की चाबी चुराकर लम्बे समय से धीरे-धीरे सामान चोरी कर बेच रहे थे।

करीब 15-20 दिन पहले जब मनफूल अपने गोदाम पहुंचे तो उन्होंने देखा कि ताला टूटा हुआ था और सामान गायब था। जांच करने पर दोनों आरोपियों ने दबाव में आकर चोरी की बात स्वीकार की। उन्होंने बताया कि गुन्नू सेवग, विशाल उपाध्याय, कमल पंचारिया, सौरभ यादव, सूरज पंडित और किशन खीचड़ के साथ मिलकर चोरी की गई। चोरी का सामान कालूराम नायक, गणपत खान और सुभाष तेली को बेच दिया गया। कुल 8-10 लाख रूपए की चोरी की गई, जिसे सभी

- **चोरों ने पहले माफी मांगी व सामान वापस करने का वादा किया**
- **10-15 दिन बाद माल लौटाने से इनकार किया**

आरोपियों ने आपस में बांट लिया। आरोपियों ने शुरू में माफी मांगी और सामान वापस करने का वादा किया। उनके परिजनों ने भी मामले को सामाजिक स्तर पर सुलझाने की कोशिश की। पीड़ित ने 10-15 दिन तक इंतजार किया, लेकिन आरोपियों ने न केवल माल लौटाने से इनकार कर दिया बल्कि पुलिस में शिकायत करने पर जान से मारने की धमकी दी तो पीड़ित ने मुकदमा दर्ज कराया।

लूणकरनसर क्षेत्र में तीन नए विद्यालय स्वीकृत

बीकानेर, (कासं)। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा ने लूणकरनसर विधानसभा में तीन नए स्कूल स्वीकृत करवाएं हैं।

गोदारा के प्रयासों से सूरतसिंह पुरा में राजकीय सीनियर सैकण्डरी स्कूल, गारबदेसर में राजकीय प्राथमिक विद्यालय (मेघवालों का मोहल्ला)तथा रावांसर में राजकीय सीनियर सैकण्डरी स्कूल स्वीकृत किए गए हैं। गोदारा ने बताया कि ग्राम वासियों की मांग पर इन सभी स्थानों पर नए विद्यालय स्वीकृत करने के साथ-साथ इन विद्यालयों के भवन निर्माण और अन्य सुविधाएं विकसित करने के लिए राशि भी जारी की गई है।

इन विद्यालयों के लिए 5 करोड़ 24 लाख रूपए स्वीकृत किए गए हैं।

- **इन विद्यालयों के लिए 5 करोड़ 24 लाख रूपए स्वीकृत किए**

उन्होंने बताया कि सूरतसिंह पुरा विद्यालय के लिए 2 करोड़ 25 लाख रूपए, गारबदेसर राजकीय प्राथमिक विद्यालय के लिए 73. 93 लाख तथा रावांसर के राजकीय सीनियर सैकण्डरी स्कूल के लिए 2 करोड़ 25 लाख रूपए की राशि स्वीकृत की गई है। गोदारा ने कहा कि शिक्षा किसी भी समाज के विकास का आधार है। ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षणिक ढांचे को मजबूती देने के लिए लूणकरनसर क्षेत्र में नए स्कूलों की स्वीकृति दी गई है।

महिला बंदियों को देंगे हस्तकला प्रशिक्षण

बीकानेर,(कासं)। जिला प्रशासन, महिला अधिकारिता, केन्द्रीय कारागृह तथा रोटरी क्लब आद्या के संयुक्त तत्वावधान में केन्द्रीय कारागृह में समावेश नई राह का ताना-बाना के तहत महिला बंदियों को हस्तकला (कढ़ाई) में कौशल प्रशिक्षण दिया जायेगा।

महिला अधिकारिता विभाग की उपनिदेशक डॉ अनुराधा सक्सेना ने बताया कि यह प्रशिक्षण 23 जनवरी से केन्द्रीय कारागृह में प्रारंभ होगा। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भरता, आत्म सम्मान और आर्थिक स्वावलंबन की भावना का विकास करने के साथ-साथ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना है। प्रशिक्षण के बाद जेल में रहते हुए महिलाएं काम प्रारंभ कर सकती है।

मां ने कराई किडनेप की रिपोर्ट, बेटी ने भाग कर प्रेमी से की शादी

बीकानेर, (कासं)। राजस्थान की पॉपुलर सोशल मीडिया एक्ट्रेस-कॉमेडियन जान्हवी मोदी (25) के किडनैप मामले में नया मोड़ आ गया है। एक्ट्रेस की मां ने जिस युवक तरुण सिकलीगर पर किडनैप का आरोप लगाते हुए एफआईआर दर्ज करवाई थी। जान्हवी ने उसी युवक से जोधपुर में शादी कर ली है। एक-दूसरे को माला पहनाने का वीडियो भी सामने आया है। इसमें जान्हवी की मांग में सिंदूर भरा हुआ दिख रहा है।

सोशल मीडिया एक्ट्रेस-कॉमेडियन जान्हवी मोदी की मां ने बेटी के किडनैप का मामला दर्ज कराया था। एक्ट्रेस की मां ने आरोप लगाया कि बाजार से 2 नकाबपोश युवक उनकी बेटी को उठाकर ले गए। घटना बीकानेर के श्रीडूंगरगढ़ के बाजार की है। जान्हवी मोदी मारवाड़ी लैंग्वेज में बनने वाली शॉर्ट मूवीज का हिस्सा रहीं हैं। उनकी मूवी कंटेंट एक यूट्यूब चैनल पर अधिक दिखाई देता है और वे अक्सर बहू का रोल प्ले करती हैं।

- **मां ने जिस युवक पर किडनैप की एफआईआर दर्ज करवाई थी, जान्हवी ने उसी युवक से जोधपुर में शादी कर ली**

जान्हवी बीकानेर के श्रीडूंगरगढ़ में मोमासर बास मोहल्ले की रहने वाली हैं। जान्हवी के इंस्टाग्राम आईडी पर 23 हजार से ज्यादा फॉलोवर हैं। जिस यूट्यूब चैनल के शो में वो काम करती हैं। उसके सब्सक्राइबर की संख्या लाखों में हैं। जान्हवी की मां पुष्पा मोदी (46) ने एफआईआर में बताया कि वो अपनी बेटी के साथ मंगलवार शाम 7 बजे बाजार में घूम रही थीं। इस दौरान बाइक पर 2 नकाबपोश युवक आए। उन्होंने मुझे धक्का दिया और जान्हवी का हाथ पकड़कर खींचा। फिर उसे बेहोश कर वहां पहले से खड़ी कार में डालकर ले गए। मां ने तरूण सिकलीगर पर शक जताया। तरूण बीकानेर का रहने वाला है।

'प्लास्टिक हमारे जीवन, पर्यावरण, धरती, पशु, हवा के लिए बहुत खतरनाक'

बीकानेर, (कासं)। महावीर इंटरनेशनल बीकानेर गंगाशहर द्वारा चलाये जा रहे जन जागरण अभियान कपडे की थैली मेरी सहेली -सिंगल यूज़ प्लास्टिक मुक्त बीकानेर के तहत आज श्री जैन कन्या पी. जी. महाविद्यालय बीकानेर में संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए टोडरमल चौपड़ा ने बीकानेर के चारों केन्द्रों द्वारा चलाये जा रहे जन जागरण अभियान 'कपड़े की थैली मेरी सहेली' कार्यक्रम की जानकारी दी। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता डॉ. सुनीता गोयल, ने सिंगल यूज़ प्लास्टिक के नुकसान बताते हुए कहा सिंगल यूज प्लास्टिक हमारे जीवन, पर्यावरण, धरती पशु, हवा के लिए बहुत खतरनाक है।

प्लास्टिक का सर्वप्रथम निर्माण 1862 इंग्लैण्ड के एलेक्जेंडर मार्क्स ने किया। पिछले 10 वर्षों से इसका उपयोग अंधाधुंध हो रहा है। इसका कारण वेकल्पिक वस्तुओं से सस्ता होना है तथा जागरूकता का अभाव है। पर्यावरण मंत्रालय के अनुसार प्रतिवर्ष भारत मे 3.3 लाख टन सिंगल यूज प्लास्टिक पैदा होता है। इसका 50 प्रतिशत तो सीधा समुन्द्र, नदियों, नालों में चला जाता है। नदी तालाब समुद्र में गंदगी का कारण कारण सिंगल यूज

श्री जैन कन्या पी. जी. महाविद्यालय बीकानेर में कॉलेज छात्राओं को संगोष्ठी में 'कपड़े की थैली-मेरी सहेली' अभियान की जानकारी दी।

- **कपड़े की थैली मेरी सहेली अभियान में संगोष्ठी का आयोजन**

प्लास्टिक है। प्लास्टिक थैली को जलाते तो वायु प्रदूषित होती है। इससे कैंसर, दमा, चर्म रोग एवं प्रतिरक्षा प्रणाली प्रभावित होती है। समुन्द्र में जाने से जीव जंतु मरते है, भूमि अनुपजाऊ बनती है। हमें प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि सिंगल यूज प्लास्टिक जैसे पानी की बोतल, पानी के गिलास चाय के कप, डिस्पोजल कैटरिंग सामान, प्लास्टिक थैली का उपयोग नहीं करना है। हमें अपने स्वयं को जागरूक करना है। यदि एक व्यक्ति भी इसका उपयोग करना बंद करता है तो केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार 11 किलो प्रतिवर्ष उपयोग रोक सकते है।

गोपेश्वर बस्ती में सफाई अभियान

बीकानेर, (कासं)। श्री जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर के दौरान महाविद्यालय द्वारा गोद ली गई गोपेश्वर बस्ती में स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी डॉ. भारती सांखला एवं डॉ. सतपाल मेहरा ने बताया कि इस विशेष शिविर के तहत आज दिनांक 22/1/25 पांचवें दिन महाविद्यालय के स्वयंसेवकों द्वारा गोपेश्वर बस्ती में सार्वजनिक स्थानों पर कूड़ा-कचरे की सफाई की। साथ ही वहाँ के नागरिकों को समझाया कि हमें घर से लेकर सार्वजनिक स्थानों को सर्वत्र स्वच्छ रखना चाहिए। खुले में शौच व मल - मूत्र का त्याग करने से पर्यावरण प्रदूषण होता है ।इस अवसर पर महाविद्यालय के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. शिवराम सिंह झाझड़िया ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए बताया कि स्वच्छता मानव सभ्यता का एक श्रेष्ठ संस्कार है। स्वच्छता से समस्त पर्यावरण को स्वच्छ रखने की चेतना बढ़ती है।

राजस्थान सरकार, कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)

Telefax No. 0154-2466652, Email :- uit_sgnr@yahoo.com Off. Add:- UIT Office, Model Town, Sri Ganganagar (Raj.) 335001

क्रमांक :- नियमन/2024/ **आपत्ति सूचना** दिनांक : 13.1.2025

सर्व साधारण को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि कृषि भूमि क्षेत्र में रिह्यशी भूखंड वाके चक 6 ई छोटी मुरब्बा नं. 23 के किला नं. 08 में भूखंड माप 25'-0'' गुणा 60'-0'' फीट के नियमन/पट्टा हेतु आवेदक श्री मोहन लाल पुत्र श्री हंसराज निवासी गली नं. 08 बी, चक 3 ई छोटी, श्रीगंगानगर द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर इनके भूखण्ड का नियमन किया जाना है। अतः उपरोक्त वर्णित भूखंड के आवेदक के द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों/रकबे के संबंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो वह अपनी आपत्ति मय सबूत आपत्ति सूचना के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस के अन्दर-अन्दर न्यास कार्यालय में कमरा नं. 17 में प्रस्तुत कर सकता है अन्यथा बाद मियाद गुजरने अवधि के उपरान्त आवेदक श्री मोहन लाल पुत्र श्री हंसराज निवासी गली नं. 08 बी, चक 3 ई छोटी, श्रीगंगानगर द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर चक 6 ई छोटी मुरब्बा नं. 23 के किला नं. 08 में भूखण्ड माप 25'-0'' गुणा 60'-0'' फीट का नियमन/पट्टा जारी कर दिया जावेगा। यदि उक्त वर्णित क्षेत्र का पूर्व में नियमन/पट्टा जारी होना पाया गया तो वर्तमान पट्टा स्वतः ही निरस्त माना जावेगा। न्यास किसी भी विवाद के लिए जिम्मेवार नहीं होगा।

Rajkaj Ref No. 12463159 - सचिव, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

राजस्थान सरकार, कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)

Telefax No. 0154-2466652, Email :- SECYUIT.SGNR@RAJASTHAN.GOV.IN

Off. Add:- UIT Office, Model Town, Sri Ganganagar (Raj.) 335001

क्रमांक :- नियमन/2025/3314 **सार्वजनिक आपत्ति सूचना** दिनांक : 16.1.2025

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि श्री जगमीत सिंह पुत्र स्व. श्री कृष्ण सिंह निवासी म.नं. 48, गुरूनगर, पुरानी आबादी, श्रीगंगानगर के द्वारा न्यास क्षेत्र में स्थित आवासीय भूखंड का न्यास रिकार्ड में नामान्तरण हेतु आवेदन किया गया है। उक्त भूखंड के सम्बन्ध में न्यास रिकार्ड एवं आवेदक के द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज की स्थिति निम्नानुसार है :-

न्यास रिकार्ड के अनुसार भूखंड का विवरण		आवेदक के द्वारा भूखंड के नामांतरण हेतु प्रस्तुत दस्तावेजों का विवरण
भूखण्ड का विवरण	मूल भूखण्डधारी	दस्तावेज का विवरण
चक 6 जैड ए मुरब्बा नं. 108 किला नं. 20 में माप 30 इंटू 40 फीट भू.सं. ए-54, गुरूनगर, श्रीगंगानगर	उक्त भूखंड का नियमन पट्टा सं. 2160 दिनांक 23.1.2013 को श्री कृष्ण सिंह पुत्र श्री मुंशी सिंह एवं श्रीमती अमरजीत कौर पत्नी श्री कृष्ण सिंह के नाम से जारी किया हुआ है।	श्रीमती जगमीत सिंह द्वारा उक्त भूखंड को जरिये पंजीकृत उपहार पत्र दिनांक 23.10.2023 के द्वारा क्रय कर उक्त भूखंड के नामान्तरण बाबत न्यास में ऑनलाईन आवेदन प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार उक्त भूखण्ड के सम्बन्ध में उपर्युक्तानुसार दस्तावेजों की प्रति इस कार्यालय में प्रस्तुत कर नामान्तरण चाहा गया है इस संबंध में श्री जगमीत सिंह पुत्र स्व. श्री कृष्ण सिंह निवासी म.नं. 48, गुरूनगर, पुरानी आबादी, श्रीगंगानगर द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज के संबंध में कोई आपत्ति है तो सूचना के प्रकाशन के 07 दिवस में पुख्ता दस्तावेजों सहित अपनी आपत्ति/उजर/दावा निम्न हस्ताक्षरकर्ता के समक्ष प्रस्तुत कर सकते है। उक्त अवधि के दौरान इस भूखण्ड से सम्बन्धित समस्त दस्तावेजों को आमखास हितबद्ध व्यक्ति के देखने व पढ़ने के लिये कार्यालय समय में खुला रखा गया है। बाद मियाद प्रकरण का निस्तारण कर दिया जायेगा एवं कोई आपत्ति/उजर स्वीकार नहीं होगा।

आवेदन सं. :- SGNR/FY24-25/MUT/1176 सचिव, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

घरेलू सर्किट में अनुभवी खिलाड़ियों की मौजूदगी युवा क्रिकेटरों के लिए 'प्रेरणादायक' होगी। गिल बृहस्पतिवार से यहां रणजी ट्रॉफी एलीट ग्रुप सी मैच में कर्नाटक के खिलाफ पंजाब के लिए खेलेंगे। – वसीम जाफर

पंजाब के मुख्य कोच, अपने राज्य की टीम के लिए खेलने को लेकर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

एबी डिविलियर्स

क्रिकेट जगत के मिस्टर 360 कहलाने वाले एबी डिविलियर्स ने 2021 में अपने क्रिकेट करियर को अलविदा कह दिया था। वहीं पिछले साढ़े तीन साल से उन्होंने कोई प्रतिस्पर्धात्मक क्रिकेट नहीं खेला है, लेकिन मिस्टर 360 के दुनिया भर के फैंस के लिए बड़ी और अच्छी खबर है। दरअसल, मिस्टर 360 ने वापसी का हिंट देकर क्रिकेट जगत में बवाल मचा दिया है। डिविलियर्स का कहना है कि वो जरूर दोबारा क्रिकेट खेलना चाहेंगे, लेकिन उन्होंने ये भी साफ किया कि वो इंडियन प्रीमियर लीग या फिर अन्य किसी फ्रेंचाइजी लीग में वापस नहीं आ रहे हैं।

क्या आप जानते हैं ?... रोजर फ़ेडरर अपने करियर में 310 सप्ताह तक दुनिया के नंबर 1 स्थान पर रहे हैं, जो किसी भी टेनिस खिलाड़ी द्वारा सबसे अधिक है।

भारत ने इंग्लैंड को सात विकेट से हराया

कोलकाता, 22 जनवरी। वरुण चक्रवर्ती (तीन विकेट) , हार्दिक पांड्या, अर्शदीप सिंह और अक्षर पटेल (दो-दो विकेट) की शानदार गेंदबाजी के बाद अभिषेक शर्मा की (79) रनों की आतिशी अर्धशतकीय पारियों की बदौलत भारत ने बुधवार को पहले टी-20 मुकाबले में इंग्लैंड को सात विकेट से हरा दिया है। इसी के साथ भारत ने पांच मैचों की सीरीज में 1-0 से बढ़त बना ली हैं।

इंग्लैंड के132 रनों के स्कोर के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी भारत की संजू सैमसन और अभिषेक शर्मा ने अच्छी शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिए (41) जोड़े। पांचवें ओवर में जोफ्रा आर्चर ने संजू सैमसन को आउटकर इस साझेदारी को तोड़ा। संजू सैमसन ने 20 गेंदों में चार चौके और एक छक्का लगाते हुए (26) रनों की पारी खेली। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये कप्तान सूर्यकुमार यादव (शून्य) को भी जोफ्रा आर्चर ने इसी ओवर में आउट कर इंग्लैंड को दूसरी सफलता दिलाई। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये तिलक वर्मा ने अभिषेक शर्मा के साथ पारी को संभाला। हालांकि अभिषेक ने अपनी लय बरकरार रखी और तेजी के साथ रन बनाते रहे। जीत की ओर बढ़ रही भारतीय टीम को आदिल रशीद ने 12वें ओवर में अभिषेक शर्मा को आउटकर तीसरा झटका दिया। अभिषेक शर्मा ने आतिशी बल्लेबाजी करते हुए 34 गेंदों में पांच चौके और आठ छक्कों की मदद से (79)रन बनाये। तिलक वर्मा (19) और हार्दिक पंड्या (तीन) रन बनाकर नाबाद रहे। भारत ने 12.5 ओवर में तीन विकेट पर 133 रन बनाकर मुकाबला सात विकेट से जीत लिया। इंग्लैंड की ओर से जोफ्रा आर्चर ने दो विकेट लिये। आदिल रशीद को एक विकेट मिला।

इससे पहले आज यहां भारत के कप्तान सूर्यकुमार यादव ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। भारतीय गेंदबाज कप्तान की उम्मीदों पर खरे उतरे और उन्होंने इंग्लैंड के बल्लेबाजों को खुल कर खेलने का मौका नहीं दिया। हालांकि इस दौरान इंग्लैंड टीम के कप्तान जॉस बटलर ने कुछ आकर्षक शॉट लगाये। उन्होंने अपनी इस पारी में 44 गेंदों में आठ चौके और दो छक्के लगाते हुए (68) रनों की अर्धशतकीय पारी खेली। इंग्लैंड की शुरुआत खराब रही और उसने 17 रन पर अपने दो विकेट गवां दिये।

फिल सॉल्ट (शून्य) और बेन डकेट (चार) रन बनाकर आउट हुये। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये कप्तान जॉस बटलर ने हैरी ब्रूक के साथ पारी को संभलाने का प्रयास किया। आठवें ओवर में वरूण चक्रवर्ती ने हैरी ब्रूक (17) को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। इसके बाद तो भारतीय गेंदबाजी आक्रमण के आगे इंग्लैंड के अधिकतर बल्लेबाजों ने हथियार डाल दिये। जोफ्रा आर्चर (12) रन बनाकर आउट हुये। इंग्लैंड की पूरी टीम निर्धारित 20 ओवरों में 132 के स्कोर पर सिमट गई। भारत की ओर से वरुण चक्रवर्ती ने 23 रन देकर तीन विकेट लिये। हार्दिक पांड्या, अर्शदीप सिंह और अक्षर पटेल को दो-दो विकेट मिले।

अर्शदीप ने रचा इतिहास

टी20 में भारत की ओर से सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज बनें

कोलकाता, 22 जनवरी। कोलकाता के ईडन गार्डन्स स्टेडियम में भारत और इंग्लैंड के बीच पहला टी20 मुकाबला खेला जा रहा है। जहां भारत ने टॉस जीता और कप्तान सूर्यकुमार यादव ने पहले गेंदबाजी का फैसला किया। इस दौरान टीम इंडिया के गेंदबाज अर्शदीप सिंह ने इतिहास रच दिया। दरअसल, वह भारत की ओर से टी20 क्रिकेट में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज बन गए हैं। इस कड़ी में उन्होंने युजवेंद्र चहल का रिकॉर्ड तोड़ा है। अर्शदीप ने पहले ही ओवर में इंग्लैंड को बड़ा झटका देते हुए फिल सॉल्ट को आउट किया उसके बाद उन्होंने बेन डकेट को भी पवेलियन भेजा। वहीं टी20 में भारत की तरफ से सबसे ज्यादा विकेट लेने का रिकॉर्ड युजवेंद्र चहल के नाम था। चहल को इस मुकाम तक पहुंचने में 7 साल लगे। उन्होंने 2016 से लेकर 2023 तक 80 टी20 मैच में 96 विकेट झटके थे। लेकिन अर्शदीप ने महज 2022 से 2025 तक नंबर 1 पर कब्जा जमा लिया है। उन्होंने ये कारनामा महज 61वें टी20 मैच में कर दिखाया है। वहीं टीम इंडिया ने पहले टी20 में बेहतरीन शुरुआत की है। पॉवर प्ले में ही टीम इंडिया को 2 विकेट की सफलता मिली। पहले टी20 मैच में महोम्मद शमी को प्लेइंग इलेवन में मौका नहीं मिला है।

// आईसीसी अफसर का बयान सामने आया //

टीम इंडिया की जर्सी पर पाकिस्तान लिखा होगा?

नई दिल्ली, 22 जनवरी। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के आगाज में अब बस कुछ ही दिन शेष हैं। इस टूर्नामेंट में भारत और पाकिस्तान के बीच के रिश्तों की खट्टास साफ नजर आ रही है। पहले भारत ने पाकिस्तान जाने से इनकार किया वहीं अब पाकिस्तानी मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार भारत अपनी जर्सी पर मेजबान टीम पाकिस्तान का नाम नहीं चाहता है। उन्होंने आईसीसी अधिकारी के हवाले से ये भी कहा कि ऐसा करने पर भारत पर एक्शन हो सकता है।

मेजबान होने के नाते चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के लोगो में पाकिस्तान का नाम मौजूद है। पाकिस्तानी मीडिया के मुताबिक बीसीसीआई को ये मंजूर नहीं है कि भारत पाकिस्तान के नाम वाली जर्सी पहनकर टूर्नामेंट खेले हैं। हालांकि, नियम उसके खिलाफ हैं। अगर वह लोगो जर्सी पर नहीं रखता है तो उन्हें सजा का सामना करना पड़ सकता है। वहीं पाकिस्तानी मीडिया ने आईसीसी के सूत्र के हवाले से लिखा कि, हर टीम की जिम्मेदारी है कि उनकी जर्सी पर टूर्नामेंट का लोगो हो। हर टीम के लिए ये नियम मानना जरूरी है। बता दें कि, आईसीसी के नियम के अनुसार अगर कोई भी ऐसा करने में नाकाम रहता है तो उनपर सख्त एक्शन लिया जाएगा। हालांकि, इसे लेकर अभी तक कोई भी अधिकारिक बयान सामने नहीं आया है।

इसके अलावा मीडिया रिपोर्ट्स ने पीसीबी के एक अधिकारी के हवाले से लिखा कि, बीसीसीआई क्रिकेट में राजनीति को ला रहा है जो कि खेल के लिए ठीक नहीं है। बीसीसीआई ने अपनी टीम को पाकिस्तान भेजने से मना किया। वह अपने कप्तान को भी ओपनिंग सेरेमनी के लिए पाकिस्तान नहीं भेजेंगे और अब जो रिपोर्ट सामने आ रही है कि जर्सी पर पाकिस्तान प्रिंट नहीं होगा। हम क्रिकेट की सर्वोच्च संस्था आईसीसी से उम्मीद रखते हैं कि वह ऐसा नहीं होने देंगे और पाकिस्तान को समर्थन देंगे।

फिलहाल, भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने टीम इंडिया को पाकिस्तान भेजने से इनकार किया था जिसके बाद चैंपियंस ट्रॉफी को हाइब्रिड मॉडल के तहत कराने पर फैसला हुआ था। भारत अपने सभी मैच दुबई में खेलेगा। वहीं अगर भारत फाइनल में पहुंचता है तो भी मुकाबला दुबई में खेला जाएगा।

गेंदबाजों में बुमराह की बादशाहत बरकरार

बल्लेबाजों में रोहित-पंत को हुआ बड़ा नुकसान

नई दिल्ली, 22 जनवरी। आईसीसी ने बुधवार को ताजा रैंकिंग जारी की है। इस रैंकिंग में भारत के प्रमुख तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह नंबर एक गेंदबाज बने हुए हैं। वहीं रविंद्र जडेजा ने ऑलराउंडर्स की श्रेणी में अपना टॉप स्थान बरकरार रखा है। बुमराह ने जनवरी में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांचवें और अंतिम बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से पहले 907 अंक हासिल किए थे और इतिहास रचा था। ये किसी भारतीय गेंदबाज द्वारा उच्चतम आईसीसी रैंकिंग रेटिंग है। फिलहाल, उनकी 908 रेटिंग है और जो कि उनकी सर्वश्रेष्ठ रेटिंग है।

ऑस्ट्रेलिया के पैट कमिंस 841 रेटिंग अंकों के साथ टेस्ट गेंदबाजों में दूसरे और दक्षिण अफ्रीका के कगिसो रबाडा 837 रेटिंग अंकों के साथ गेंदबाजों में तीसरे स्थान पर हैं। ऑस्ट्रेलिया के जोश हेजलवुड चौथे और दक्षिण अफ्रीका के मार्कर यानसेन पांचवें स्थान पर हैं। मुल्तान में वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले टेस्ट में 6 विकेट लेने के बाद पाकिस्तान के नोमान अली (761) टॉप 10 में पहुंच गए हैं। वह दो स्थान की छलांग के साथ नौवें स्थान पर हैं। साथ ही टॉप 10 टेस्ट गेंदों में 10वें स्थान पर भारत के रविंद्र जडेजा हैं।

टेस्ट फॉर्मेट में टॉप 10 ऑलराउंडर्स की सूची में ज्यादा बदलाव नहीं हुए हैं। जडेजा 400 रेटिंग अंकों के साथ टॉप स्थान पर बरकरार हैं। उनके बाद दक्षिण अफ्रीका के मार्कर यानसेन हैं। उनका रेटिंग अंक 294 है। बांग्लादेश के मेहदी हसन 284 रेटिंग अंकों के साथ तीसरे स्थान पर हैं। ऑस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस 282 रेटिंग अंकों के साथ चौथे और बांग्लादेश के शाकिब अल हसन 263 रेटिंग अंकों के साथ ऑलराउंडरों में पांचवें नंबर पर हैं।

रोहित के चैंपियंस ट्रॉफी के लिए पाकिस्तान जाने पर फैसला होना शेष है : सैकिया

मुंबई, 22 जनवरी। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के नवनियुक्त सचिव देवजीत सैकिया ने बुधवार को कहा कि कप्तान रोहित शर्मा के आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के लिए पाकिस्तान में टूर्नामेंट से पहले होने वाले कार्यक्रमों में भाग लेने पर अभी फैसला होना बाकी है। सैकिया ने कहा कि भारतीय क्रिकेट बोर्ड में रोहित शर्मा के पाकिस्तान जाने पर विचार-विमर्श चल रहा है। उन्होंने कहा, रोहित शर्मा आईसीसी मीडिया कार्यक्रमों के लिए पाकिस्तान जाएंगे या नहीं, इस पर अभी फैसला नहीं हुआ है। ऐसी अटकलें लगाई जा रही हैं कि आईसीसी इन कार्यक्रमों को यूएई में स्थानांतरित कर सकता है। हालांकि, इस तरह के कदम से पाकिस्तान में खेलने वाली टीमों के लिए चुनौतियाँ पैदा होंगी। उल्लेखनीय है कि कप्तानों की बैठक और लाहौर में होने वाले प्री-इवेंट संवाददाता सम्मेलन सहित विचाराधीन कार्यक्रम पारंपरिक रूप से आईसीसी टूर्नामेंट की शुरुआत करते हैं और टीम के कप्तानों को अपनी योजनाओं और लक्ष्यों को रेखांकित करने का अवसर प्रदान करते हैं। हालांकि, भारत द्वारा पाकिस्तान का दौरा करने से मना करने के बाद, जिसके कारण चैंपियंस ट्रॉफी के लिए हाइब्रिड मॉडल को अपनाया गया है।

इगा स्वियातेक ऑस्ट्रेलियन ओपन के सेमीफाइनल में; अमेरिका की नवारो को सीधे सेटों में हराया, आज कीज से होगा मुकाबला

आस्ट्रेलिया, 22 जनवरी। पांच बार की ग्रैंड स्लैम चैंपियन इगा स्वियातेक ने अमेरिका की एम्मा नवारो पर आसान जीत के ऑस्ट्रेलियन ओपन के विमेंस सिंगल्स के सेमीफाइनल में जगह बना ली है। वहीं अमेरिका की एक अन्य टेनिस खिलाड़ी मेडिसन कीज भी टूर्नामेंट के विमेंस सिंगल्स के सेमीफाइनल में पहुंच गई हैं। विमेंस सिंगल्स के सेमीफाइनलिस्ट तय हो गए है। पहला सेमीफाइनल वर्ल्ड नंबर-1 आर्याना सबालेंका और स्पेन की पाउला बडोसा के बीच खेला जाएगा। वहीं, दूसरा स्वियातेक और कीज के बीच खेला जाएगा।

स्वियातेक ने क्वार्टर फाइनल मुकाबले में नवारो पर आसान जीत दर्ज की। उन्होंने पहला सेट 6-1 और दूसरा 6-2 से जीता। सेमीफाइनल में स्वियातेक का मुकाबला 23 जनवरी यानी कल कीज से होगा। अमेरिका की मेडिसन कीज ने बुधवार को पिछड़ने के बाद वापसी की और जीत दर्ज की। कीज को यूक्रेन की 28वीं सीड एलिना स्वितोलिना के खिलाफ

पहले सेट में 3-6 से हार झेलनी पड़ी। इसके बाद उन्होंने कमबैक किया, दूसरा सेट 6-3 और तीसरा सेट 6-4 से जीत लिया। 24 बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन सर्बिया के नोवाक जोकोविच ने मंगलवार को ऑस्ट्रेलियन ओपन 2025 के सेमीफाइनल में जगह बना ली। टेनिस के ओलिंपिक चैंपियन जोकोविच ने मेंस सिंगल्स में तीसरी सीड स्पेन के कार्लोस अल्काराज को 4 सेट तक चले मुकाबले में पिछड़ने के बाद हराया। मेलबर्न के रोड लेवर एरिना में दूसरी ओर जर्मनी के एलेक्जेंडर ज्वेरेव ने भी अपना क्वार्टर फाइनल जीत लिया।

जोकोविच के खिलाफ 21 साल के अल्काराज ने पहला सेट 6-4 से जीता। जोकोविच ने वापसी की और दूसरा सेट 6-4 के अंतर से ही अपने नाम कर लिया। जोकोविच ने अपना दबदबा कायम रखा और आखिरी 2 सेट 6-3, 6-4 से जीतकर मैच अपने नाम कर लिया। दूसरी सीड जर्मनी के एलेक्जेंडर ज्वेरेव ने अमेरिका के टॉमी पॉल के खिलाफ क्वार्टर फाइनल जीता। ज्वेरेव को शुरुआती 2 सेट जीतने में मशक्कत करनी पड़ी, लेकिन उन्होंने 7-6, 7-6 के अंतर से दोनों सेट जीत लिए। पॉल ने वापसी की और तीसरा सेट 6-2 से अपने नाम किया। ज्वेरेव ने फिर कमबैक किया और चौथा सेट 6-1 के अंतर से जीतकर मैच अपने नाम कर लिया। ऑस्ट्रेलियन ओपन के मेंस सिंगल्स इवेंट में बेस्ट ऑफ 5 होता है। सबसे पहले 3 सेट जीतने वाला प्लेयर विजेता होता है।

राजधानी

कृषि तकनीकों को समझने के लिये राज्य सरकार प्रगतिशील किसानों को विदेश भेजेगी : मुख्यमंत्री

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार किसानों और पशुपालकों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने की दिशा में प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। एक वर्ष के कार्यकाल में हमने कृषकों की आय बढ़ाने के लिए दूरगामी निर्णय किए है। उनका सशक्तीकरण ही विकसित राजस्थान की मजबूत नींव तैयार करेगा। उन्होंने कहा कि किसानों एवं पशुपालकों से प्राप्त सुझावों को यथासंभव आगामी बजट 2025-26 में शामिल करने के प्रयास किए जाएंगे।

शर्मा बुधवार को मुख्यमंत्री कार्यालय पर किसानों, पशुपालकों और डेयरी संघों के प्रतिनिधियों के साथ आयोजित बजट पूर्व संवाद को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि अन्नदाता अपनी अथक मेहनत से देश-प्रदेश को खाद्य सुरक्षा प्रदान कर रहे हैं। हमारा भी दायित्व है कि किसानों का सशक्तीकरण सुनिश्चित हो। उन्होंने कहा कि कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र का राज्य के जीएसडीपी में करीब 30 प्रतिशत हिस्सा है। वहीं कृषि एवं पशुपालन से प्रदेश के करीब 85 लाख परिवारों को रोजगार मिल रहा है।

शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार ने एक वर्ष के कार्यकाल में किसानों को पानी-बिजली उपलब्ध करवाने को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। ईआरसीपी-पीकेसी परियोजना, यमुना जल समझौता, माही डेम परियोजना एवं देवास परियोजना के माध्यम से किसानों को पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध हो सकेगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश को ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दृष्टि से

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को मुख्यमंत्री कार्यालय पर किसानों, पशुपालकों और डेयरी संघों के प्रतिनिधियों के साथ आयोजित बजट पूर्व संवाद को संबोधित किया।

2.24 लाख करोड़ रूपए के एमओयू हस्ताक्षरित किए गए हैं। इससे किसानों को वर्ष 2027 में दिन के समय में भी बिजली उपलब्ध हो सकेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रवासी राजस्थानियों के सहयोग से राज्य सरकार 'कर्म भूमि से मातृभूमि' अभियान चलाकर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में रेन वॉटर रिचार्ज इस्ट्रक्चर बनाएगी। इससे किसानों को पानी मिल सकेगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का लक्ष्य है कि किसान नवीनतम तकनीक अपनाकर खुशहाली के मार्ग पर आगे बढ़े। इसी क्रम में राज्य सरकार प्रगतिशील किसानों को विदेशों में भेजेगी ताकि वे उन्नत कृषि तकनीकों को जाने, समझे और उपयोग कर सके। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार सूचना प्रौद्योगिकी तकनीकों का अधिकतम उपयोग करते हुए कृषि क्षेत्र में चुनौतियों के समाधान के लिए एग्रीस्टेक का क्रियान्वयन कर रही है। इसके तहत 5 फरवरी से विभिन्न चरणों में प्रदेश की सभी ग्राम पंचायतों में फार्म रजिस्ट्री कैंप आयोजित किए जाएंगे। शर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के माध्यम से लाभार्थियों को हर साल 2 हजार रुपये अतिरिक्त देकर कुल 8 हजार रुपये की राशि दी जा रही है। इस योजना के तहत राज्य के 65 लाख से अधिक किसानों के खातों में 1 हजार 355 करोड़ रुपये से अधिक की राशि हस्तांतरित भी की जा चुकी है। साथ ही प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत 2 हजार 822 करोड़ रुपये के बीमा क्लेम वितरित किए गए है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार पाइप लाइन, डिग्गी, फार्म पौंड, ड्रिप संयंत्र आदि के लिए किसानों को अनुदान भी दे रही है। 2 लाख 37 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में सूक्ष्म सिंचाई संयंत्रों की स्थापना के लिए भी करीब 574 करोड़ रुपये का अनुदान दिया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों को सस्ती दरों पर किराये पर कृषि यंत्र उपलब्ध कराने के लिए राज्य में केवीएसएस और जीएसएस पर 330 कस्टम हायरिंग केंद्रों की स्थापना की है। किसानों को मृदा स्वास्थ्य की जानकारी उपलब्ध करवाने के लिए साढ़े आठ लाख से अधिक मृदा स्वास्थ्य कार्ड जारी किए गए हैं। उन्होंने कहा कि राज्य में अब तक 32 लाख से अधिक महिला कृषकों को बीज मिनिकिट का नि:शुल्क वितरण किया गया है। साथ ही, राजस्थान आज सौर ऊर्जा आधारित पंप सैट लगाने में देश के अग्रणी राज्यों में से एक है।

शर्मा ने कहा कि राजस्थान सहकारी गोपाल क्रेडिट कार्ड ऋण योजना के अंतर्गत डेयरी से संबंधित गतिविधियों तथा दुग्ध, चारा, बांटा संबंधी उपकरण खरीदने के लिए एक लाख रुपये तक ब्याज मुक्त अल्पकालीन ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। मुख्यमंत्री दुग्ध उत्पादक संबल योजना के डीबीटी के माध्यम से राशि लाभार्थियों को हस्तांतरित की जा रही है। उन्होंने कहा कि पंजीकृत गौशालाओं को देय अनुदान में 10 प्रतिशत की वृद्धि के आदेश जारी कर दिए गए है।

बैठक में जालौर, सवाईमाधोपुर, बीकानेर, अजमेर, चुरू, जयपुर, श्रीगंगानगर, चित्तौड़गढ़, जोधपुर, फलौदी, बालोतरा, जैसलमेर, सीकर सहित विभिन्न अंचलों के प्रगतिशील किसानों ने मुख्यमंत्री को कृषि, पशुपालन के संबंध में सुझाव प्रस्तुत किए। साथ ही कोटा, भरतपुर, पाली डेयरी संघों सहित विभिन्न संघों ने भी सुझाव दिए। इस अवसर पर पशुपालन एवं डेयरी मंत्री जोराराम कुमावत, जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत, राज्य किसान आयोग अध्यक्ष सी. आर. चौधरी, मुख्य सचिव सुधांश पंत, अतिरिक्त मुख्य सचिव वित्त अखिल अरोरा, प्रमुख सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय आलोक गुप्ता, शासन सचिव कृषि राजन विशाल सहित संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

देवनानी स्वस्थ, एस.एम.एस अस्पताल से हुए डिस्चार्ज

चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने सवाई मानसिंह अस्पताल में विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी से मुलाकात की।

जयपुर। विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी को सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के प्राचार्य डॉ. दीपक माहेश्वरी के निर्देशन में गठित चिकित्सकों के दल ने सभी जांचे सामान्य आने के बाद उन्हें बुधवार को सायं अस्पताल से डिस्चार्ज किया। देवनानी ने कहा कि वे स्वयं को स्वस्थ महसूस कर रहे हैं।

देवनानी से बुधवार को भी उनके हाल चाल लेने वालों का तांता लगा रहा। विधान सभा में नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली, देवस्थान मंत्री जोराराम कुमावत, सहकारिता मंत्री गौतम दक, राजस्व मंत्री हेमंत मीणा, विधायक शिखा मील बराला, कल्पना देवी, विरेन्द्र सिंह सहित जयपुर और अजमेर के अनेक जनप्रतिनिधि तथा सैकडों आमजन ने देवनानी के स्वास्थ्य के हाल-चाल जाने और और उन्हें सुदीर्घ एवं स्वस्थ जीवन के लिए शुभकामनाएं दी। देवनानी ने सवाई मानसिंह अस्पताल के चिकित्सकों, नर्सिंग स्टाफ और अस्पताल प्रशासन को उनके स्वास्थ्य जांच में किए गए सराहनीय सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

- **देवनानी से नेता प्रतिपक्ष, मंत्री, विधायक सहित आमजन ने की मुलाकात**
- **एस.एम.एस अस्पताल में की गई सभी जांचें सामान्य**

हम महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में निरंतर कार्य कर रहे हैं : भजनलाल शर्मा

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि एक सशक्त और समृद्ध समाज के निर्माण में एनजीओ, सिविल सोसाइटी और उपभोक्ता मंच की अहम भूमिका है। इनका समाज पर बहुत गहरा प्रभाव होता है तथा वे राज्य सरकार की योजनाओं को जनता तक पहुंचाने का काम करते हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार बजट में प्रत्येक वर्ग की जरूरतों का समावेश कर सभी के सुझावों का यथासंभव समाहित करेगी जिससे सबका साथ, सबका विकास के संकल्प को गति मिले। शर्मा बुधवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में एनजीओ, सिविल सोसाइटी और उपभोक्ता मंच के प्रतिनिधियों से बजट पूर्व चर्चा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि एनजीओ, सिविल सोसाइटी एवं उपभोक्ता मंच जैसे संगठन अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ है तथा इनके अनुभव का लाभ जनता को मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार पंडित दीनदयाल उपाध्याय तथा भीमराव अम्बेडकर के अंत्योदय की अवधारणा पर काम कर रही है जिसके तहत अंतिम पंक्ति पर खड़े व्यक्ति को योजनाओं का लाभ मिले तथा वे समाज की मुख्यधारा से जुड़ सके।

शर्मा ने कहा कि ग्रामीण विकास राज्य की समृद्धि में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। हमारी सरकार गांवों के विकास के लिए लगातार काम कर रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा मनरेगा के 20 करोड़ मानव दिवस को बढ़ाकर 27 करोड़ मानव दिवस किया गया है। अब तक 24 करोड़ से ज्यादा मानव दिवस का रोजगार दिया जा चुका है। साथ ही, योजना के तहत लगभग सभी श्रमिकों का भुगतान 15 दिन में किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हम महिलाओं के सशक्तीकरण की दिशा में निरंतर कार्य कर रहे हैं।

राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा की पहली वर्षगांठ पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चम्बल लिंक परियोजना का नाम रामजल सेतु लिंक परियोजना करने की घोषणा की। मुख्यमंत्री निवास पर इसके पोस्टर का विमोचन किया गया। इस अवसर पर जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत, गृह राज्यमंत्री जवाहर सिंह बेढ़म, राजस्थान धरोहर प्राधिकरण के अध्यक्ष ओंकार सिंह लखावत, सांसद मदन राठौड़ सहित वरिष्ठ अधिकारीगण एवं जनप्रतिनिधिगण उपस्थित थे।

रामजल सेतु लिंक परियोजना-मुख्यमंत्री ने नदियों को जोड़ने की योजना को नया नाम दिया

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की पहली वर्षगाँठ पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने पोस्टर का भी विमोचन किया

- **इस लिंक परियोजना में चंबल और उसकी सहायक नदियों कुन्नू, कूल, पार्वती, कालीसिंध और मेज के सरप्लस वर्षा जल को बनास, मोरेल, बाणगंगा, रूपारेल, पार्वती व गंभीर नदी बेसिनों में भेजा जायेगा।**
- **इस परियोजना से सवा तीन करोड़ लोगों को सुलभ पेयजल की उपलब्धता के साथ ढाई लाख हैक्टेयर नये क्षेत्र की सिंचाई तथा डेढ़ लाख हैक्टेयर में सिंचाई के लिये अतिरिक्त पानी की व्यवस्था हो सकेगी।**

जयपुर, 22 जनवरी। अयोध्या में रामजन्मभूमि पर भगवान श्रीराम की भव्य प्राण प्रतिष्ठा की पहली वर्षगांठ के अवसर पर, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रदेश में संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चम्बल लिंक परियोजना का नामकरण ''रामजल सेतु लिंक परियोजना'' करने की घोषणा की है। उल्लेखनीय है कि गत 17 दिसम्बर को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति में संशोधित पीकेसी परियोजना के एमओयू के अवसर पर पार्वती, काली सिंध और चंबल नदियों का जल रामसेतु जल संकल्प कलश में प्रवाहित किया गया था।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को मुख्यमंत्री निवास पर रामजल सेतु लिंक परियोजना के नामकरण के उपरान्त, इसके पोस्टर का विमोचन किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि गत वर्ष आज के ही दिन 500 वर्षों के लंबे इंतजार के बाद भगवान श्रीराम अयोध्या में जन्मभूमि पर भव्य मंदिर में विराजमान हुए थे। भगवान श्रीराम ने सत्य की विजय के लिए समुद्र पर सेतु बनाकर एक छोर को दूसरे छोर से जोड़ने का काम किया। उनसे प्रेरणा लेते हुए ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राजस्थान और मध्य प्रदेश को सुजलाम सुफलाम बनाने के लिए नदियों को जोड़ने की यह महत्वाकांक्षी परियोजना लाई गई है।

उन्होंने कहा, पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के नदियों को जोड़ने के सपने को साकार करते हुए, रामसेतु जल परियोजना पूर्ण होने पर प्रदेश की 40 प्रतिशत आबादी को पेयजल एवं सिंचाई के लिए जल उपलब्ध हो सकेगा। इस लिंक परियोजना में चंबल और इसकी सहायक नदियों, कुन्नू, कूल, पार्वती, कालीसिंध और मेज के सरप्लस वर्षा जल को बनास, मोरेल, बाणगंगा, रूपारेल, पार्वती, गंभीर नदी बेसिनों में भेजा जाएगा। इसमें लगभग सवा तीन करोड़ लोगों को पेयजल की उपलब्धता के साथ-साथ, लगभग ढाई लाख हैक्टेयर नये क्षेत्र में सिंचाई तथा लगभग डेढ़ लाख हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई हेतु अतिरिक्त पानी की व्यवस्था हो सकेगी। साथ ही, इन जिलों में स्थापित होने वाले उद्योगों के विकास के लिए भी पानी मिल सकेगा।

इस दौरान, जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत, गृह राज्यमंत्री जवाहर सिंह बेढम, राजस्थान धरोहर प्राधिकरण के अध्यक्ष ओंकार सिंह लखावत, सांसद मदन राठौड़, विधायक बहादुर सिंह कोली, डॉ. शैलेष सिंह, डॉ. सुभाष गर्ग, अतिरिक्त मुख्य सचिव जल संसाधन अभय कुमार, अतिरिक्त मुख्य सचिव वित्त अखिल अरोड़ा, अतिरिक्त मुख्य सचिव (मुख्यमंत्री कार्यालय) शिखर अग्रवाल सहित, वरिष्ठ अधिकारीगण एवं जनप्रतिनिधिगण उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री भजनलाल वसुंधरा राजे से मिलने उनके निवास पर गये

दोनों नेताओं की 35 मिनट की मुलाकात ने प्रदेश की राजनीति में हलचल पैदा कर दी है

- **जानकार लोगों का मानना है कि भजनलाल और वसुंधरा राजे की मुलाकात में मुख्यतः विधानसभा के बजट सत्र तथा प्रदेश में चल रहे संगठन पर्व पर चर्चा हुई होगी।**
- **यह भी कहा जा रहा है कि मंत्रिमंडल फेरबदल व विस्तार तथा राजनीतिक नियुक्तियों पर भी चर्चा हुई हो सकती है।**

जयपुर, 22 जनवरी। प्रदेश में मंत्रिमंडल विस्तार और फेरबदल को लेकर चल रही सियासी चर्चा के बीच, बुधवार को राजस्थान की राजनीति में हलचल मचाने वाली खबर सामने आई। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा अचानक पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे से उनके आवास पर मुलाकात करने पहुंचे। दोनों के बीच हुई करीब 35 मिनट की मुलाकात ने राज्य में संभावित सियासी बदलावों और मंत्रिमंडल विस्तार की अटकलों को हवा दे दी है। बताया जा रहा है कि इस मुलाकात में आगामी बजट 2025-26 और संगठन पर्व को लेकर चर्चा हुई।

ज्ञातव्य है कि 31 जनवरी से विधानसभा सत्र शुरू हो रहा है और संभावना जताई जा रही है कि फरवरी के दूसरे सप्ताह में भजनलाल सरकार अपना बजट पेश कर सकती है। मुख्यमंत्री भजनलाल और वसुंधरा राजे के बीच की मुलाकात को लेकर भी यही माना जा रहा है कि आगामी बजट को लेकर दोनों नेताओं के बीच चर्चा हुई है। इसके साथ ही कहा जा रहा है कि प्रदेश में चल रहे संगठन पर्व को लेकर भी इस मुलाकात में चर्चा की गई।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि उक्त दोनों की चर्चाओं के बीच इस समय पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की मुलाकात काफी अहम हो जाती है, क्योंकि प्रदेश में मंत्रिमंडल फेरबदल और विस्तार को लेकर चर्चा जोरों पर है। इसके साथ ही, सरकार को अब राजनीतिक नियुक्तियां भी करनी हैं। वसुंधरा राजे राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं और प्रदेश में दो बार मुख्यमंत्री चुकी हैं। ऐसे में भजनलाल शर्मा का पूर्व सीएम वसुंधरा राजे से इन मुद्दों पर चर्चा करना संभव है। विश्लेषकों के अनुसार, पिछले दिनों जिस तरह से राजे की सक्रियता बढ़ी है और प्रधानमंत्री से उनकी मुलाकात हुई है, उसके बाद यह माना जा रहा है कि राजनीतिक नियुक्तियां, प्रदेश भाजपा संगठन और मंत्रिमंडल विस्तार में राजे की राय को भी महत्व दिया जा सकता है। राष्ट्रीय संगठन महामंत्री बीएल संतोष ने भी समन्वय बनाने के निर्देश दिए थे।

दरअसल, प्रदेश में इन दिनों मंत्रिमंडल विस्तार और फेरबदल की चर्चा लगातार हो रही है। बीच में 24 जनवरी को मंत्रिमंडल विस्तार और फेरबदल खबरें सामने आ रही थीं, लेकिन 24 जनवरी को राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े का सीकर मोदी यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह में जाने का कार्यक्रम है। इसके बाद राज्यपाल 24 जनवरी को कोटा के वर्धमान महावीर कोटा विश्वविद्यालय और कोटा विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में शामिल होंगे। वे 25 जनवरी को सुबह 10 बजे आरआईसी में राष्ट्रीय मतदाता दिवस कार्यक्रम में शामिल होंगे। इसके बाद उदयपुर राज्य स्तरीय गणतंत्र दिवस के कार्यक्रम में उनका जाना प्रस्तावित है। ऐसे में कहा जा सकता है कि मंत्रिमंडल विस्तार और फेरबदल विधानसभा बजट के बाद हो सकता है।

कहा जा रहा है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा वसुंधरा राजे से मुलाकात के बाद मुस्कुराते हुए उनके आवास से रवाना हुए। उनके चेहरे पर संतोष का भाव था। वसुंधरा राजे से मुलाकात के बाद मुख्यमंत्री ने सीधे अपने कार्यालय का रुख किया, जहां गोपालन और पशुपालन विभाग के साथ बजट पूर्व संवाद किया जा रहा था।

ताहिर हुसैन ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उल्लेख करना उचित होगा कि 10-15 दिन प्रचार करना (चुनाव जीतने के) प्रयोजन के लिये पर्याप्त नहीं होता, चुनाव क्षेत्र की वर्षों तक सेवा की जाती है, ख़याल रखा जाता है। अगर याचिकाकर्ता जेल में होने के कारण, पिछले कुछ वर्षों में उस क्षेत्र की सेवा नहीं कर सका है, तो कोई कारण नहीं है कि उसे रिहा किया जाये।''

जस्टिस अमानुल्लाह ने आरोपों की गंभीरता को तो स्वीकार किया, लेकिन यह भी कहा कि इस समय तो वे केवल आरोप ही हैं।

जेल में गुजरी अवधि (5 वर्ष) के एक बहुत छोटे हिस्से के रुप में, तथा इस तथ्य के प्रकाश में, कि आरोपी को अन्य प्रकरणों में जमानत मिल चुकी है, उसे 4 फरवरी, 2024 तक अन्तरिम जमानत दी जा सकती है, लेकिन जमानत बीएनएसएस, 2023 की धारा 482 एवं 484 की शर्तों के तहत होगी। हुसैन प्रचार के दौरान, एफआईआर में दिये गये मुद्दों को नहीं उठायेंगे तथा वे 4 फरवरी, 2024 को दोपहर तक आत्मसमर्पण कर देंगे।

'ट्रेनी एसआई की फील्ड ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

माथुर ने कहा कि कुछ उम्मीदवारों की ओर से कथित रूप से अपनाए गए अनुचित साधनों के आधार पर पूरी भर्ती को रद्द नहीं किया जा सकता। इन अभ्यर्थियों के खिलाफ अभी ट्रायल चल रहा है। ऐसे में ट्रायल पूरा होने के बाद ही यह तय होगा कि उन्होंने परीक्षा में अनुचित साधनों का प्रयोग किया था या नहीं। अपील में यह भी कहा गया कि अपीलार्थियों पर कोई विशिष्ट आरोप नहीं है। ऐसे में उन्हें सेवा में बने रहने का अधिकार है और केवल याचिका में लगाए गए आरोपों के आधार पर उन्हें सेवा से नहीं हटाया जा सकता। एकलपीठ में इन तथ्यों पर ध्यान दिए बिना पूरी भर्ती पर ही यथास्थिति के आदेश दे दिए और फील्ड ट्रेनिंग भी रोक दी। अपील में यह भी कहा गया कि एसआईटी, महाधिवक्ता और कैबिनेट सब कमेटी की राय सिर्फ सुझावात्मक है और राज्य सरकार उसे मानने के लिए बाध्य नहीं है। जिस पर सुनवाई करते हुए खंडपीठ ने एकलपीठ के आदेश में दखल से इनकार कर दिया है। गौरतलब है कि हाईकोर्ट की एकलपीठ ने गत 18 नवंबर को भर्ती में यथा-स्थिति के आदेश दिए थे। वहीं गत सुनवाई पर फील्ड ट्रेनिंग पर भी रोक लगा दी है। इसके बाद पुलिस मुख्यालय ने फील्ड ट्रेनिंग पर गए ट्रेनी उपनिरीक्षकों को वापस बुला लिया था।

कोटा में एक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इसके बाद शव को मोर्चरी में शिफ्ट किया गया। घटना की सूचना पर पुलिस और आला अधिकारी भी मौके पर पहुंचे। छात्र ने क्यों आत्महत्या की, इसके कारण पता नहीं चले हैं। लेकिन 24 जनवरी को उसका जेईई मेन्स का एग्ज़ाम था।

गणतंत्र दिवस पर तीनों सेनाओं की झांकी दिखेगी

- **झांकी की थीम सशस्त्र बलों में एकजुटता व एकीकरण के वैचारिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करेगी।**

नयी दिल्ली, 22 जनवरी। इस बार गणतंत्र दिवस परेड के दौरान एकजुटता और एकीकरण की भावना को प्रदर्शित करते हुए, पहली बार तीनों सेनाओं की झांकी कत्तर्व्य पथ पर दिखाई देगी। रक्षा मंत्रालय ने बुधवार को यहां बताया कि 'सशक्त और सुरक्षित भारत' थीम के साथ यह झांकी सशस्त्र बलों में एकजुटता और एकीकरण के वैचारिक दृष्टिकोण को प्रदर्शित करेगी, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा और परिचालन उत्कृष्टता सुनिश्चित होगी।

झांकी में तीनों सेनाओं के बीच नेटवर्किंग और संचार की सुविधा प्रदान करने वाले एक संयुक्त संचालन कक्ष को दर्शाया जाएगा। यह स्वदेशी मुख्य युद्धक टैंक अर्जुन , तेजस मार्क - दो लड़ाकू विमान, उन्नत हल्के हेलीकॉप्टर, विध्वंसक युद्धपोत विशाखापत्तनम और एक रिमोट संचालित एयरक्राफ्ट के साथ जमीन, पानी और हवा में समन्वित ऑपरेशन का प्रदर्शन करते हुए युद्ध के मैदान का परिदृश्य प्रस्तुत करेगी। यह बहु-डोमेन संचालन में तीनों सेनाओं के बीच तालमेल को दर्शाता है। ये मंच रक्षा क्षेत्र में 'आत्मनिर्भरता' हासिल करने के विजन का उदाहरण है।

रक्षा मंत्रालय में इस वर्ष को 'सुधारों का वर्ष' घोषित किया गया है। सैन्य मामलों के विभाग के मूल में संयुक्तता और एकीकरण हैं। इन्हें समकालीन और भविष्य के संघर्षों में सशस्त्र बलों की युद्ध क्षमता को अधिकतम करने की दिशा में प्रमुख निर्माण खंडों के रूप में पहचाना जाता है।

पाँचवीं की ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पहुंच कर परिजनों को घटना की जानकारी दी। रिपोर्ट पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने अभियुक्त को गिरफ्तार कर अदालत में आरोप पत्र पेश किया। वहीं अभियुक्त की ओर से कहा गया कि पूर्व की रंजिश होने के चलते उसके खिलाफ मामला दर्ज कराया गया है। दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद अदालत ने अभियुक्त को सजा सुनाई है।

22 राज्यों ने राष्ट्रपति ट्रम्प के ''बर्थ ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अधिकार छीनने का कोई हक नहीं है। सन् 1868 में हुए 14 वें संशोधन के अनुसार अमेरिका में जन्मे हर बच्चे को अमेरिकन नागरिक माना जाता है।

यह संशोधन कहता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में जन्मे या प्राकृतिक रुप से बसे सभी लोग उसके अधिकार क्षेत्र के अधीन अमेरिका व उस राज्य के नागरिक हैं जहां वे रहते हैं।

डॉनल्ड ट्रम्प के आदेश में अमेरिका में जन्मे बच्चों के माता -पिता अगर कानूनन अमेरिकन नागरिक नहीं हैं तो उस बच्चे को अमेरिका में जन्म लेने मात्र से अमेरिकन नागरिकता नहीं मिल जाएगी। आदेश कहता है कि उन बच्चों को भी अमेरिका की नागरिकता नहीं मिलेगी जिनकी मां कानूनन अमेरिका में है पर अस्थायी रुप से, जैसे वह छात्र वीसा या पर्यटन वीसा पर अमेरिका में है और जिनके पिता अमेरिका के नागरिक नहीं है या कानून स्थायी निवासी नहीं है।

ट्रम्प का कहना था कि दूसरे देश की महिलाएं बच्चे को जन्म देने के लिए अमेरिका आती हैं ताकि उनके बच्चों को अमेरिकन नागरिकता मिल जाए।

अमेरिका के होमलैंड सिक्योरिटी विभाग के अनुमान के अनुसार अमेरिका में जनवरी 2022 में 11 मिलियन अवैध इम्मिग्रैंट्स थे। कुछ विशेषज्ञों के अनुसार यह संख्या अब बढ़कर 13 से 14 मिलियन के बीच हो गई होगी। उनके अमेरिका में जन्मे बच्चों को अमेरिकन नागरिकता प्राप्त है।

नागरिकता छिनने से इन लोगों को कई सरकारी कार्यक्रमों जैसे मैडिकैड हैल्थ इंश्योरैंस, (जो बुढापे में मिलता है) नौकरी मिलना और मतदान आदि।

कानूनविदों के अनुसार जन्म पर आधारित नागरिकता एक कार्यकारी आदेश से खत्म नहीं की जा सकती है इस पर मुकदमा हो सकता है।

एक संवैधानिक विशेषज्ञ तथा युनिवर्सिटी ऑफ वर्जीनिया लॉ स्कूल के प्रोफेसर साई कृष्णा प्रकाश का कहना है कि वे कुछ ऐसा करने जा रहे हैं जिससे बहुत सारे लोग नाराज हो जाएंगे पर इसका फैसला अदालत करेगी। एक व्यक्ति इसका फैसला नहीं कर सकता है।''

प्रकाश ने कहा कि ट्रम्प फैडरल एजेंसी के कर्मचारियों की नागरिकता की व्याख्या बहुत ही सीमित आधार पर करवा सकते हैं। पर जिसे भी नागरिकता से इन्कार किया जाएगा वह अदालत में इसे चुनौती देगा, इससे लम्बी कानूनी व लड़ाइयां शुरु हो जाएगी, और सुप्रीम कोर्ट इसी में उलझ जाएगा।

जन्म आधारित नागरिकता के अधिकार को संविधान संशोधन से ही खत्म किया/ जा सकता है पर इसके लिए हाउस ऑफ रिप्रैजैन्टेटिटस और सीनेट में दो तिहाई बहुमत की जरुरत होगी तथा तीन चौथाई राज्यों के समर्थन की भी जरुरत होगी। रिपब्लिकन के सीनेट में 53 सदस्य है और डैमोक्रेटिक के 45 तथा 2 निर्दलीय सदस्य है। हाउस ऑफ रिप्रैजैन्टेटिटस में रिपब्लिकन पार्टी के 218 सदस्य है और डैमोक्रेटिक पार्टी के 215 तथा दो पद रिक्त है। इस प्रकार कांग्रेस के ट्रम्प के पास आवश्यक बहुमत नहीं है।

चुनावी बांड पर सुप्रीम कोर्ट में समीक्षा की याचिका पेश

- **गत वर्ष अगस्त में सुप्रीम कोर्ट की पाँच न्यायाधीशों की पीठ ने चुनावी बांड योजना को रद्द कर दिया था।**

नई दिल्ली, 22 जनवरी। सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश डी.वाय. चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पांच न्यायाधीशों की पीठ ने पिछले साल 15 फरवरी को भाजपा सरकार द्वारा शुरू की गई राजनीतिक फंडिंग की चुनावी बॉन्ड योजना को रद्द कर दिया था। सुप्रीम कोर्ट में बुधवार को दायर हुई एक समीक्षा याचिका में कोर्ट के दो अगस्त 2024 के उस आदेश पर विचार की मांग की गई है, जिसके तहत कोर्ट ने 2018 की इलेक्टोरल बॉन्ड योजना के तहत राजनीतिक दलों द्वारा एकत्रित 16,518 करोड़ रुपये को जब्त करने की मांग को नकार दिया था।

समीक्षा याचिका में दो अगस्त 2024 के उक्त आदेश को वापस लेने की मांग की गई है तथा उस पिछली याचिका को बहाल करने की मांग की गई है, जिसे कोर्ट ने 2 अगस्त को उक्त आदेश देते समय खारिज कर दिया था। उक्त याचिका में चुनावी बॉण्ड से एकत्रित धन राशि को जब्त करने की मांग की गई थी। यह याचिका खेमसिंह भाटी ने दायर की थी।

समीक्षा याचिका में कहा गया है कि एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) मामले में फैसले ने चुनावी बॉण्ड योजना को शुरुआत से ही अमान्य मान लिया है। इसी वजह से राजनीतिक दलों द्वारा एकत्र की गई राशि को जब्त करने की मांग करने वाली बाद की याचिकाओं को खारिज नहीं किया जा सकता था। याचिका में आगे कहा गया कि चुनावी बॉण्ड योजना के तहत राजनीतिक दलों द्वारा प्राप्त राशि को जब्त करने की मांग वाली याचिकाओं को तीन न्यायाधीशों की पीठ द्वारा खारिज करना अप्रत्यक्ष रूप से एडीआर फैसले को संशोधित करता है।

सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पांच न्यायाधीशों की पीठ ने पिछले साल 15 फरवरी को भाजपा सरकार द्वारा शुरू की गई राजनीतिक फंडिंग की चुनावी बॉन्ड योजना को रद्द कर दिया था। अदालत के फैसले के अनुसार, भारतीय स्टेट बैंक ने चुनाव आयोग के साथ डेटा साझा किया। चुनाव आयोग ने इस डेटा को सार्वजनिक कर दिया।

प्राण प्रतिष्ठा की पहली वर्षगांठ पर रामलला के दर्शन को भारी भीड़ उमड़ी

- **मंदिरों में एक किलोमीटर लम्बी लाइनें लगी।**

अयोध्या, 22 जनवरी। अयोध्या में भव्य राममंदिर में श्रीरामलला की पहली वर्षगांठ के मौके पर उनके दर्शन पूजन के लिये भक्तों का जनसैलाब उमड़ पड़ा है। घने कोहरे और ठंड के बीच बुधवार भोर से ही कतारबद्ध हुये रामभक्तों ने अपने आराध्य का दर्शन-पूजन किये। मंदिर के चारों ओर जय श्रीराम के जयकारे लगते रहे।

भव्य मंदिर में 22 जनवरी 2024 को रामलला विराजमान हुए थे। अंग्रेजी कैलेंडर के मुताबिक बुधवार को राम मंदिर की पहली वर्षगांठ पर श्रद्धालुओं का रेला नजर आया। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ज्योतिषाचार्यों ने बताया कि हिंदू कैलैण्डर के अनुसार 11 जनवरी को ही पहली वर्षगांठ मनाई जा चुकी है तीन दिन आयोजन भी हुए। उस समय भी लाखों की संख्या में श्रद्धालुओं ने अयोध्या में रामलला के दर्शन किये थे।

राम मंदिर की पहली वर्षगांठ पर हनुमानगढ़ ी में दर्शन के लिए एक किलोमीटर लंबी लाइन लगी हुई है। इसके अलावा दशरथ महल-कनक भवन सहित अन्य मंदिरों में भी श्रद्धालुओं का तांता लगा हुआ है। उधर, मणिरामदास छावनी में सुबह रथयात्रा के बाद 41 दिवसीय अनुष्ठान का आगाज हो गया। इसमें सवा लाख से भी अधिक श्रीराम रक्षा स्त्रोत का जाप होगा।

राहुल गांधी के खिलाफ मानहानि मामले में सुनवाई 30 जनवरी को

सुलतानपुर, 22 जनवरी। सुलतानपुर में बुधवार को नेता प्रतिपक्ष व रायबरेली सांसद राहुल गांधी के खिलाफ मानहानि मामले में अधिवक्ताओं की हड़ताल के चलते एक बार फिर सुनवाई टली गयी। सुलतानपुर एमपी/एमएलए की विशेष कोर्ट के मजिस्ट्रेट शुभम वर्मा ने मामले में 30 जनवरी को जिरह पूर्ण करने के लिए सुनवाई की तिथि नियत की है।

ट्रम्प के महत्वाकांक्षी, नारेबाजी पूर्ण भाषण के बाद...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अमेरिका रूस पर नए प्रतिबंध लगाएगा।

राष्ट्रपति ट्रम्प ने यह भी बताया कि यूक्रेन के राष्ट्रपति ज़ैलेन्स्की संकट को हल करने और युद्ध समाप्त करने के लिए एक समझौते पर काम करने के लिए तैयार हैं। तथापि, पुतिन समझौता वार्ता के लिए तैयार नहीं हो रहे हैं। संभवत: ट्रम्प को यह भनक लग गई होगी कि पुतिन ट्रम्प की धमकियों के आगे आसानी से नहीं झुकेंगे।

ट्रम्प ने यहाँ तक कहा है कि इन परिस्थितियों का सामना करने के लिए अमेरिका यूक्रेन को नए हथियारों की आपूर्ति करेगा। उन्होंने यूक्रेन की वर्तमान कठिनाई के प्रति सहानुभूति जताई। यूक्रेन एक ऐसी भौगोलिक स्थिति में है, जो रूस द्वारा निरंतर की जा रही बमबारी और मिसाइल हमलों से ज्यादा सुरक्षा प्रदान नहीं करती।

ट्रम्प ने कहा, ''यूक्रेन एक मैदानी इलाके वाला देश है और कृषि के लिए बहुत अच्छा है तथा एक समय में यह दुनिया के बाज़ार में अनाज का एक प्रमुख सप्लायर था।'' रूस के हवाई हमले बड़े-बड़े भवनों को धराशायी कर रहे हैं, जिनमें सैकड़ों लोग मर रहे हैं। ट्रम्प ने अफसोस जताया कि यह युद्ध युवा लोगों की मौत का कारण बन रहा है। ऐसा लगता है कि अब यूक्रेन युद्ध के संदर्भ में रूस के प्रति अमेरिका का रवैया और अधिक सख्त होगा, रूसी हमलों का सामना करने के लिए यूक्रेन में और अधिक शक्तिशाली हथियार और युद्ध प्रणालियाँ भेजी जाएंगी।

इस संदर्भ में, ट्रम्प की रूस के आंतरिक स्थिति के बारे में की गईं टिप्पणियाँ भी महत्वपूर्ण हैं। ट्रम्प ने कहा कि वे मानते हैं कि रूस ''एक बहुत बुरी स्थिति में है।'' रूस की अर्थव्यवस्था संकट में है और वहाँ कीमतें बढ़ रही हैं। युद्ध के और बढ़ने से देश में तबाही मच सकती है और व्यापक जन आक्रोश पैदा हो सकता है।

शायद, यूक्रेन संकट को सुलझाने में अपनी व्यक्तिगत असमर्थता को समझते हुए, ट्रम्प अब रूस और पुतिन के प्रति अधिक शत्रुतापूर्ण रुख अपना रहे हैं। चीन में भी वे निवेश बढ़ा रहे हैं, साथ ही चीन के राष्ट्रपति से इस संकट को हल करने में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने का अनुरोध कर रहे हैं।

आखिरकार, चीन, यूक्रेन संकट में फंसे रूस को बाहर निकलने में मदद कर रहा है। भारी मात्रा में रूस से तेल खरीद कर और महत्वपूर्ण आपूर्ति भेजकर, चीन ने रूस की युद्ध गतिविधियों में मदद की है। ट्रम्प उम्मीद करते हैं कि दबाव में आकर शायद चीन रूस को यूक्रेन युद्ध जल्दी समाप्त करने के लिए समझाने में सक्षम होगा।

दूसरी तरफ, चीन को अपनी आतंरिक आर्थिक समस्याओं का सामना भी करना पड़ रहा है, जहाँ समग्र आर्थिक गतिविधि धीमी हो रही है। चीन के उत्पादों पर कर बढ़ाने की ट्रम्प की धमकी से आर्थिक स्थिरता और भी बिगड़ सकती है। यदि चीन अमेरिकी मांगों के प्रति सहमत नहीं होता है, तो उसे अपने देश में गंभीर संकट का सामना करना पड़ सकता है।

इस वैश्विक रणनीतिक परिप्रेक्ष्य में, संयुक्त राज्य अमेरिका ने तीन एशियाई शक्तियों, भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ क्वाड के ढांचे के तहत एक नया प्रयास शुरु किया है। क्वाड एक आर्थिक और रणनीतिक संगठन था, जिसका मुख्य उद्देश्य एशिया में चीन के विस्तारवाद का विरोध था।

ट्रम्प के नए विदेश मंत्री मार्को रुबियो, जो चीन के प्रति अपने कठोर रुख के लिए भी प्रसिद्ध हैं, ने उद्घाटन के लगभग तुरंत बाद अपनी पहली कूटनीतिक पहल की। जब ट्रम्प वाइट हाउस में अपना कार्यभार संभाल रहे थे, मार्को रुबियो चार क्वाड सदस्य देशों के विदेश मंत्रियों के साथ प्रारंभिक सत्र आयोजित कर रहे थे।

इन चार विदेश मंत्रियों को वॉशिंगटन में विशेष अहमियत दी गई और उन्हें हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भविष्य की व्यवस्था पर औपचारिक चर्चाओं में शामिल किया गया।

वैश्विक कूटनीतिक संकट की इस स्थिति में, भारत को एक बहुत ही जटिल भूमिका निभानी होगी और अपने राष्ट्रीय हितों को तवज्जो देनी होगी। भारत के लिए सबसे कठिन परीक्षा तब होगी, जब उसे चीन से सीमाओं पर सीधे खतरे का सामना करना पड़ेगा और चीन की ''सलामी स्लाइसिंग'' नीति का सामना करना होगा, जो उच्च हिमालयी सीमाओं पर लागू हो रही है।

इस प्रकार की स्थिति से निपटने के लिए अपनी स्वयं की ताकत होनी चाहिए, ताकि ऐसे हालात को अपनी शर्तों पर नियंत्रित किया जा सके। भारत को इस उद्देश्य की ओर अग्रसर होना चाहिए।

ट्रक टिपर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

फल विक्रेता, सावनूर से चले थे और फल बेचने के लिए यालापुरा मेले की ओर जा रहे थे। उत्तर कन्नड़ के पुलिस अधीक्षक एम नारायण ने कहा कि ये सावनूर-हुबली रोड पर यात्रा कर रहे थे, ये दुर्घटना जंगली इलाके में हुई है।

नारायण ने मीडिया को बताया, सुबह लगभग 4 बजे, ट्रक चालक दूसरे वाहन को साइड देने के चक्कर में एकदम बायीं ओर चला गया और लगभग 50 मीटर गहरी घाटी में गिर गया। उन्होंने कहा कि घाटी में सड़क पर कोई सुरक्षा दीवार नहीं है। अधिकारी ने कहा, कुछ की मौके पर ही मौत हो गई और कई गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को हुबली के केआईएमएस अस्पताल में भर्ती कराया गया है। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने दुर्घटना पर दुख जताया है। सिद्धारमैया ने कहा- मैं मृतकों की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता हूं। इन दुखद घटनाओं में अपने प्रियजनों को खोने वाले शोकाकुल लोगों के प्रति मेरी संवेदना है। मृतकों के परिवारों को सरकार मुआवजा देगी।

आग लगने की अफवाह...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कर्नाटक एक्सप्रेस की चपेट में आ गए। उन्होंने बताया कि ''हमारी प्रारंभिक जानकारी यह है कि पुष्पक एक्सप्रेस के एक कोच के अंदर हॉट एक्सल या ब्रेक-बाइंडिंग (जैमिंग) के कारण चिंगारी उठी और कुछ यात्री घबरा गए। उन्होंने चेन खींच दी और उनमें से कुछ ट्रेन से नीचे कूद गए और उसी समय, कर्नाटक एक्सप्रेस बगल के ट्रैक से गुजर रही थी, जो यात्रियों को कुचलती हुई गुजर गई।

जलगांव से अनेक यात्री ट्रेन पर चढ़े थे और हादसे वाली जगह पर चेन खींच कर उतरे और रॉन्ग साइड से ट्रैक पार करने की कोशिश की। जो लोग विपरीत दिशा में की ट्रैक पर खड़े थे, या पार करने की कोशिश कर रहे थे, वो कर्नाटक एक्सप्रेस की चपेट में आ गए और उनकी मौत हो गई।

हादसे की भयावह तस्वीरें और वीडियो सामने आए हैं। घटना के बाद रेलवे के कई अधिकारी घटनास्थल पर मौजूद हैं। घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनका इलाज चल रहा है। जलगांव सिविल हॉस्पिटल के डीन के अनुसार, 12 डेड बॉडी अस्पताल में लाई गई हैं और 40 घायलों को भर्ती कराया गया है। हादसे के बाद, गांव के लोगों ने घायलों को पास के अस्पताल में पहुंचाया है। साथ ही स्थानीय थाने के अधिकारी मौके पर पहुंच गए हैं। स्थानीय जनप्रतिनिधि राहत-बचाव कार्य में लगे हुए हैं। यहां के लोगों ने निजी वाहनों से घायलों को अस्पताल पहुंचाया है। लखनऊ जंक्शन स्टेशन एनईआर पर हेल्पलाइन नंबर (8957409292) स्थापित किया गया है।

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़णवीस ने इस हादसे पर दुख जताया है। उन्होंने मृतकों के परिजनों के लिए 5-5 लाख रुपये के मुआवजे का ऐलान किया है। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र सरकार घायलों का मुफ्त इलाज कराएगी।

मार्डन मीडिया, बीकानेर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 35214/79, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय:-राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908